गो महिमा

(गो हमारी वास्तविक माता)

प्रथम भाग

लेखक

गौरीशंकर कोठारी

सूरतगढ़

प्रकाशक

प्रतिष्ठा प्रकाशन

सूरतगढ़ (राज०)

गो महिमा (प्रथम भाग)

•

लेखक

गौरीशंकर कोठारी

•

प्रकाशक

प्रतिष्ठा प्रकाशन, सूरतगढ़ (राज०)

•

प्राप्तिस्थान

राजस्थान एज्यूकेशन स्टोर
नारायण भवन } दाउजी मार्ग, बीकानेर

•

मुद्रक

पवन आर्ट प्रेस, बीकानेर

•

उपहार देने निमित्त १० से अधिक रु० २-२५ प्रति

पुस्तक पर सम्मतियां

गो महिमा के मैंने कई प्रकरणों को देखा, वस्तुतः सर्व साधारण पुरुषों को गो विषयक समस्त जानकारी प्राप्त कराने के लिए, यह बहुत उपयोगी है। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि गो को माता प्रतिपादक पुस्तक को अध्ययन से गो भक्ति का प्रचार प्रसार अवश्यमेव होगा। सभी नारी पुरुष इस पुस्तक को अध्ययनार्थ अवश्य रखें।

शिवानन्द सरस्वती

संचालक धर्म संघ विश्वविद्यालय चूरू (राजस्थान)

गो महिमा पुस्तक को मैंने गौर से पढ़ा है। मैं इस निश्चय पर पहुँचा हूँ, कि ज्ञान, विज्ञान की दृष्टि से यह साहित्य प्रशंसनीय एवं अत्यन्त उपयोगी है।

इस पुस्तक को देश की गोशाला समितियों द्वारा अधिक से अधिक हाथों तक पहुँचाना चाहिए। गोशालाएं यदि कोई नियम भी बनाले कि, रुपया १५ या कुछ अधिक का नकद या वस्तु दान देने वाले को १ पुस्तक निःशुल्क भेंट दी जाया करेगी तो, अधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

लेखक का प्रयत्न अति आवश्यक, विषय पर सामयिक, धार्मिक, आर्थिक, व राष्ट्रीय लाभ का होने से अत्यन्त प्रशंसनीय है। इनको अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

गोरीशंकर आचार्य

एम. ए. पी. एच. डी. शास्त्राचार्य (स्वर्ण पदक प्राप्त)
मन्त्री— अखिल भारतीय गोशाला संघ,
अध्यक्ष— राजस्थान गोशाला संघ, जयपुर।

पुस्तक पर सम्मतियां

गो महिमा के मैंने कई प्रकरणों को देखा, वस्तुतः सर्व साधारण पुरुषों को गो विषयक समस्त जानकारी प्राप्त कराने के लिए, यह बहुत उपयोगी है। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि गौ को माता प्रतिपादक पुस्तक को अध्ययन से गो भक्ति का प्रचार प्रसार अवश्यमेव होगा। सभी नारी पुरुष इस पुस्तक को अध्यनार्थ अवश्य रखें।

शिवानन्द सरस्वती
संचालक धर्म संघ विश्वविद्यालय चूरु (राजस्थान)

गो महिमा पुस्तक को मैंने गौर से पढ़ा है। मैं इस निश्चय पर पहुँचा हूँ, कि ज्ञान, विज्ञान की दृष्टि से यह साहित्य प्रशंसनीय एवं अत्यन्त उपयोगी है।

इस पुस्तक को देश की गौशाला सम्मितियों द्वारा अधिक से अधिक हाथों तक पहुँचाना चाहिए। गोशाल ए यदि कोई नियम भी बनाले कि, रुपया १५ या कुछ अधिक का नकद या वस्तु दान देने वाले को १ पुस्तक निशुल्क भेंट दी जाया करेगी तो, अधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

लेखक का प्रयत्न अति आवश्यक, विषय पर सामयिक, धार्मिक, आर्थिक, व राष्ट्रीय लाभ का होने से अत्यन्त प्रशंसनीय है। इनको अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

गौरीशंकर आचार्य
एम. ए. पी. एच. डी. शास्त्राचार्य (स्वर्ण पदक प्राप्त)
मन्त्री— अखिल भारतीय गोशाला संघ,
अध्यक्ष— राजस्थान गोशाला संघ, जयपुर।

गोमाता के सम्बन्ध में श्रीमान गौरीशंकर जी कोठारी द्वारा लिखित विश्व जननी "गो महिमा" ग्रन्थ को पढ़ कर प्रसन्नता हुई। गो साहित्य पर आज तक मैंने जितनी पुस्तकें को पढ़ा उन सब में यह विशिष्ट है।

लेखक ने इसमें धार्मिक, धार्मिक दृष्टियों के अतिरिक्त विशुद्ध वैज्ञानिक एवं युक्तियुक्त रीति से विश्व पालक एवं पोषक समस्त माताओं की अपेक्षा गो के सर्वोपरि महत्व को सिद्ध किया है, वह अद्वितीय है, एव प्रत्येक पाठक के मन को हरने वाला है।

प्रत्येक गृहस्थ के घर में इसका पठन व मनन परम आवश्यक है। इसके द्वारा प्रत्येक नगर, ग्राम व घर में आसानी से गो वंश की वृद्धि करके वे अपने कुटुम्ब कुल और समस्त राष्ट्र का कल्याण कर सकेंगे।

मैं हृदय से इस परमोपयोगी ग्रन्थ के व्यापक प्रचार और प्रसार का अभिलाषी हूँ। और इसके लिए लेखक अति शतश साधुवाद अर्पित करता हूँ।

विद्याधर शास्त्री

(भारत के तीन राष्ट्रपति व प्रधान मन्त्री द्वारा सम्मानित, डूंगर महा विद्यालय बीकानेर संस्कृत विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विश्व भारती के डाइरेक्टर, विद्या वाचस्पति और मनीषी)

"गो महिमा" गो विषय का अद्वितीय ग्रन्थ है। इसके प्रचार प्रसार से मानव व राष्ट्र का परम हित है, वैश्य वर्ग के लिए शास्त्रों मे गोपालन मुख्य कर्तव्य बताया गया है। वैश्य या व्यवसायिक लोगों के कार्य बुद्धी से सम्पादित होते हैं, बुद्धी के लिए गो दुग्ध ही सर्वोपरि है, तदर्थ गोपालन वैश्य का धर्म निश्चित किया गया हैं।

ग्रन्थ का प्रचार प्रसार सभी करें यह अच्छी बात है, वैश्य समाज को तो अपनी पूरी सामर्थ्य लगा कर इसे प्रत्येक घर तक पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसे उपहार मे देना व इसमें विज्ञापन देना पुनीत कार्य हैं। लेखक ने जो प्रयास किया है, अति प्रशंसनीय है, प्रचार प्रसार मे योगदान करने वाले भी प्रशंसा के पात्र है।

रामचन्द्र बिहाणी
सम्पादक—महेश्वरी सेवक मासिक, बीकानेर

गाय हिन्दुत्व की प्रतीक है, गो माता की रक्षा एवं महिमा वृद्धी के लिए किया गया प्रयास हिंदुत्व रक्षा की दिशा मे महत्त्वपूर्ण कार्य है।

"गो म. मा" पुस्तक इस दिशा में लेखक का प्रशसनीय कदम है। पुस्तक को पढ़ने से गाय के धार्मिक, सांस्कृतिक महत्त्व के साथ-साथ मानवोपयोगी स्वरूप भी हृदयङ्गम होते हैं।

भौतिकवाद के युग में मानव हृदय मे गाय के प्रति श्रद्धा और प्रेम को अंकुरित व पुष्ट करने की नितान्त आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति इस पुस्तक से होती है।

अतः प्रत्येक गो भक्त, गो रक्षा, गो सवर्धन के क्षेत्र मे कार्यरत व्यक्तियों एवं सस्थाओं का यह पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि वे इस पुस्तक के प्रचार एव प्रसार में पूरी शक्ती लगाकर लेखक को प्रोत्साहित करें व अन्य लेखकों को भी इस दिशा में चिन्तन करने को प्रेरित करें।

बिहारीलाल टांटिया
प्रधानमंत्री—अखिलभारतीय धर्म संघ, श्रीगंगानगर

गो महिमा अनुक्रमणिका

प्रकरण	विषय	पृष्ठ संख्या

मैं...............................आत्मज...................

जाति.................. निवासी .... यह पुस्तक श्री

श्रीमति..पुत्र पत्नि..........

निवासी............. को सप्रेम उपहार प्रदान करता हूं उनसे

आशा रखता हूं कि वे इस पुस्तक को प्रेम पूर्वक पढ़ कर व दूसरों को पढ़ा कर, गो माता के प्रति श्रद्धा अंकुरित व पुष्ट करेंगे। गोमाता की प्रतिष्ठा बढ़ाने के निमित्त अपनी बुद्धि व श्रम लगा कर गायों को अनाथ असहाय, कोई न छोड़े इसका सार्थक प्रयत्न करके पुण्य प्राप्त करेंगे।

यदि इसके प्रचार से लाभ होने की संभावना हो तो, इसकी कुछ पुस्तकें अपने बन्धु बान्धव मित्र, सम्बन्धी जनों व राहगीरों को उपहार दें। पुस्तक के सम्बन्ध में अपने विचार अन्तिम पृष्ठ के फार्म के साथ प्रकाशक को अवश्य भेजें। [illegible]

प्रस्तावना

गाय हमारी माता है और उसकी महिमाओं का प्राय: सभी धर्म ग्रन्थों मे प्रचुर मात्रा में गुणगान हैं।

भूतकाल के युग पुरुषों और महापुरुषों ने ही कहा हो ऐसी बात नहीं वर्तमान काल के महापुरुषों व हमारे पूर्वजों ने इसके महत्व से हमें निरन्तर अवगत कराया किन्तु कुछ शताब्दियों से हम अपनी प्राचीन मान्यताओं या महापुरुषों के वचनों की उपेक्षा करने लगे हैं।

वर्तमान सन्तती में कुछ तो गाय को केवल दुधारू पशु मानते हैं, कुछ इनसे भी दो कदम आगे है जो दुधारू पशुओं में सर्वोत्तम न मानकर भैंस से गाय को गौण मानते हैं, कुछ ऐसे भी हैं जो गोपालन को कम लाभ का व्यवसाय एवं उसके मृत्योपरान्त अवयवों से अधिक लाभ का अनुभव करते हैं।

इसमें उनको मैं दोषी नहीं मानता क्योंकि उन्होंने जो कुछ देखा सुना है उससे कुछ न्युनाधिक आचरण करें यह संभव है। अब आवश्यकता इस बात की है कि वास्तविक बातें ऐसे ढंग से बताई जाय कि अच्छाई समझ में आ सके।

आज का मानव किसी के कहने मात्र पर भरोसा नहीं कर

रहा उसे तथ्यों और प्रमाणों की आवश्यकता है केवल ग्रन्थ
लेख या महापुरुषों व पूर्वजों के वचनों को प्रतीक मान कर
मानने वालों की कमी नहीं।

हम गोवध नहीं चाहते पर यह उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। इसका
मुख्य कारण गाय की प्रतिष्ठा की कमी है अतः हमें गाय
प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु भागीरथ प्रयत्न करने होंगे।

मुझे अपनी बुद्धि पर इतना भरोसा तो नहीं कि मैं ऐसे
ही ऐसे ठोस प्रमाण दे सकूं, जिससे पाठक बहुत प्रभावित हों फिर
भी जैसी कुछ अन्तर प्रेरणा है लिख रहा हूँ। गाय की महिमा
अनन्त है इसलिए पाठक जितनी खोज करेंगे प्रकाश में आ
रहेगा।

इस पुस्तिका को प्रेम से पढ़ने के लिए मैं बारम्बार आग्रह
प्रार्थना करता हूँ। दूसरी तीसरी आवृत्ति करने वाले तो आप
ही जो प्रेमी व भक्त हैं जिन्हें भी महिमा पढ़ना सुनना पसंद है।

पूरी पुस्तक पढ़ लेने पर अपनी सम्मति पुस्तक के अन्त में दिये
कार्ड पर अवश्य भेजें।

पुस्तक अपने क्षेत्र के अन्य भाइयों व विचारकों को अवश्य
दें।

गौरीशंकर जोशी
दि० अगस्त २०३१ भाद्र कृष्णा ११

स
म
र्प
ण
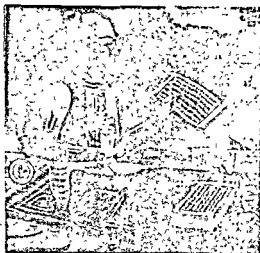
पुस्तिका को कविकुल चूडामणि, संत सिरोमणि, परम भगवद् भक्त, प्राणीमात्र के कल्याणकारी एवं गौ माता के प्रति विशेष श्रद्धालू, परम आदरणीय, प्रात: स्मर्णीय गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज के चरण कमलो मे उन द्वारा रचित रामचरित मानस के चतुसताब्दी वर्ष पर सादर सश्रद्धा सुमन की एक पखुडी मात्र जान कर स-सकोच समर्पण करता हूँ, जिनकी रचना से हमारी बीसीयो पीढी के पूर्वज लाभान्वित हुवे हैं और वराज होते रहेंगे।

श्री गोस्वामी जी के उपकारो का बदला चुकाने मे हम समर्थ नही, परन्तु गौ वश के निरादर उत्पीडन व वध को बन्द कराने व पुनः प्रतिष्ठित कराने के प्रयासों की अन्य पखुड़ियो से हम पूर्ण सुमन या सुमनमाला की भेंट करके मन में सन्तोष कर लें कि हम असमर्थ थे इसलिए इतना ही कर पाए हैं।

विक्रमी सम्वत् २०३१ माह शुक्ला पूर्णिमा — गौरीशंकर कोठारी

मंगला चरण व विनय के भाव

दोहा—स्मर्णमात्र से सिद्धी दे, ऐसे प्रभू गणराज।
गो महिमा रचना कही, पढ़ सुन हर्ष समाज ॥१॥

अजे राखे पालन करे धारिणी सब सुर मात।
निज पय सम रचना करो, पठन श्रवण ललचात ॥२॥

नहीं कवि कोविद शिक्षित, नहीं सत संगति कीन।
मां की महिमा अमित अति, मैं दीन हीन पर लीन ॥३॥

सज्जन दोष न देखहीं, यह निज मन अनुमान।
विनवौं सब के पद कमल, पढ़िए निज जन जान ॥४॥

गुरु सम आदर मैं करूं, जो दें त्रुटियां बताय।
सुधरै वही भविष्य मैं, मानौं कृपा अधिकाय ॥५॥

हित कर रचना होय जो, यह पाठक गण छोह।
मम रचना सुन्दर बनी, मोहि न ऐसो मोह ॥६॥

माता माने गाय को, है यह अपने हाथ।
पशु माने दुःख पाइ हैं, बिन मां सभी अनाथ ॥७॥

कमी अन्न फल दूध की, वस्त्र धरणा धन धाम।
मां माने ऐसे नसे, जैसे तम रवि घाम ॥८॥

नहर खाद बीजोत्तम, ट्रैक्टर दवा छिड़काव।
अन्न रुपये मन सुलभ था, है कठिन रुपये का पाव ॥६॥

१

दुग्ध ही पूर्ण व सर्वोत्कृष्ट भोजन एवं पेय

परमपिता परमेश्वर ने विश्व के जीव मात्र को रहने के लिए स्थान, भोजन के लिए खाद्य पदार्थ, पीने के लिए जल श्वास लेने के वायु, प्रकाश के लिए सूर्य, चन्द्र व अन्य अनेकों साधन उपलब्ध किए हैं। प्राणी मात्र शाश्वत जीवन चाहता है और जीने के लिए भोजन अति आवश्यक है।

चींटी से लेकर हाथी तक चर प्राणी जो हमे दृष्टिगोचर होते हैं सब अपने जीवन का अधिक समय भोजन की खोज में व्यय करते हैं। अनेक जीव अपनी क्षुधा की तृप्ति के लिए दूसरे प्राणी को ग्रास कर जाते हैं।

भोजन साधारणतया २ प्रकार का है—निरामिष व आमिष (निरामिष भोजी) वे जीव जो वनस्पति अन्न फल पर रहें जैसे—हाथी, ऊंट, गाय, भैंस, घोड़ा, खच्चर, गधा, हरिण, भेड़ बकरी, बारहसींगा, मयूर, बन्दर आदि आदि। (आमिष भोजी) शेर, चीता, बाघ, भेड़िया, रीछ, गिद्ध, बाज, चील, मकर, मछली आदि आदि।

कुछ जीव ऐसे भी पाए जाते हैं जो निरामिष व सामिष दोनों प्रकार का भोजन करते हैं जैसे कुत्ता, बिल्ली, कौआ, चिड़िया, मछली आदि।

निरामिष भोजी जीव यथा सम्भव अन्न, फल, घास खाते हैं। मांस नहीं खाते इसलिए मांस पूर्ण भोजन नहीं कहला सकता।

सामिष भोजी केवल मांस ही खाते हैं, अन्न, फल या घास बिल्कुल नहीं खाते। इस प्रकार अन्न, फल, घास को भी पूर्ण भोजन नहीं कहा जा सकता।

केवल दूध ही ऐसी चीज है जिसे निरामिष व सामिष दोनों श्रेणी के जीव प्रसन्नता पूर्वक पीते हैं व जो जीव निरामिष व सामिष दोनों प्रकार का उपयोग करते हैं वे भी दूध पर टूट पड़ते हैं इससे दूध के पूर्ण भोजन होने की पुष्टी होती है। दूध सर्वोत्कृष्ट भोजन व पेय कैसे है, यह विवेचन विस्तार पूर्वक इस प्रकार है–कि निरामिष भोजी प्राणियों के शिशु जन्मते हो या छोटी आयु में अन्न घास या फल न खा सकते हैं, ना ही पचा सकते हैं। यही हाल सामिष भोजियों का है। उनके नवजात व छोटी आयु के बच्चे न मांस खा सकते हैं न पचा सकते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि दूध एक गुणाढ्य भोजन व पेय है, यह छोटी बड़ी सभी आयु में उपयुक्त है और हर अवस्था में भी लाभकारी है।

छोटे बच्चे जन्म के पश्चात् कितने ही दिनों तक न तो कुछ खाते हैं न अन्य पान करते हैं। केवल दूध पर ही निर्वाह करते हैं यह प्रमाण करता कि दूध पर जीवनपर्यन्त रहा जा सकता है और किसी वस्तु पर जीवन रखना जाना सम्भव नहीं। इससे भोजन में दूध की सर्वोत्कृष्टता प्रमाणित होती है।

मानव के लिए दूध का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि मानव शरीर की रचना भी विचित्र है। वह अन्न, शाक, भाजी को अन्य प्राणियो की तरह नहीं खाता। अन्न, शाक, भाजी पकाकर या पकाने के लिए उसके साथ दूध, दही, घृत या छाछ मिलाकर ही खा पाता है। मिष्ठान बनाने मे घृत, खोवा, छेना अवाश्यक है, चाय आदि पेय में भी दूध की अति आवश्यकता है। कितने ही उत्तम प्रकार के अन्न, यक्ष, चावल, मूंग गेहूं, बाजरा, मक्का, जब तक दूध या दूध से बने पदार्थ साथ न हो खाते नही बनता। इसलिए भोजन मे दूध का महत्व सर्वाधिक है।

मानव बहुसंख्या में आमिष भोजी भी है पर दूध व दूध से बने पदार्थों बिना आमिष भोजन भी नहीं बन पाता। इसलिए दूध पूर्ण व सर्वोत्कृष्ट भोजन व पेय है जो हमें दुधारू पशुओं से प्राप्त होता है। इसलिए प्राणीमात्र में दुधारू पशु ही सर्वोत्तम व विशिष्ट है। अगले प्रकरण मे इसे पढ़िये और मानव वास्तव में शाकाहारी है या मांसाहारी, उन्नीसवें प्रकरण मे यह भी अवश्य पढ़िए।

| २

प्राणीमात्र में दुधारू पशुओं व
विशिष्ट स्था

अखिल विश्व में प्राणियों की चार खानों से उत्पत्ति होती
जिन्हें जरायुज, अण्डज, स्वेदज व उदभिज्ज कहा जाता है। इन
कुल संख्या चौरासी लाख है। इन्हें भी चार भागों में विभक्त क
होगा। थलचर, जलचर, नभचर, स्थावर।

जरायुज प्राणी थलचर ही अधिक हैं, जिनमें मनुष्य, ह
घोड़ा, गाय, भैंस, ऊंट, गधा, भेड़, बकरी, शेर, चीता, रीछ, हि
बन्दर, सियार, खरगोश आदि हैं।

अण्डज प्राणी अधिकतर नभचर होते हैं पर कुछेक जलचर
थलचर भी हैं।

स्वेदज प्राणियों की उत्पत्ति सभी प्रकार के प्राणियों के श
के अन्नों व फलों में स्वतः ही होती है जैसे जूं, चीचड़, घुन, इ

खपरा व फलों व वनस्पति में कीटाणु ।

उद्भिज, *स्थावर है जिसे हम पेड़, पौधा, लता, घास, झाड़* आदि नामों से पुकारते हैं ।

सभी प्राणियों में स्वेदज प्राणी महा निकृष्ट होते हैं वे अपने आश्रय दाता का खून—रस पीकर अपना पोषण करते हैं इनका उपयोग अन्य प्राणियों की भलाई मे नहीं होता ।

अण्डज प्राणी अधिकतर तो मानव या अन्य प्राणियों के महान शत्रु होते हैं । यह असमर्थ अवस्था वाले प्राणियों को नोच कर खा जाते हैं । *घाव कर देते हैं और डंक भी मारते हैं, फसल को चौपट* कर देते हैं । पालतू व उपयोगी पशुओं को भी दुःखी करते हैं । इस प्रकार ये मानव के शत्रु हैं पर मानव ने अपनी विलक्षण बुद्धि से इनकी कुछ जातियों के मांस व अण्डों को अपना भोजन मान लिया । इस सारे समाज का बदला कुछेक से लेना ही पर्याप्त मान लिया जैसे मुर्गी, बत्तख आदि का मांस व अण्डा, मछली आदि का मांस, मधु-मक्खियों का शहद, रेशम के कीट से रेशम । किसी के पंख व किसी के अन्य अवयवों को उपयोग में लेकर अण्डज प्राणियों द्वारा की गई हानि की कुछ अर्थों में क्षति पूर्ति करने लगे व बहुतों को जहरीली दवा छिड़का कर मारने लगे । भाव यह है कि अण्डज प्राणी शत्रुकोटि में हैं ।

उद्भिज प्राणी तो स्थावर हैं वे चलकर न किसी प्राणी का भला करने की शक्ति रखते हैं न बुरा करने की । ऐसी दशा मे उनकी कितनी जातियां प्राणियों के लिए लाभदायक हैं । थलचर, अभ्रचर, प्राणियों के लिए तो ये आश्रयदाता व भोजन हैं इसलिए मानव इनसे बहुत प्यार करता है । फलों के या छायादार पेड़ लगाता है । अन्न या घास लगाता है । जिसमें मानव का निजि स्वार्थ है । इन

द्वारा मानव को भोजन, वस्त्र, भवन निर्माण का काष्ठ, फल फूल, औषधि, चारपाई आदि बनाने का काठ व ईंधन तेल आदि प्राप्त होता है इसलिए ये उपयोगी हैं।

जरायुज प्राणी स्वेदज अण्डज से बड़े होते हैं। इनमें से हिंसक जीव तो मानव व उस द्वारा पालतू जीवों के भी शत्रु हैं, जिन्हें हम मांसाहारी कहते हैं। ये मानव के लिए उपयोगी नहीं, कुछेक प्राणी हिंसक नहीं शाकाहारी हैं पर पालने योग्य या अन्य कार्य में लाने योग्य नहीं, जैसे हरिण, बारह सींगा, सियार, खरगोश, लोमड़ी आदि हैं जो मानव पालित फसलों को हानि पहुँचाते हैं। इसलिए मानव इनका शिकार करके फसलों को बचाता है। इनका मांस भक्षण में प्रयुक्त हो जाता है। इनकी गिनती भी मानव के शत्रुओं में ही की जावेगी।

कितनेक जरायुज प्राणी मानव के लिए उपयोगी हैं ये सभी निरामिष भोजी हैं। इन्हें मानव पालता है, रक्षा करता है। इनकी संख्या १०–१२ से अधिक नहीं जैसे हाथी, ऊंट, घोड़ा, गाय, बैल, खच्चर, गधा, बकरी, भेड़, सूकर आदि हैं। इनका उपयोग पृथक पृथक है। हाथी, घोड़ा, उंट, खच्चर, गधा आदि सवारी या भार ढोने में प्रयुक्त होते हैं पर गाय भैंस, बकरी दूध देती है। गाय, भैंस का नर पशु भार ढोने या सवारी के काम आने से इन दोनों का महत्व अन्य सभी पालतू पशुओं से अधिक हो जाता है। प्रथम प्रकरण में दूध का महत्व पढ़ चुके हैं इसलिए दूधदाता पशु तो मानव के महान हितैषी हैं। बकरी दूध तो देती है पर भार ढोने का कार्य नहीं कर पाती। भेड़ पीने योग्य दूध नहीं देती, ऊन देती है यह निर्विवाद है कि केवल गाय और भैंस ही अधिक उपयोगी हैं। अगले प्रकरण में दुधारू पशुओं में गाय की विशेषता पढ़ें।

३

दुधारू पशुओं में गाय की विशेषता

पिछले प्रकरणों में दूध के गुणो व प्राणी मात्र में दुधारू पशुओं सर्वश्रेष्ठ कौन है, इसका विवेचन आवश्यक है।

गाय, भैंस, बकरी, धूकरी ही दूध देने वाली है। दूध उंटनी, ड़ी, गधो, भेड़ के भी होता है पर उनका विशेष उपयोग नहीं।

गाय—सर्वाधिक दूध देती है ५०—६० लीटर देने वाली सुलभ । हमारे देश में भी ३५-४० लीटर देने वाली है। गाय विश्व के भी देशों में, गर्म, शीत, पहाड़ी, रेतीले क्षेत्रों में बहु संख्या में हती है, यह जगलों में चर कर भी दूध देती है। घर में रखने पर व भूखी प्यासी दशा में भी दूध दे देती है। दूध देने म इसकी मता तो प्रसंग वश की जाती है पर इसकी समता तो क्या, निकट हुँचने में कोई दुधारू पशु सक्षम नहीं। कुछ गोपालक उसके सीधेपन कारण उपेक्षा करते रहे, जिसके फलस्वरूप दूध कम हो गया और सी भूखी-प्यासी रखी गई गाय की तुलना भरपेट खुराक मिलने ली भैंस, से करते हैं।

पर देखना यह है कि कितने गोपालक ऐसे हैं जो गाय की सेवा भैंस की तरह करते हैं। गाय बिना खाना चारा दिए दूध देती है इसलिए उसका दूध प्राप्त करके उसके स्वामी-स्वामिनी या तो घर से बाहर निकाल देते हैं या अन्य कार्य में लग जाते हैं। पर भैंस के पास यदि आधा लीटर दूध होगा तब भी वह अधिक दूध देने के समय काफी नखरा करके पूरा पेट भर कर ही दूध देती है। गाय के स्वामी तो ऐसे भी पाए जाते हैं जिनके घर में न तो घास दाना है न गाय बांधने की जगह भी है। बच्चे बच्ची को घर रखते हैं, गाय के आते ही बाहर खूंटे पर बांधकर दूध निकाल लेते है फिर खोल देते हैं कि वो जैसा-तैसा गला-सड़ा फल, जूठा, घास पत्ते, छिलके खा ले और अपने बच्चे को देखकर दूध उतारे, जिसे उसका स्वामी निकालले। इस प्रकार उससे अधिक दूध होने की आशा व्यर्थ है। उसकी सन्तान उससे भी कम दूध वाली होगी। दूध की कमी का कारण पूरा भोजन न देने के अतिरिक्त कुछ नहीं। जिस प्रकार गाय से दूध प्राप्त किया जाता रहता है भैंस से १ टाइम के लिए भी आशा करना व्यर्थ है।

भैंस—यह दुधारू पशु है इसके प्राय १०-१२ लीटर दूध प्रतिदिन होता है। अधिक से अधिक २५-२६ लीटर प्रतिदिन तक भी देती है। किन्तु इसे अत्यधिक उत्तम व महंगे भोजन की आवश्यकता रहती है। भैंस रखना साधारण गृहस्थ के वश की बात नहीं। इसे जब तक पूर्ण खाना देकर प्रसन्न न कर लिया जाय तब तक दूध के लिए स्वामी को तो क्या अपने बच्चे को भी निकट नहीं आने देती। यह शीतोष्ण सहने में सक्षम नहीं। ग्रीष्म काल में जलाशय मिलने पर उसमें अन्यथा कीचड़ में घन्टों बैठी रहती है। इसको वर्षा ऋतु में नित्य नहलाना भी आवश्यक है। पर यह केवल वर्षा

शान्त करने मात्र की है। इसे साफ सुथरा रहने का चाव नहीं. नहाने के पश्चात शीघ्र ही कीचड़ में बैठने को प्रवकाश मिले तो कीचड़ में बैठ जाती है। कहावत है कि एक भैंस का कीचड़ अन्य भैंसों के सर जाता है। इसे पौष्टिक भोजन अधिक मात्रा मे मिलने के कारण गाय की अपेक्षा दूध कुछ गाढ़ा होता है। किन्तु गुणों की दृष्टि से उत्तम नहीं। फिरभी इस पशु ने लोगों को गाय के लाभ से वंचित करने की भूमिका भारत व पाकिस्तान मे खूब निभाई। योरोप अमेरिका आदि देशों में तो भैंस है ही नही। सभव है हो पर अति अल्प, पर भारत में भी बंगाल, आसाम मे भैंस बहुत कम है। ससार में भैंस, गाय से ६०% से अधिक नहीं। इसमे गाय के समान गुण व लक्षण नहीं, अनेक अवगुण है जिन्हें गाय और भैंस की तुलना प्रकरण मे अंकित किए गए हैं।

बकरी —यह एक छोटा दुधारू पशु है। इसके दूध को गुणो की दृष्टि से भैंस से उत्तम माना जा सकता है। भोजन सुपाच्य होना चाहिए। जैसे फल सुपाच्य व मिष्टान दुष्पाच्य—बकरी को साधारण से साधारण व्यक्ति पाल सकता है। यह गाय की तरह जंगल मे चर कर भी दूध दे देती है पर गाय से बहुत कम देती है। इसके दूध मे घृतांश बहुत कम मात्रा में होता है। इनका अधिकतर पालन दूध के लिए न होकर मांस व चर्म के लिए होता है और १००-१५० तक एक पालक रखकर वशवृद्धि के लिए करता है।

सूकरी—यह जीव न अच्छा रहन-सहन चाहता है न अच्छा भोजन। अपितु अन्न खाने वाले प्राणियो का मल भक्षण करता है। कीचड़ में से गला सड़ा अन्न मिट्टी से भी कुछ न कुछ निकाल कर खाता रहता है। पर इसे दूध अवश्य होता है किन्तु इसके पालक

भी घृणावश उस दूध को उपयोग में लाने में सकुचाते हैं। पर शूकरी का दूध नगरों में अन्य दूध के साथ छिपे रूप में मिलाकर बेचने की सूचनाएं सुनी जाती हैं जो संभव प्रतीत होती है। इसके दूध का प्रभाव मानव मस्तिष्क पर कैसा पड़ेगा यह दूध प्रकरण में वर्णन किया गया है।

इस प्रकरण मे पाठकों के समक्ष दुधारू पशुओं में गाय का स्थान सर्वोच्च व सर्वोत्तम होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं और यह भी बताया गया है कि गाय संसार में भैंस से सौगुनी या इससे भी अधिक होगी। इस प्रकार भी वह सैकड़ों गुणा अधिक लाभ मानव मात्र को पहुँचाती है।

४

गाय का दूध सभी दूधों में उत्तम

दूध शब्द एक मनमोहक शब्द है, क्योंकि इसे चींटी से लेकर हाथी तक सभी प्राणी बचपन तरुणाई या वृद्धावस्था से स्वस्थ व रुग्णावस्था में सुलभ या दुर्लभ प्राप्त होने पर अमीरी या गरीबी अवस्था में न्यूनाधिक प्राप्त करना चाहता है।

दूध जहां दुधारू पशु देते हैं वहां कुछ पेड़ भी देते हैं, पर पेड़ मानव के लिए उपयोग का दूध भोजन के लिए कोई नहीं देता। पर गाय, भैंस, बकरी, सूकरी आदि दुधारू पशुओं के दूध के अतिरिक्त कोई मानव के उपयोगी नहीं।

बकरी बहुत कम दूध देती है और उसमे पौष्टिक तत्व की भी कमी होती है। घृतांश भी कम मात्रा में होता है। स्वादिष्ट भी नहीं होता। इससे अन्य पदार्थ *यथा दही, छेना, खोवा,* घी आदि भी नहीं बनाया जाता। गरीब लोगों के लिए इसका पालन सरल व थोड़ी मात्रा के दूध की पूर्ती के लिए यह ठीक है इसलिए दूध की

तुलना व मोल मावा करेगा । गाय का
दूध कोई भी लेना पसन्द नहीं करेगा ।

भैंस

भैंस का दूध चिकनाहट की मात्रा
रहता है इसमें यह दूध कम है । ये छोटे शिशु
भी उपयोगी नहीं — गाय का दूध सुलभ न होने
उपयोग किया जाता है । दूध केवल भूख मिटा
करने के लिये ही नहीं लिया जाता । मानव को
आवश्यकता अधिक है । अतः भैंस का दूध
विषय को भोजन पर विशेष दृष्टि प्रकरण में
पर तो भैंस, बकरी से गाय के दूध की तुलना मात्र

गाय का दूध

यह एक अति उत्तम भोजन व पेय पदार्थ है
उच्च अनुभव प्राप्त वैद्य या डाक्टर ने कितने ही अति
पौष्टिक पदार्थों को उचित मात्रा में मिलाकर एक रसायन
हो, किस-किस पदार्थ को कितना-कितना, किस-किस प्रका
जाय इसका पूर्ण ज्ञान हो और ठीक उसी प्रकार से रसाय
की जाय तभी उससे पूर्ण लाभ की आशा की जा सकती है
यदि कोई बिना तोलें या मिश्रण को पूर्व पश्चात डाले तो रसायन
न बनेगी । मिष्ठान्न या पकवान शाक भाजी भी वस्तुएं उचित
में न होने से स्वादिष्ट नहीं बन पाते, न ही
ठीक इसी प्रकार गाय के

मे यह सुपाच्य भी है और बाल, वृद्ध, रोगी के लिए भी उपयुक्त है।

गाय के दूध की तरह दही, खोवा, छेना, घी आदि भी हितकर है। वैद्य डाक्टर भी प्रायः गाय के दूध से बने पदार्थों के सेवन पर ही बल देते हैं। दूध आदि केवल भूख मिटाने या पुष्टीकरण के लिए नहीं लिया जाता, बुद्धी भी तो भोजन से बनती है। इस प्रकरण मे सुपाच्य दुष्पाच्य व पुष्टीकर पदार्थ जिन्हें पाश्चात विटामिन के नाम से पुकारते हैं तक ही बताकर यह सिद्ध किया जाता है कि गाय का दूध भैंस के दूध से सुपाच्य है पर बुद्धिवर्धक कैसे है ? यह अगले प्रकरण मे देखिए।

भोजन पौष्टिक सुपाच्य लाभकारी है, और दुष्पाच्य उतना लाभकारी नहीं, इस तथ्य से प्रायः सभी परिचित हैं। अत. गो दुग्ध अन्य दूध से उत्तम प्रमाणित होता है।

गाय से भैंस की तुलना

यहाँ प्रसंग वश गाय की तुलना भैंस से की जा रही है' अन्यथा कहाँ विश्व की माता कहलाने व विश्व के मानव को ९९ प्रतिशत से भी अधिक लोगों को अमृत सदृश दूध देने वाली कहाँ १ प्रतिशत से भी कम लोगों को दोषयुक्त दूध देने वाली भैंस—जैसे हीरा (Diamond) भी एक पत्थर होता है और सड़क में लगने वाले पत्थरों के टुकड़े भी पत्थर ही होते हैं। क्या वे आपस में तुलना के योग्य हैं पर कुछ लोग दूध देने वाले पशुओं में दोनों को मानते हैं। उनके भ्रम मिट सके या कम हो सके इसलिए ऐसा प्रयास किया जा रहा है।

भैंस में दृष्टिगोचर होने वाले दोष निम्न है—

१. यह तन की सफाई पसन्द नहीं, अवसर व कीचड़ मिलते ही सारे बदन पर तो लगा ही लेती है दूसरी भैंसों को भी लगा देती है। कहावत प्रसिद्ध है, एक भैंस का कीचड़ दूसरी को लग जाता है।

२. यह अति मूर्ख स्वभाव का पशु है। प्रायः देखा जाता है सड़क

के बीच में बैठी या खड़ी भैंस यांत्रिक वाहन यथा ट्रक, बस, कार, और या ट्रैक्टर के होने की चिन्ता करके रास्ता नहीं छोड़ती और ड्राइवर, कण्डक्टर को उतर कर रास्ते से दूर हटानी होती है।

३. यह बहुत बेईमान (बिना भरोसे का) पशु है। क्योंकि अपने पुराने पालक को भी पूरा खाना प्राप्त किये बिना एक समय का दूध नहीं देती, और समझती है कि कहीं दूध लेकर पालक खाना देगा भी कि नहीं। पहले वक्त के खाने से बचा दूध भी अग्रिम खाना लिए बिना नहीं देती।

४. अपनी सन्तान की भूख के प्रति भी यह पशु उदासीन है। जैसे पेट भर खाना मिले बिना पालक को दूध नहीं देती इसी प्रकार स्तनों में दूध का दबाव होने पर भी अपने बच्चे को दूध नहीं पिलाती। पीने की कोशिश बच्चे द्वारा करने पर उसको दूर कर डराती व दूर धकेलती है। उस पर तनिक भी दया नहीं करती। सोतेली माँ से बढ़िया व्यवहार करती है।

५. यह पशु अपनी सन्तान की किसी आक्रमण से रक्षा करना मानो जानता ही नहीं। इसके सामने इसके बच्चे को कोई कितना ही मारे पीटे, यह उसकी रक्षा का साधारण प्रयास भी नहीं करती मानो इसका उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं है।

६. यह क्षुद्र जलाशय मिलने पर भी पानी में घुस जाती है। पालक निकाल कर घर ले जावे तो ठीक है अन्यथा अपने बच्चे के प्यार की बात इसे ध्यान में ही नहीं आती। पालक के ध्यान न रखने पर ये प्रसव भी पानी में कर देती है और बच्चा उसी

बच्चा २-३ दिन तक खड़ा नहीं हो पाता न स्वयं दूध पान कर सकता है।

१८. प्रायः भैंस दूध निकालने वाले व्यक्ति को बदलने पर दूसरे का दूध नहीं देती।

१९. इनका दूध दुष्पाच्य होता है, बलवर्धक या बुद्धि वर्धक नहीं। इसके दूध के सेवन से इनके दोष पीने वाले में भी आते हैं।

२०. [illegible]

रक्षा करती है व अपने से बलवान होने पर भी उस
आक्रमण कर देती है। बन्धी होने की दशा में बन्धन तुड़ा
रक्षा के लिए प्रयत्न करती है।

६. गाय पानी कीचड़ से दूर रहती है और अपने प्रसव के
बहुत जिम्मेवारी समझती है।

७. गाय भीषण से भीषण रोग से भी जूझने की शक्ति रखती
और पर्याप्त समय तक जी सकती है।

८. गाय भूख प्यास सहन करने में अद्वितीय है राजस्थान के
पानी के इलाकों मे प्रायः तीसरे दिन दूरस्थ मीठा पानी
जाती हैं।

६. गाय को भैंस से आधा या इससे भी कम भोजन पर्याप्त
और अन्न या बिनोले भी प्रति आवश्यक नहीं।

१०. गाय जिनकी सेवा सुश्रुषा पालकों द्वारा ठीक से की जाती है
ब्याने के १०-२० दिन पूर्व दूध से हटा दी जाती है और
जितनी मात्रा हो दोनों समय या ३-४ समय भी दे देती है।

११. गाय जंगल का घास पात खाकर दूध देती रहती है चाहे इस
पेट आधा भरा हो या इससे भी कम, दूध देने में ना नहीं करती

१२. गाय के पैर आदि टूट जाने या भारी चोट लग जाने पर
प्रायः मरती नहीं ऐसी गायें गौशालाओं में उपलब्ध हैं पर भैं
नहीं।

१३. गाय की आयु भैंस से अधिक होती है और अधिक बा
ब्याती है।

१४. गाय का चर्म अति ही उत्तम श्रेणी का व अधिक टिकाऊ होता है और इससे अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाई जाती हैं।

१५. गाय की नर सन्तान सांड व बैल बहुत शान्त स्वभाव के, बलवान, पालक के हितैषी होते हैं। बैल खेती जोतने, कुए से पानी निकालने भार ढोने, आटा को खरास चलाने व रथ खेंचने आदि अनेकों कार्यों को पूरे दिन भली प्रकार करता रहता है और इसमें सहयोग से कार्य करने का विशेष गुण है। एक साथ प्राय. दो बैल तो जोते ही जाते है, पर भारी कार्य के लिए चार बैल भी एक साथ चलाए जाते हैं। ये दूसरे बैल से प्रेम करते हैं। झगड़ा लड़ाई नहीं करते। विस्तार पूर्वक बैल से भोटे की तुलना प्रकरण में पढिए।

१६. गाय व गोवश के नामो के अर्थ कितने शुभ है यह नाम प्रभाव प्रकरण मे पढें।

१७. गाय का प्रसव पालक की अनुपस्थिति में या जगल में हो जाने पर वह अपने वत्स को ठीक से पाल पोश लेती है और रक्षा भी करती है व घर पर वत्सको लेकर आ जाती है।

१८. गाय को दूहने वाला यदि बदल जाय तो भी वह नये दुहारे को दूध प्रसन्नता पूर्वक दे देती है।

१९. गाय का गोबर अति उत्तम होता है। स्थानों की पवित्रता इसके लेपन से की जाती है। यह रोग नाशक है और दूषित गैसों यथा रेडियम घर्मी या एटम से बनी गैसों के कुप्रभाव से रोकने में समर्थ है। सोवियत रूस के वैज्ञानिकों ने जांच करने के पश्चात इसकी प्रशंसा की है। हमारे शास्त्रों में तो पंचगव्य लेने का

बहुत महत्व है, जिसमें गोबर की मात्रा रहती है। इसकी खा
दिए हुए बाग व खेत के फल, अन्न, शाक, भाजी या भूसा भी
अधिक गुणकारी होते हैं।

२०. गाय का दूध सुपाच्य, सभी प्रकार के विटामिनों से युक्त, बल व
बुद्धि वर्धक, स्वादिष्ट व निरोग होता है। बाल, युवा, वृद्ध, रोगी
या पहलवान सबके लिए उपयोगी होता है। पंचामृत में केवल
गाय का दूध व दधि, घृत मिलाया जाता है इसके सेवन से आयु
बढ़ती है।

२१. गाय का घृत तो साक्षात सर्वोत्तम अमृत है, इसको खाने से बल
बुद्धि व आयु तो बढ़ती ही है, नेत्रों की ज्योति, श्रवण व स्मरण
शक्ति बढ़ती हैं। यह रोगों के शमन या रोकथाम के लिए अति
उपयोगी है और वर्षों तक गुणों को धारण किए रहता है। यज्ञ
में केवल गो घृत को ही मान्यता है। इसके उपयोग से मानव
सौम्य प्रकृति का हो जाता है और सभी का हित चिन्तक हो
जाता है और पाप कर्मों में प्रवृति नहीं होती व मादक द्रव्यों
की भी इच्छा नहीं रह पाती।

२२. गाय के मूत्र में इतने गुण हैं कि सबका वर्णन नहीं किया जा
सकता। इसके सेवन (पीने) से अनेक रोग मिट जाते हैं। स्नान में
उपयोग से चर्म रोग नाश होते हैं। पंच गव्य में प्रमुख पदार्थ है
यह खेत व बाग में खाद के उपयोग में आता है, इससे पुष्ट पेड़ों
या झाड़ों से प्राप्त होने वाले फल शाक या अन्न भूसा सभी
उत्तम गुणों से युक्त होते हैं।

२३. गाय पशु जाति में सबसे अधिक मूल्यवान है। १२ नवम्बर

१६७२ में तेवमेनिया (न्यूयार्क) में १ गाय १ लाख १२ हजार डालर की बिकी थी, भारतीय मुद्रा से नौ लाख रुपये बने थे। इससे पूर्व सन १९६६ में १ गाय १ लाख ८ हजार डालर की बिकी थी। इतनी अधिक कीमत गुणवान व लाभकारी होने पर ही पड़ती है।

२४. गाय का नाम पृथ्वी है या कह सकते हैं। पृथ्वी और गाय मे कोई अन्तर नहीं, बैल की सीग पर पृथ्वी का टिकना माना जाता है। बैल के बिना पृथ्वी अनुपयोगी है। राजा पृथु तो बैलो से हल चलाकर अन्न प्राप्त करते थे।

गाय या गौ वश पर धार्मिक दृष्टि से विश्वास करने वालों को कितने लाभ पहुँचते आ रहे हैं यह नित्य प्रति लेख मालाओं का समाचार पत्रों में देखे जाते व सुनने में आते है और प्रायः बहुत अधिक लोग जानते व मानते हैं। किन्तु किशोर या २५-३० वर्ष की आयु के लोग कम परिचित हैं।

ऐसे उत्तम स्वभावों से युक्त गाय के साथ निकृष्ट स्वभाव वाली भैंस की तुलना ठीक ऐसी ही है जैसे पेय पदार्थों मे शराब के साथ दूध की किन्तु परिस्थितियो वश आज का मानव इस विषय पर अधिक सोचने के लिए अवकाश भी नहीं पाता। और जान लेने पर भी खाद्य पदार्थों को प्राप्त करने मे अपने मूल्यवान समय को व्यय भी नहीं करना चाहता। चाय के लिए दूध चाहिए, वह गाय का मिले या भैंस, बकरी, घूकरी का ताजा है या बासी, शुद्ध व पवित्र है या अशुद्ध, अपवित्र इधर ध्यान रखने में उदासीनता दिखाई जाती है। रोग हो जाने पर चिकित्सा कराने या बुद्धि व स्मरण शक्ति व बल की कमी

से होने वाली क्षति की भी चिन्ता नहीं। बालक परीक्षा में उत्ती
• हों और आगामी वर्ष भी उसी कक्षा में बैठा रहे, उसे या मन
भाग्य को कोस कर सन्तोष कर लेता है। न इनके कारणों की मीं
की जाती है। न इनसे बचने के उपाय ही सोचे जाते हैं। केवल पैस
कमाना ही लक्ष्य रह गया है। हम धनवान बन जाय चाहे और को
मानवोचित गुण हमारे में रहे या नहीं।

गाय न केवल पशु जगत में भैंस से व अन्य से उत्तम है। य
सभ्य कहलाने वाले मानव से भी उत्तम है। मानव से गाय की तुलन
प्रकरण में सविस्तार वर्णित है।

६

मानव से गाय की तुलना

विश्व भर के प्राणियों में मानव का एक विशिष्ठ स्थान है। कोई प्राणी मानव की समानता नहीं कर पाता जैसे—

१. मानव सब प्राणियों में कुशाग्र बुद्धी वाला है।
२. " का मस्तक उठा हुआ है अन्य सबके झुके हुवे हैं।
३. " वस्त्र आभूषण आदि पहनता है।
४. " प्रायः नित्य स्नान भली प्रकार करता है।
५. " साबुन, तेल, इत्र, पावडर आदि लगाता है।
६. " कुर्सी, पलंग, पीढ़े या चोकी पर बैठता है।
७. " अनेक प्रकार के वाहनों की सवारी करता है।
८. " पढ़ना, पढ़ाना, लिखता रचना करता है।
९. " चित्र, नक्शे, तस्वीर मूर्ती बनाता है।
१०. " गोत्र जाति वंश वंशावली का ध्यान रखता है।
११. " इमारतें जलाशय मन्दिर पुलों आदि का निर्माण करता है।

१२. मानव उपयोगी जीवों को पालता है व उनसे कार्य लेता है
१३. " खेती बाग बगीचा से फल, शाक, अन्न उपजाता है
१४. " नाना प्रकार के यंत्रों से चालित उद्योग स्था
करता है।
१५. " दूरस्थ सन्देशों को क्षणों में भेजता व प्राप्त करता
१६. " हिंसक जीवों से पालतू जीवों की रक्षा करता है।
१७. " नदियों व भूगर्भ जल सिचाई व पीने को लेता है।
१८. " प्रकाशन की सुचारू व्यवस्था करता है।
१९. " न्याय की व्यवस्था करता है।
२०. " संगठन या यन्त्रों की शक्ति से दुर्गम कार्य कर लेता
२१. " जल स्थल व आकाश पर प्रभुत्व मानता है।
२२. " अंधेरी रात्री मे प्रकाश का प्रबन्ध करता है।
२३. " दुर्गम पहाड़ो या टोबों मे सुगम राहे बनाता है।
२४. " रोग का उपचार व टूटे अंगो को जोड़ कर
करता है।
२५. " का अपना नाम पिता का नाम जाति निवास स्थ
निश्चित है।

इसके अतिरिक्त और अनेक विशेषताए मानव मे है जो
पशु जगत मे नहीं पाई जाती। श्री काकभुसुण्डी जी को गरुड़
मे फरमाते हैं कि—

नर समान नहीं कवनिहु देही, जीव चराचर याचत जेही।

अर्थ कि मानव देह के समान कोई देह नहीं। अचर व चर
प्राणी मानव देह को पाने की प्रभु से याचना करते हैं।

स्वय श्री रामचन्द्र जी ने पुर वासियों को उपदेश के समय

रीर की प्रशंसा में फरमाया कि—

बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थन गावा।

यें कि मनुष्य की देह बड़े भाग्य से प्राप्त होती है, सद्ग्रन्थों में
गाया गया है। मानव देही देवताओं को भी सुलभ नहीं।

मानव देहधारी में जो उत्तम बातें हैं, कुछेक का वर्णन हो चुका
. अन्य अच्छी बातें बहुत हैं जिन सबको लिखने से विषय बहुत बढ़
जावेगा, पर मुझे मानव के साथ गाय की तुलना करनी है और मेरा
ध्येय गाय को मानव से उत्तम बताने का है। जो मानव में पाई
जाने वाली त्रुटियों का वर्णन करके ही प्रमाणित कर पाऊंगा—
अन्यथा ऊपर के तथ्यों को झुठलाना तो दुःसाहस है। जहां गुणों
की अधिकता हो वहां दोष पाजाना स्वाभाविक बात है। मानव भी
प्रकार निखार हुआ है। भगवान श्री राम ने जहां मानव देह की
महिमता बताई वहां और क्या कहा ध्यान देने योग्य है।

ही तन कर फल विषय न भाई, स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुःखदाई।
नर तन पाई विषय मन देही, पलटि सुधा ते सठ विष लेही।

वे - वे फरमाते हैं कि यह तन विषय भोगों के लिए नहीं है।
आहार, निद्रा, भय, मैथुन तो सभी अन्य योनियों में प्राप्त थे या हैं।
खाना-पीना अच्छा, पर नाना प्रकार के वाहन आदि जो स्वर्ग में हैं
से तो यहां राजाधिराज को भी प्राप्त नहीं। स्वर्ग को भी अन्त में
दुखदाई बताया गया है। पर मानव तुच्छ वस्तुओं के उपभोग के लिए
ही लालायित है, जिसे अमृत को छोड़कर विष सेवन करना ही मानना
चाहिए। मानव उत्तम शिक्षा के विपरीत आचरण करके अच्छे घर,
धन, वाहन वस्त्र, अलंकार, पद, मान, मर्यादा, वैभव आदि के लिए

क्या-क्या दुष्कर्म करते हैं को ध
क्या यही मानवता है।

(१) हिंसा करते है (२
करते हैं (४) ठगते हैं (५)
नापते हैं (७) डाका डालते हैं
पीते हैं (१०) मांस खाते है (
(१२ रेशम के लिए कीड़े मारते
है (१४) शिकार करते हैं (१५)
करते हैं (१७) रिश्वत लेते है (१
है (१९) अपने आश्रित का भी धन
को चुराते है (२१) दूसरे के बालकों
होते हुए भी भिक्षा मागते है (२
माता पिता गुरु का अपमान करते है
प्रति कृतघ्न भी है (२६) कपट कर
(२८) टैक्स चोरी करते है (२९)
ऋण लेकर वापस नहीं देते (३
वैश्यावृत्ति करते हैं (३३) नर्म चर्म
गोवत्स के चर्म को व्यवहार करते हैं

ये कुछेक दोष ही वर्णन किए
जघन्य कर्म करते हैं जिन्हें पशु जगत
करते। सिंह क्रूर है, दूसरे प्राणी को
मनुष्य के पास के धन, आभूषण, वस
सांप काट लेता है और इससे मानव
वस्तुओं का लोभ नहीं। कुत्ता चोरी

..ार, बहुत बुद्धिमान होते हुए अपनी तृष्णा की तृप्ती के लिए क्या-
ःरता है। ऊपर वर्णित व बिना वर्णन के दुष्कर्म जिन
ों को हेय माना जाता है उनमें २-४ से अधिक दोष किसी
ीं। चाहिए तो यह कि हेय माने जाने वाले पशु या प्राणियों
दोष हों, तो मानव मे कोई दोष न हो या दो से भी कम हो
स्थति पूर्णतः विपरीत है और इतने पर भी मानव को उत्तम
जा रहा है। इसलिए मानव से गाय की तुलना तभी तक ठीक
मानव शास्त्रीय गुणों से ओतप्रोत हो। अन्यथा गाय को
हीरा और मानव को नकली कांच का टुकडा कह दिया जाय
युक्ति नहीं। मानव कैसा है, गाय उसके साथ कैसा व्यवहार
है, वह गाय के साथ कैसा व्यवहार करता है सोचने योग्य है।

गाय मानव को २-३ महीने को आयु से लेकर जीवन
साधारण घास-फूस खा कर अमृत सदृश दूध, दही, घृतादि
को देती है। मकान लीपने, खेत मे खाद डालने के लिए गोबर,
देती है। जूते, सूटकेस, पर्स आदि के लिए चर्म प्रदान करती
वारी व भार ढोने के लिए अपना पुत्र बैल सेवा मे प्रस्तुत
है। उसको निर्दयता पूर्वक मारते देखे, सुने या समर्थन करे
हत्या से मिलने वाले चर्म का उपयोग करे, हत्या करने
को सहयोग दें, ऐसे व्यक्ति को मानव या गाय से उत्तम
कहा जा सकता है। गाय तो हिंसा करने वाले को भी अपने
वों द्वारा लाभ पहुँचाती है, पर मानव उसका दूध पीकर,
पुत्र बैल की सेवा लेकर भी उसके वध को उचित मानलेता है।

वास्तव मे मानव तो वह है जो सभी प्राणीमात्र को दया दृष्टि
से। क्रूर व हिंसक प्राणी जो मानव को संकट में डालते हैं जैसे

सांप, बिच्छु आदि जहरीले प्राणी व ऐसे प्राणी जो खेत, बाग
आदि को चौपट करे, उनके साथ यदि दया का व्यवहार न भी
इसे गौण माना जा सकता है। पर उपकार करने वाले के
का बदला भलाई से चुकाने के सिद्धान्त को ताक में रखकर
साथ निर्दयता का व्यवहार करे और वह भी बिना किसी
लाभ के, तो इससे अधमता और क्या हो सकती है। डाका
वाले महीनों बाद एक डाका डालते हैं, यथा सम्भव बिना
के धन प्राप्त करना चाहते हैं, परिस्थितिवश हत्या पर उतारू हो

हत्या की जाय वह भी गाय की और सुबह से शाम
नित्यप्रति केवल पेट पोषण के लिए, वे गोपालक भी आदर की
से नहीं देखे जाते, कसाइ माने जाते हैं, अनादरयुक्त जीवन
है। उनकी भावी सन्तान यदि किसी अच्छे कार्य में
उन्हें अपने अभिभावकों के व्यवसाय बताने में लज्जा आती
निष्कर्ष यह है कि मानव से गाय बहुत उत्तम है, उसमें दोष न
व अनेक गुणों से युक्त है।

भोजन व उसके प्रभाव पर तीक्ष्ण दृष्टी

प्राणीमात्र को भोजन की आवश्यकता और यह भी निश्चित है कि सबको उत्तम भोजन प्राप्त नहीं हो पाता। उत्तम भोजन क्या है, यह तो उत्तम मानव बता सकता है, किन्तु साधारण मानव भी कुछ न कुछ अपनी बुद्धि अनुसार ही बता सकते हैं। पालतू पशु-पक्षियों को क्या भोजन हितकर या रुचिकर है, यह मानव अपनी बुद्धि के अनुसार ही निश्चित करता है।

पालतू पशुओं पर भोजन सम्बन्धी खोज अवश्य हुई है किन्तु पर्याप्त नहीं। देश, काल व वस्तु के प्राप्ति या अभाव को ध्यान में रख कर की जाने वाली खोज के परिणाम के अनुसार चलकर पश्चिमी देशों में जंगली गाय से ६०—७० लीटर दूध प्रति दिन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। भोजन से दूध बढे और दूध में पौष्टिक गुण बढे। उसका उपयोग करने वाले को भी पर्याप्त लाभ पहुंचे, इस की खोज करने की साधारण रीति इस प्रकार है।

पालतू पशु जो अन्न आदि खाते हैं उनको एक समय में

उनकी आवश्यकता से कुछ अधिक मात्रा में २ प्रकार का भोजन रखकर देखा जाए कि वह किस को पूरा खाते हैं किसको कुछ में छोड़ते हैं। इससे हमें रुचिकर भोजन का पता चल जाएगा। ३-४ बार निरन्तर देखने पर यदि उनको रुचिकर एक ही प्रकार का भक्ष हो तो उन्हें कुछ काल तक देकर उसका प्रभाव देखा जाय कि दूध बढ़ता है या कम होता है। उसका दूध विश्लेषण कराया जाय कि दूध के गुण बढ़े हैं या घटे हैं।

इसी प्रकार एक ही खेत में एक ही प्रकार के पेड़ों या बूंटों को पृथक पृथक प्रकार की खाद देवें और पानी समान दें, उन पेड़ों, बूंटों की दशा भी देखी जाय। उनके फलों का आकार प्रकार व तौल देखा जाय और फलों के गुणों का भी विश्लेषण कराया जाय व परिणाम जाना जाय। मेरा अपना विश्वास है कि सभी रासायनिक खादों या पशु जन्य खादों से, गाय के गोबर व गोमूत्र की खाद का आश्चर्य जनक परिणाम मिलेगा।

पशु जगत चाहे मांसाहारी हो या शाकाहारी उसके समक्ष शाक या दूध रखने से या मांस व दूध रखने से, दोनों ही प्रकार के, दूध को अधिक पसन्द करेंगे और दूध पीने से वे अधिक पुष्ट होंगे व दुधारू पशु अधिक दूध देंगे। दूध का सुप्रभाव का पता तो एक बार पिलाते ही लग सकता है। इस प्रकार दूध रुचिकर भी है और लाभकारी भी।

उपरोक्त वर्णन से यह निश्चित हुआ है कि दूध उत्तम भोजन है पर प्रायः उत्तम भोजन सभी को सुलभ नहीं इसलिए अनेक लोग मध्यम व निकृष्ट भोजन पर अपना जीवन चलाने को विवश हैं।

भोजन क्यों किया जाता है यह विषय भी अछूता छोड़ने का नहीं। प्राय: सभी जानते हैं कि भोजन भूख मिटाने हेतु किया जाता है। यह तो सत्य है कि भोजन भूख मिटाने हेतु किया जाता है, पर भूख तो जो ज्वार आदि को रूखी-सूखी बासी रोटी से भी मिट जाती है, फिर गेहूं की छोटी छोटी चपातियां, वह भी ताजा बनी हुई क्यों पसन्द की जाती हैं। हमारा दृष्टिकोण अवश्य ही पौष्टिक व रुचिकर अन्न का है। शूकरी कूकरी के दूध मे भूख मिटाने व पुष्ट करने के दोनों गुणों की विद्यमानता होते हुए उसका कोई उपयोग नही करते, इसका क्या रहस्य है। केवल क्षुधा मिटाने के लिए तो अन्न के स्थान पर घास की रोटी खाने से काम चल जाता है। वह इसलिए नही खाते कि पौष्टिक नहीं, पर शूकरी कूकरी के दूध में पुष्ट करने के पदार्थ भी न्यूनाधिक मात्रा मे स्थित है। गाय के दूध मे शूकरी के दूध की मिलावट को हम दूध में पानी मिलाने से बुरा समझता हैं। निरा शूकरी का दूध तो बहुत ही बुरा लगता है। इसका कारण उसके रहन सहन व खान-पान आदि की आदतों से हमारा परिचित होना व उसके जीवन चर्या से घृणा होना मात्र है।

इस तथ्य के परोक्ष में भी कुछ अति बारीक भाव हैं जिनको और देखे बिना ही हम उससे ऐसी घृणा करते हैं वह उस भाव का फल है कि जैसा खावे अन्न वैसा बने मन। पौष्टिक भोजन से स्वास्थ्य उत्तम होता है और बुद्धि भी तीव्र होती है।

अतः यदि हम शूकरी कूकरी या गधी का दूध उपयोग करेंगे तो उसी जैसी मलीन बुद्धि हमारे में अवश्य आ जावेगी। हम

भोजन जहां क्षुधा की तुष्टी के लिए करते हैं तो पुष्टी का ध्यान भी रहता है और पुष्टी के बाद हमें अपनी बुद्धि के निर्माण का भी ध्यान बना रहता है रखना आवश्यक भी है। शूकरी कूकरी आदि के दूध के लिए तो प्रायः सभी एक मत हैं कि ऐसे जीवों का दूध पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जावेगी। इससे हमें यह ध्यान होगा कि किसी नई खराब वस्तु से हम पहले तो घृणा करते हैं पर यदि कुछ समय ऐसे दूध की मिलावट का दूध मजबूरी में या अनजाने में पीना पड़ जाय तो निरे शूकरी कूकरीके दूध से जो आज घृणा है नहीं बनी रहेगी और अब हम गाय के दूध के सामने भैंस का दूध निकृष्ट होते हुए भी निःसंकोच उपयोग कर रहे हैं। भविष्य में इससे घृणा होने का कोई कारण नहीं।

हम प्रायः देखते हैं कि जो लोग आमिष आहार करते हैं उन्हें आमिष आहार करने में कोई संकोच नहीं, किन्तु कितने ही शाकाहारी ऐसे हैं जो भोजन करते समय मांस, मछली या अण्डे की बात सुनने मात्र से, बाकी का भोजन नहीं कर पाते। कुछेक को बात करने पर तो घृणा नहीं, पर दीखने पर घृणा होती है। कुछेक ऐसे भी हैं कि वे स्वयं उपयोग नहीं करते, पर साथ में पास बैठा कोई खाता रहे तो उन्हें कोई शिकायत नहीं। हमें भोजन का प्रथम माप दण्ड बुद्धिवर्धक मानना चाहिये। रुचिकर या स्वादिष्टता को गोण मान लें तो यह मानव के लिए एक वरदान होगा किन्तु स्वादिष्टता तो अभिशाप है।

पाठक गण सभी भांति जानते हैं कि बुद्धि का महत्व बल से अधिक है। बुद्धि प्राप्ति के लिए अभिभावक अपने छोटे छोटे शिशुओं

विज्ञान द्वारा आविष्कार करने वाला चाहे मिट्टी का खि
बनाए, चाहे काठ की कुर्सी, सोने का जेवर, लोहे की गन या ह
जहाज राकेट आदि। ये सब शिल्पी हैं कोई छोटा कोई ब
इन्हें राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक देव, ऋषि दया
या महात्मा गांधी की तुलना में नहीं लिया जा सकता। ध्यान
देखा जाए तो बड़े शिल्पियों के निर्माण अधिकतर समार
विनाश की ओर ले जा रहा है। ट्रक, बस, कार, ट्रेक्टर, स्कू
व कारखानों के जहरीले धुंवे से वातावरण दूषित हो जाता है
बड़े नगरों में घुटन प्रतिदिन ही बनी रहती है। वहां वैज्ञानि
का यह मत है कि वायु कुछ और दूषित होते ही सारा नगर ए
साथ भ्रष्ट हो जावेगा बचाव के उपाय निरर्थक होंगे।

यदि मानव उत्तम भोजन करता तो उसकी बुद्धि सात्विक होती
और वे किसी दूसरे की वस्तु को, छीना झपटी न करते न ही किसी
दूसरे का भय होता, न किसी देश को दूसरे देश का भय होता।
न मानव श्रम संहारक आयुधों के निर्माण में लगता, न विनाश
लीला होती, पर इस ओर होड़ ही लग गई।

उत्तम आहार का विवेचन इस प्रकरण का मुख्य विषय है।
आहार पौष्टिक व शुद्ध खाने को प्रायः सभी अच्छा समझते हैं। पर
शुद्ध क्या है इसे जानने की नितान्त आवश्यकता है।

शुद्ध वस्तु उसे कही जाती है जिसमें अन्य वस्तु मिली हुई न
हो। पानी शुद्ध वह कहलाता है जिसमें मिट्टी, फूस न मिला हो।
दूध वह शुद्ध है जिसमें पानी या और कोई पदार्थ न मिला हो। गाय
का शुद्ध दूध वह है जिसमें भैंस, बकरी आदि पशुओं का दूध या
पानी न मिला हो। हमें शुद्ध वस्तुओं का ही उपयोग करना चाहिए

गाय के दूध में भैंस का दूध मिलाने मात्र से गुणों में कमी आजाती है। यदि वनस्पति मिलाया जाय तो घी भी लाभ रहित हो जावेगा। इसलिए खाद्य पदार्थ को बहुत सतर्कता से क्रय व उपयोग करना श्रेष्ठ है।

इस युग आहार बाबत सतोष कर ले यह भी पर्याप्त नहीं। भारतीय विशेषज्ञों ने इसकी पवित्रता को सर्वाधिक आवश्यक माना है जिसे की पाश्चात्य नहीं समझते, न ही मानते हैं। पर भारतवासी इसमें बहुत ध्यान रखते थे। कुछ अंशों में अभी भी मानते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति ने शौच जाकर या लघु शंका करके हाथ नहीं धोया और दूध के बर्तन लगे पात्र को हाथ लगा दिया या बाद बर्तन के बाहर लगे दूध को कुत्ते या बिल्ली ने चाट लिया, उसे अपवित्र माना जाय। पर पाश्चात्य नहीं मानते या दूध को किसी लेबोरेट्री में जांच कराया जाय तो उसमें उसका कोई दोष नहीं पाया जाता। किन्तु मान्यता कौनसी ठीक है? देखना यह है दोष न होने की मान्यता मानने पर, दूध की टंकियों को रेल में स्थान के अभाव में शौचालय में रखना कोई आपत्तिजनक बात नहीं, बर्तन के बाहर मल मूत्र लगने पर भी क्या दोष है?

यदि यही मान लिया जाय कि बाहर की खराबी का दूध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तो क्या कोई व्यक्ति दूध टंकी का ध्यान न रखने पर, कुत्तों द्वारा मूत्र कर देने पर, उसको धोने के पश्चात अन्दर का दूध लेना स्वीकार कर लेगा? पर ग्वाला तो अवश्य ही उस दूध को बेचना चाहेगा और उसे दोष ही नहीं मानेगा। फिर

ग्राहक ने देख लिया यह नहीं तो किसी और के
करने के पश्चात भी उसमें कोई पूछे कि तुमने उस गा
लोगों को कैसे दिया तो वह यही दुहाई देगा कि दूध
उसका बुरा भी नहीं बिगड़ा। किन्तु यदि उसी गवाले की
इसके बाद कभी कोई थूक दे या पेशाब करदे, तो वह दू
वित्र हो जाने की बात करके, दूध के मूल्य के लिए दावा क
प्रश्न स्वार्थ का है, इसलिए पवित्रता पर ध्यान नहीं र
मिलावटी और अपवित्र वस्तुएं खाते हैं इससे हमारे स्
चाहे कोई प्रभाव न पड़े, पर मन पर अवश्य पड़ता है।

आवश्यक यही है कि हम खाने की वस्तुएं शुद्ध व पवि
चाहे हमें कुछ कठिनाई क्यों न उठानी पड़े। बाजार के तैयार
चाट आदि से बचना होगा, पिसा हुआ आटा या मसाला न ले
के लिए गाय रखी जाय या जो पवित्रता का ध्यान रखने वाले
हों, उनके घर से दूध लिया जाय, तेल तिलहन से निकला लिया
फल तरकारी को अच्छी तरह धो लिया जावे।

पवित्रता पर जो कुछ वर्णन किया गया है वह कितने पा
को प्रिय लगेगा कह सकना सम्भव नहीं। श्री गोस्वामी तुलसीदास
महाराज ने कहा है कि—

तुलसी माया नाथ की ऐसी आन अड़ी।
किस किसको समझाइये कूवे भांग पड़ी।

नगरों और महानगरों के निवासी बहुत कुछ चाहने पर भी
ऐसा कर सकने में सक्षम नहीं, किन्तु यह भी ध्रुव सत्य है कि नगर
के मानव, देहात के मानव की अपेक्षा अधिक त्रस्त है। वे

किसी वस्तु को या उसकी इज्जत को सुरक्षित नहीं समझते। जिनमें स्वार्थ की चोरियां, ठगी, बेईमानी, घूस-खोरी, मिलावट, जेब कटी आदि अपराध नित्य प्रति होते देखते हैं। क्या ये मानवोचित हैं इनका मूल कारण आहार की खराबी है।

भोजन में पवित्रता के अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व भी है। पाठकों को उससे भी परिचित कराना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। वह है सद्-भाव पूर्वक प्रेम का विचार।

हमें भोजन वहीं करना चाहिए जो हमें आदर या प्रेम से भोजन कराये अन्यथा वह भोजन लाभकारी नहीं। प्रायः लोगों को अपने घर पर भी प्रेम व आदर सहित भोजन नहीं मिलता, इसलिए अपने घर का वातावरण सुधारना चाहिए या स्वयं पाकी बनकर उत्तम भोजन ले सकते हैं। पर सबके लिए सम्भव नहीं। जातियों, दावतों (भोजन गोष्ठी) में बहु संख्या में एकत्रित होकर भोजन करते हैं, वहां पकवान तो बहुत चीज को रुचिकर मिल सकते हैं, किन्तु आदर की मात्रा कम रहती है। यात्रा में भी कभी तो ऐसी जगह जाना पड़ता है जहां बिना मनका अतिथि होना पड़ता है। खाना खिलाने वाले लोक-लाज या गृहस्थ धर्म के नाते सभी सुविधाएं प्रस्तुत करते हैं। पर हृदय के भाव कैसे हैं। उनके भाव अच्छे तब मानने चाहिए जब वे भी हमारे घर कई बार आये हों और हमने उनकी सेवा प्रेम पूर्वक सहृदयता से की हो। जहां तक बनपड़े अनिच्छा या अनादर का भोजन नहीं करना चाहिए, और ना ही भोजन के समय किसीके स्थान पर उपस्थित होना चाहिए। ऐसा बन पड़ने पर निराहार रहना पड़े तो उस दिन का व्रत एकादशी आदि व्रतों से भी उत्तम व्रत मान लेना चाहिए। अनादर का भोजन अच्छा नहीं। श्री रहीमजी ने

इसके लिए कहा है।

> रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावे मान बिनु।
> जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो॥

वे बिना प्रेम के अमृत को त्यागते हैं। तो साधारण भोजन हम भी त्याग दें। वे आदर सहित विष को स्वीकार करते हैं। हमें आदर सहित रूखा-सूखा मिले तो भी स्वीकार करना उचित है।

भगवान कृष्ण ने दुर्योधन के पकवानों को त्यागकर विदुरजी के साक पात खाकर इस धारणा को पुष्ट किया है।

आज से १० वर्ष पूर्व भोजन के लिए जितना ध्यान रखा जाता था, आज नहीं रखा जाता। २० वर्ष पूर्व का-सा १० वर्ष पूर्व न था। किन्तु ४० वर्ष पूर्व तो बहुत ही ध्यान रखा जाता था। ऐसा लेखक का स्वय का अनुभव है। बहुत लोग ऐसे मिलते थे जो स्वयं पाकी थे, कई दूसरों के यहां की कच्ची रसोई (रोटी, सब्जी) नहीं खाते थे। बहुत शुद्ध आचार विचार के रसोई बनाने वाले लोगों द्वारा बहुत पवित्रता से भोजन बनाया व परोसा जाता था। संतों या ब्राह्मणों को भोजन कराने से पूर्व उनके चरणों को धोया जाता था। प्रत्येक को आदर से आसन पर बिठाया जाता, थाली भी चौकी या पाटे पर रखी जाती। खाना समाप्ती के पश्चात उनके सामने करबद्ध उपस्थित होते व दक्षिणा देकर प्रस्थान कराते।

भारत समाज में एक महापुरुष श्री जाम्भाजी हुए, जिन्होंने उत्तम २९ नियम बनाए और अपने अनुयाइयों को बिश्नोई कह कर पुकारा। आज भी उनकी संख्या अनुमानतः ४०-५० लाख है।

उन्होंने भोजन के लिए जो नियम बनाया अभी भी बहुत से विस-नोई उसका पालन करते हैं। नियम यह था कि बना हुआ भोजन विसनोई के अतिरिक्त कोई छू दे तो खाने योग्य नहीं। अपितु यदि ऊंट के ऊपर भोजन रखा हो, उनको कोई छू दे या उस ऊंट पर दूसरे ऊंट की रस्सी रखी हो, या १०-२० ऊंटों की रस्सी एक दूसरे के लगी हो तो उनमें से किसी ऊंट को कोई स्पर्श करले तो ऊंटों पर रखा हुआ भोजन अपवित्र होना मानते थे।

मूल प्रकरण उत्तम, शुद्ध, पवित्र व प्रेम पूर्वक मिलने वाले भोजन से सतोगुण की वृद्धि का है। गाय का दूध उत्तम खाद्य पदार्थ है। उसमें कुछ न मिलाया जाय चाहे अन्य किसी का दूध, पानी या शर्करा हो, तब यह शुद्ध है। स्तन दोहनपात्र व दोहन करने वाले पवित्र हों तो गाय बछड़े को देखकर प्रेमपूर्वक दूध देती है। गो वत्स को भी पर्याप्त दूध पिलाकर लिया गया जो दुग्ध अमृत है, उसके उपयोग से सर्वाधिक लाभ होते हैं।

लाते हैं जिससे वे निर्बल से बलवान व पुष्ट हो सकें।

दूध से बने मिष्टान पक्षियों को भी मिल जाते हैं। कुछ प्रकार जल जन्तुओं को भी प्राप्त होता है। भूल से गिर जाने वाले या ले बर्तन के दूध या दूध से बने पदार्थों की जूठन कितने ही कीट दि को भर पेट मिल जाता है।

अचर प्राणी यानि वनस्पति को भी गाय अपने गोबर व गोत्र की खुराक देती है। उनके लिए गोबर गोमूत्र का महत्व इतना है जितना मानव के लिए दूध का, मांसाहारी जीवों के लिए मरणोपरान्त मृतक भोज देती है, यानि गिद्ध, चील, कौवे आदि उसका मांस भक्षण करते हैं।

गाय मरणोपरान्त आर्थिक दृष्टि से हीन लोगों को अपना चर्म प्रदान करती है। जिससे वे अनेक प्रकार की वस्तुएं जूते, सूटकेस, पर्स आदि बना कर अर्थ लाभ करते है और कांटा काटों, कंकरों से अपने पैरों की रक्षा व अपना सामान सुरक्षित रखने हेतु अटेची व अन्य आवश्यक वस्तुएं भी पाता है।

गाय के मरणोपरान्त उसकी अस्थियां, रोम, खुर आदि सभी किसी न किसी उपयोग में आकर मानव का हित करती हैं। गाय जीते जी दूध से प्राणिमात्र का लाभ करती थी उसी प्रकार मरणोपरान्त भी अपने अवयवों से यथाशक्ति कर देती है।

किन्तु अब तो परीस्थिति ऐसी हो गई है कि गाय का मरने की प्रतीक्षा करना मानव के लिए कठिन हो गया। उनसे जीते-जी अनेक ताड़नाएँ देकर चर्म निकाल लिया जाता है और उसके गर्भस्थ शिशु का भी। उनसे निकला हुआ खून सुखाकर व मांस, हड्डियां सभी

९

विविध प्रकार की सम्पदाओं से गाय की तुलना

विश्व अनेक पदार्थों से परिपूर्ण है। भूगर्भ व समुद्र के गर्भ से अनेक पदार्थ मिलते हैं। स्थलचर प्राणियों व स्थावर कहलाने वाले पेड़, पौधों, लता, बेलों से भी अनेक पदार्थ मिलते हैं। मानव तो जल चरों से भी कुछ न कुछ प्राप्त करता है। पदार्थों की ओर सबकी दृष्टि तो सदा से पड़ती रहती है। किन्तु सभी उत्तम पदार्थ तो सभी प्रकार के मानव भी प्राप्त नहीं कर सकते। जितना जिसके भाग्य में है या जहाँ तक बुद्धि से प्राप्त किया जा सकता है, कर लेते हैं। मनुष्य की तृष्णा बनी ही रहती है। सब पदार्थ कितने हैं, कोई नहीं गिन सकता, फिर भी मुख्य मुख्य पदार्थ, जिन्हें मानव पाने संग्रह करने या भोगने में लगा हुआ है, का वर्णन किया जाता है।

१. रत्न: यथा हीरा, पन्ना, नीलम, मोती, पुखराज, फीरोजा आदि।

२. धातुएं: स्वर्ण, चांदी, बंग, ताम्बा, प्लेटीनम आदि।

३. भवन: मन्दिर, महल, कोठी, घर, दूकान, उद्योगशाला आदि।

४. भूभाग: बाग, बगीचा, खेत, वाटिका, चरागाह, आदि।

५. वाहन: साईकल, स्कूटर, कार, बस, हेलीकोप्टर, हवाई जहाज, रेल, पानी के जहाज, हाथी घोड़े, ऊंट, रथ, तांगा आदि।

१७. धूम्रपान : तम्बाकू, गांजा, सुलफा, बीड़ी, सिगरेट, चिलम, हुक्का, सिगार, चन्डू आदि ।

१८ दुधारू पशु : गाय, भैंस, बकरी आदि ।

१९ सम्बन्ध : माता, पिता, पुत्री, पुत्र, बहन, भाई, ताऊ, चाचा, मित्र, माना दादा, मामा, बहनोई गुरु, शिष्य, भतीजे, भानजे, नाती, कर्मचारी, स्वामी, दास आदि ।

इसके अतिरिक्त भी सम्पदाएं हैं मानव सभी प्रकार की पाने की उत्कण्ठा रखता है । पर क्या सब प्राप्त हो सकती हैं ? और इनमें से कितनी सम्पदाएं ऐसी हैं जिनकी प्राप्ति अति आवश्यक है । सम्पदाओं का वर्गीकरण तीन भागों में किया जा सकता है ।

(१) अति आवश्यक (२) सुख प्रद (२) मान प्रद

अति आवश्यक की व्याख्या— अन्न, शाक, फल, दूध या दुधारू पशु, खेत, घर, चारपाई, पहनने बिछाने ओढ़ने को साधारण वस्त्र, बैल खेती के उपयोगी सामान बैल गाड़ी, बर्तन आदि ।

सुखप्रद की व्याख्या पक्के भवन, कुर्सी मेज, कीमती वस्त्र, साइकिल, स्कूटर फल, मेवे मिष्टान, रेडियो, वाटिका, बगीचा, घोड़ा, ऊंट घड़ी पैन आदि अति आवश्यक के अतिरिक्त ।

मान प्रद— रत्न, आभूषण, जरी क वस्त्र, महल, कोठी, बाग टेलीविजन, बिस्कुट, मेवे, अन्डे, शराब, बीयर, सोडा, सीगार, आदि । धूम्रपात, दास, दासियां आदि एवं सुखप्रद व अति आवश्यक वस्तुएं ।

देखना यह है कि अति आवश्यक वस्तुएं जिनसे साधा–

रण व्यक्ति अपना निर्वाह करता है व अन्न, फल, दूध, मेवे, वस्त्र आदि का उत्पादन या निर्माण करता है की आवश्यकता गुफानर व मानवनर दोनों ही अवस्थाओं में आवश्यक बनी हुई है। उनके बिना न कोई गुफानर जीवन बिता सकता है। न मानवनर ही। ऐसी दशा में मानवनर वस्तुओं के उपभोग करने वाले को तो केवल अपने गर्व का प्रदर्शन मात्र करने का ही अवसर मिल सकता है। किन्तु उसे इन वस्तुओं का संग्रह करने एवं रखाव करने उनकी सुरक्षा के लिए कितने यत्न करने पड़ते हैं। और दूसरे लोगों के पास अपने से उत्तम वस्त्र, आभूषण रत्न, कार, कोठी इत्यादि देखने पर उनसे भी उत्तम पाने, अधिक पाने का लोभ बना रहता है। और जो सामग्री है उसके बिगड़ने, टूटने, गुम हो जाने का भी भारी दुःख होता है। बहुमूल्य सामान जेवर, नकदी, ट्रान्जीस्टर, कार, स्कूटर की चोरियां भी बहुत होती हैं, डाके भी उन्हीं के घर पड़ते हैं। दास दासी के न होने या ठीक से काम न करने पर कठिनाइयाँ होती हैं। उन्हे आवश्यक खाना व पेय उत्तम प्रकार दास दासियों की उपस्थिति में भी प्राप्त हो, ऐसा आवश्यक नहीं।

प्राणि मात्र सुख चाहता है। मानव तो ऐसा सुख चाहता है, जिसमें दुःख का लेश मात्र भी अंश न हो। जितनी सम्पदाएं का वर्णन किया गया है या किया जा सकता है, उसमें सुख देने वाली सम्पदाएं तो वही हैं, जो अति आवश्यक में वर्णन की गई हैं। सम्पदाएं सुख की कारण नहीं, इन सुखों के साथ दुःख भी लगे ही रहते हैं। किन्तु अति आवश्यक में, सुख अधिक दुःख न्यून है। यदि अन्न, वस्त्र, घर न हो तो भूख, सर्दी, गर्मी,

से बचना ही कठिन हो जाता है। इसलिए इनके प्राप्त करने के साधन अति आवश्यक हैं। गाय, बैल, घर, खेत होने मात्र से प्रायः सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। घर बैठने को, खेत अन्न पदा करने को गाय दूध-दही व बैल लगातार देती रहती है. अन्न थोड़ा होने पर भी दूध दही के प्रचुर होने से अच्छा भोजन मिल जाता है, खेत को पुष्ट करने हेतु बैल और गाय का गोबर गोमुत्र पर्याप्त है। गायों की सख्या अधिक होने से तो दूध, दही अतिरिक्त खेत का अन्न बेचकर वस्त्र व अन्य आवश्यक वस्तुएं प्राप्त की जा सकती है। और खेती करने वाले सभी करते ही हैं रत्न भविष्य मे रत्न नहीं देता है। न ही जेवर जेवर देता है, न उनमे दूध मिलता है, न अन्न, न ही वे सवारी के या भार ढोने के कार्य मे प्रयुक्त हो पाते है।

इन मान प्रद वस्तुओं में तो जीवन को सुखी बनाने का एक भी गुण नही। बहुदा देखा जाता है ठगों व चोरों द्वारा इनका हरन कर लिया जाता है। जिससे अत्यन्त दु.ख होता है कभी कभी तो डाकुओं द्वारा प्राण सकट में डाल दिए जाते हैं। या जीवन को समाप्त ही कर दिया जाता है।

हमारा मूल विषय सभी सम्पदाओं से गाय की तुलना मुख्य है। मानव को दिन में दो तीन बार भोजन और इतनी ही बार पेय पदार्थ दूध चाय चाहिए। दूध गाय बिना सुलभ नही। गाय बनाने की कोई फैक्ट्री नही गाय तो गाय से ही उत्पन्न होती है व गाय से बैल रूपी टैक्टर और यूरिया आदि से अधिक उपयोगी गोबर, गो मूत्र की खाद नित्य पैदा होती रहती है। दूध दही नित्य चाहिए, गाय नित्य प्रति देती है। बदले में घास

चारा भी मानव के उपयोगी नहीं होती है। दो तीन साल बच्चा
(बछड़ा) बनाते, वहाँ या ग्रामों से दूर पानी के कुओं के पास बेर
है और बाद तो वह एक वर्ष में एक बार किसी खोटे है तब में
जाकर अपनी आवश्यकता की वस्तुएं एक साथ ले आ सकता है।
किन्तु किसी ट्रैक्टर रखने वाले के लिए ऐसा सम्भव नहीं। ट्रैक्
टर खराब होने पर न तो वह गांव में ठीक हो सकता, है न
नजदीक के ग्राम में और खराब ट्रैक्टर को नगर तक ले जाने के
लिए भी आराम से जाने जैसी व्यवस्था करनी पड़ती है। उसका
पत्थर हो जाना भी ट्रैक्टर के स्वामी के लिए सिर दर्द है।

सब सम्पदाओं में उत्तमोत्तम सम्पदा गाय है। धन की उत्त
मता में एक प्राचीन दोहा इस प्रकार है कि—

गोधन, गजधन, वाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोषधन सब धन धूरी समान॥

इसमें धन में सबसे पूर्व गाय को लिया, और सबसे अन्त में रत्न
को। पाठकों को सम्पदाओं में गाय की श्रेष्ठता का भान हु
होगा। भारत में दूध दही की नदियां, गाय ही के प्रताप
बहती थी। लेखक ने अपने बाल्यकाल में दो पैसे का सेर दू
वह भी सामने दुहा हुआ, क्रय किया है। एक एक गोपालक
पास दो सौ, तीन सौ गाएं देखी हैं। ऐसे गोपालकों की संख्या उ
समय बहुत थी।

१०

गाय में पाये जाने वाले सन्त स्वभाव

सन्त का महत्व अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक रहेगा। इस समय मानव मात्र में कलि युग के प्रभाव से अनेकानेक दोष आ चुके हैं जैसा कि सातवें प्रकरण में वर्णन किया गया है अपने दोष किसी को दृष्टिगोचर नहीं होते, पर दूसरे के दोष तो तिल समान होने पर भी मेरू सदृष दिखते हैं। घर-घर में कलह; गांव-गांव में विरोध, एक वर्ण को दूसरे वर्ण, एक जाति को दूसरी जाति के प्रति कटुपन, प्रान्त से दूसरे प्रान्त, मत से दूसरे मत, सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय, दल से दूसरे दल व एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र से, गुरु शिष्य में, पिता पुत्र में, स्वामी सेवक में, भाई भाई में, विवाद दृष्टिगोचर होते हैं। यह सब क्या है इसका विस्तार रोकने का निवारण करने का राष्ट्राध्यक्षों या राजनेताओं के पास कोई उपाय होता तो वे अवश्य करते। चोरी, लूट-पाट, मिलावट, हत्या आदि कुकर्मों के लिए कानून बनाने मात्र से काम चलता होता तो ऐसी व्यवस्था अतीत से चली आरही है। पर मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की, उसी चरितार्थ हो रही है।

सन् १९४७ से पूर्व हम परतंत्र थे, इसलिए सभी दुखों का दोष परतन्त्रता पर मढ़ के पीछा छुड़ा लेते थे। स्वतंत्र होने के पश्चात् भी प्रति वर्ष हम दुःखी हो रहे हैं, जो दुःख सन् १९४७ से सन् ५० में बढ़े, ५५ में और अधिक हुवे, ६०-६५-७० में सवाये बढ़ते ही गये। सन् ७३ में जितने अपराध व क्रूर कर्म हुवे, ७४ में उससे अधिक हुए व नए-नए प्रकार के हो रहे हैं। यही हाल चलता रहा तो सन् ७५ या ८० तक और भी खराब होंगे।

अतीत की बात लीजिए। जब राज्य होते थे तो राज्य में सचिव सम्य स्वभाव होते थे। राजा को उनकी राय या आज्ञानुसार आचरण करना पड़ता था। राजा दशरथ जो चक्रवर्ती राजा थे उनके मुख्य सचिव उनके राज गुरु मुनि वशिष्ठ थे और वे ही राज्य में रहे। हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी डा॰ राजेन्द्र प्रसाद, पं॰ मदनमोहन मालवीय, डा॰ सर्व पल्ली राधा कृष्णन आदि अनेक सम्य स्वभाव के थे। जिन्होंने हमारे व भावी पीढ़ी के हितार्थ अनन्त कष्ट सहकर, देश को स्वतन्त्र कराया। उनकी सम्यता अधिक समय न रहने से या उनके आदेशों का पालन न करने से हम सुखी नहीं हो पाये। सुख केवल स्वतंत्रता में नहीं, सुसभ्यता में है। हम स्वतंत्र हो गए, हमने किसी की पराधीनता भी स्वीकार नहीं की स्वतन्त्रता का अभिमान है, पर आधीनता तो बरदान है। श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि —

कलि वचन आधीनता, पर निज मान समान।
इतने पर हरि ना मिले तो, तुलसीदास प्रमान॥

व आधीनता से शत्रु को भी मित्र बनाते हैं, शत्रु गुण के आदर हम जितना शत्रु जिसका है तो हम आधीनता के गुण को पसन्द करें

या स्वतंत्रता के दुःख को, यह भली प्रकार सोचने का विषय है।

हम बहुत अच्छी तरह विचार करें तो देखते हैं कि स्वतंत्रता से विवेकवान व्यक्ति भी गलत रास्ते पर चला जाता है, साधारण की तो बात ही क्या करें। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी के आधीन होना चाहिए जिससे, वह उच्छृंख न बन जाय।

शिष्य गुरु की, पुत्र पिता की, पत्नि पति की, सेवक स्वामी की, छोटे बड़े की, अज्ञान ज्ञानवान की, रोगी वैद्य की, प्रजा राजा की, राजा चक्रवर्ती राजा की और चक्रवर्ती धर्माचार्य की और धर्माचार्य वेद शास्त्रों की आधीनता स्वीकार करें तो कष्ट नाम की चीज नहीं रहती। शिष्य अध्यापकों के पीछे हाकी लिए फिरते है, पिता का गला पुत्र पकड़ते हैं, पत्नि पति को धमकाती है या तलाक देती है, सेवक स्वामी को परेशान करता है, अज्ञानी ज्ञानियों में दोष निकालता है। रोगी वैद्य को धमकाते हैं, प्रजा राजा के जनाजे निकालती है या हटा देती है और राजा व चक्रवर्ती की प्रथा ही मिट गई। धर्माचार्य की सत्ताधारी परवाह नहीं करते, धर्माचार्य भी कुछेक वेद शास्त्रों का सत्कार जितना करना चाहिए नहीं करते। शास्त्रानुसार शिक्षा पर सत्ताधीश आचरण करने को तैयार नहीं। श्री गोस्वामी जी ने अपना मत इस पर प्रकट किया है—

> सचिव बैद गुर तीनो जो प्रिय बोलही भय आस,
> राज धर्म तन तीन कर, होइही वेग विनाश।

भावार्थ यह कि मंत्री, वैद्य, गुरु, राजा, रोगी या शिष्य के भय या आशा के कारण ठकुर सोहाती कहे तो सचिव के बचनो से राज्य का, वैद्य के बचनों से रोगी का व गुरु के बचनों से शिष्य का

होता है। आज कल सचिव ऐसे रखे जाते हैं, जो अध्यक्ष के
नुसार हां में हां करदे। इससे राज्य का नाश संभावित है। यदि
रोगी को उसके कहे अनुसार मीठी और सुस्वाद दवाएं दें, व
ज में खराब भोजन को बन्द करने को भी न कहे तो रोगी का
कैसे हो।

इसलिए हमें स्वतन्त्रता के साथ सुतंत्रता की आवश्यकता थी।
है और भविष्य में भी रहेगी, राजतन्त्र उत्तम हो, राज्य करने
उत्तम आचरण से युक्त हों, उसमें यथा संभव कोई दोष न हों,
ता को वे आचरणवान बना सकते हैं। महात्मा गांधी ने हाथ से
सूत के वस्त्र का उपयोग बताया था व अनेकों से कराते रहे व
करते रहे। आज तो लाखों रुपए के एक एक कोट आदि वस्त्र
बात सुनने में आती है। सभी इसी होड़ में लगे हैं कि चाहे
किसी भी प्रकार से प्राप्त हो, कीमती वस्त्र बहुमूल्य कोठी, कार
हम अवश्य रखें। व्यापारी चोरबाजारी, मिलावट से, सरकारी
कारी रिश्वत से व बिना व्यवसाय वाले धनवानों से ठगकर, लूट
हत्या करके भी, कार, कोठियां बनाने में लगे हैं।

सुतंत्र तभी आ सकता है, जब इसके लाभ से हम पूर्णतया
चित हों, हमें सुतंत्र लाने के लिए अवसर भी है। छोटे-छोटे ग्रामों
चायतें, बड़ों में पालिकाएं व निगम हैं। इसके पश्चात विधान
ओं व धारा सभाओं के सदस्य बनाने हमारे अधिकार की
है, उनमें हम चाहें तो सन्त स्वभाव के व्यक्तियों को चुन कर
हो सकते है। स्वतन्त्रता प्राप्त करने हेतु तो न जाने कितने वर्ष
किया, कितने लोगों ने कष्ट सहे और कितनों ने प्राणों से हाथ
। सन्त न गेरुवस्त्र धारण करने वाला होता है, न बड़े बड़े बात

रखने वाला और न ही मून्ड मून्डाने से होते हैं। ये तो सन्तो की नकल करने का साधन मात्र है। अच्छे और माने हुए सन्त इन तीनों रूपो में पाये जाते हैं, तो नकल करने वाले भी बहुरूपिया की तरह वैसा ही कर लेते हैं। मून्ड मून्डाने के लिए तो कहा है कि—

मून्ड मून्डाये तीन गुण, मिटे टाट की खाज।
बाबा बाजे जगत का, मिले पेट भर नाज॥

केवल ५० पैसे देकर मून्ड मुन्डाई जा सकती है। कुछ दिन बाल न कटाये तो जटाधारी बन जाता है और वस्त्र रंगने के लिए तो ५-१० पैसे की गेरू ही पर्याप्त है। सन्त का स्वभाव माना अति कठिन है अतः सन्त स्वाभाव पढिए।

सन्त स्वयं कष्ट सह लेते हैं, दूसरों को कष्ट नहीं देते और सबका हित करते हैं। सन्त भोजन जीवनयापन के लिए करते है, स्वादके लिए नहीं। सन्त शीतोष्ण व लज्जा बचाने के लिए वस्त्र धारण करता है सुन्दरता दिखाने के लिए नही। सन्त कुटिया को पर्याप्त समझते है, महल नहीं चाहते। वे अपना बल, अपनी बुद्धि, परोपकार में लगाते हैं, अपने लाभार्थ नही। उन्हे मान प्रतिष्ठा की इच्छा नहीं या कम रहती है। वे धन व पद प्राप्ति की इच्छा नहीं रखते।

श्री गोस्वामी जी ने सन्तो के लिए अनेक बातें कही हैं। कुछ ये हैं—

सन्त असन्तन के असी करनी, जिमि चन्दन कुठार आचरनी।
काटई परसु मलय सुनभाई, निज गुन देई सुगन्ध बसाई॥

बदउँ संत समान चित, हित अनहित नहीं कोऊ।
अंजली गत शुभ सुमन जिमि, सम सुगन्ध करी दोऊ॥

सन्त सहहीं दुःख पर हित लागी, पर दुःख हेतु असन्त अभागी।

उपरोक्त गुण सन्तों के हैं, वे सभी एक साथ मिले, ऐसे सन्त बहुत कम संख्या में हैं। सारे देशवासी उनका दर्शन भी नहीं कर पाते। फिर भी अनेक सत ऐसे हैं, जिनमे ये गुण न्यूनाधिक हैं उनका दर्शन भी पातक को मिटाने वाला है। श्री गोस्वामी जी ने सन्तों के सतसंग की महिमा से कहा है—

मुद मंगल मय संत समाजू. जो जग जगम तीर्थ राजू।

जो गुण सन्तों के बताए गए हैं, गो माता में सभी पाए जाते हैं। गाय किसी प्राणी को कष्ट नहीं देती। पेट भरने के लिए घास फूस खाती है। स्वाद के लिए कुछ नहीं। वस्त्र की आवश्यकता नहीं। दिगम्बर रहती है, न ही मकान, कोठी या वाहन ही रखती है। ये बहुमुल्य दूध, गोबर आदि देती है। इन्हे सम्मान की किंचित आवश्यकता नहीं। अपने पुत्र सहित बुद्धि व बल से लोगों की सेवा करती है। मरणोपरान्त भी चर्म, मांस व अस्थियां देती है। ओ‌है जो निकालनेवाले को जीते जी भी दे देती है। दधीचि ने केवल अस्थिया दी और शिवि ने केवल माम दिया, जिन्हे महान सन्त माना जाता है। गो माता तो अस्थी, चर्म के अतिरिक्त बहुत कुछ देती है।

सन्त को चन्दन व असन्त को कुल्हाड़े की उपमा में चन्दन अपनी सोरभ कुल्हाडे को देती है। गाय कसाई को सर्वस्व देती है। इसलिए सन्त की उपमासे भी अधिक हुई। संत समान स्वभाव के बताकर रखने व तोड़ने वाले दोनों हाथों को सोरभ देते हैं। इसी

प्रकार गाय गो प्रेमी व गोघाती सबको एक जैसा दूध देती है, कोई भेद नहीं रखती। कम या अधिक मीठा भी नहीं। सन्त दूसरे के हितके लिए दुःख सहते हैं, सो गाय भी किस प्रकार घास से दूध तैयार करती है और बैल कितना कष्ट उठाकर खेत जोतते, गाड़ी खींचते व पानी निकालते हैं।

भोज पत्र के समान सन्त अपना चर्म देकर लोगो का भला करते हैं गाय उससे भी मजबूत और कोमलो, अधिक उपयोगी चर्म कभी से देती आ रही है।

इस प्रकार गाय के स्वभाव सन्त से मिलते हैं। इसका समाज मंगलमय है और ये प्रयागराज के समान है और अपने सन्त स्वभाव के कारण ही, हमारे युग या अवतार पुरुष इन्हे माता व पूजनीय मानते रहे। भगवान श्री कृष्ण ने तो गायों और वत्सों की सेवा सर्वाधिक की और गोपाल कहलाए। भगवान राम के श्री मुख से भक्ति प्रसंग मे लिखा है।

प्रथम भगती संतन कर संगा, दूसर रति मम कथा प्रसंगा।
साउवं सम मोहिमय जग देखा, मोते सत अधिक करि लेखा॥

पहली भक्ती संतों का संग है और सातवी है सारे ससार को भगवान के समान जानना। सन्तो को भगवान से ऊंचा जानना। सन्त तो स्वभाव से माने जाते हैं। गाय का स्वभाव सन्त जैसा है। इनका समाज है गाय, सांड, बच्छा-बच्छी, बैल, बूढ़ो व अपग आदि सभी गौ वंश। इनको भगवान से उच्च जानकर इनकी सेवा करे तो भगवान की आज्ञा पालन होता है—'आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा' यह श्री भरत जी कहते हैं—जो श्री राम के स्नेह पात्र हैं।

श्री गोस्वामी जी ने प्रयाग राज से सन्तों की उपमा में सन्त-समाज को चलता फिरता तीर्थराज बताया है।

सब ही सुलभ सब दिन सब देसा,
सेवत सादर समन कलेसा।

यह बात भी आज से ४०० वर्ष पूर्व थी, जब अच्छे सन्त सभी जगह सुलभ थे। ४०० वर्ष पूर्व के गृहस्थ भी अच्छे गृहस्थ थे। संत तो गृहस्थों में ही पाये जाते हैं। इसलिए अब अच्छे सन्त सब जगह सुलभ नहीं। प्रयागराज की तरह दूर है। पर ये गौ वत्स रूपी सन्त समाज सब ही सुलभ सब दिन सब देसा हैं और इनके सेवन से सारे कष्ट दूर हो रहे हैं। अमेरिका में ९ लाख की गाय और आठ लाख का सांड बिकता है वहां सांड को बैल नहीं बनाया जा सकता। वहां ट्रैक्टर का मूल्य २५००० से अधिक नहीं।

११

विश्व में सर्वाधिक हित-चिन्तक केवल माता

प्राणी मात्र को जिससे जन्म मिलता है, उसे माता कहते हैं। वनस्पति जगत की माता तो पृथ्वी है, वे माता से बिछुड़ते ही प्राण त्याग देते हैं और उनके प्राण रूपी बीज जमी माता की शरण में पहुँचते हैं। फिर शरीर धारण कर लेते हैं।

पक्षियों का वात्सल्य हम देखते हैं। वे प्रसव से पूर्व अच्छा घोंसला बनाते हैं। प्रसव के बाद अन्डे को पकने के लिए उपर बैठकर सेते हैं व उनकी रक्षा करते हैं। दुर्भाग्य से अन्डा नष्ट हो जाय तो अत्यन्त दुःखी होकर रुदन करते हैं। बच्चा निकलने पर उसकी रक्षा में तत्पर रहते हैं और उसके पालन के लिए दूर से मुंह में अन्न के कण या जल की बून्द लाकर देते हैं। जब तक वह अपने आप पर निर्भर न हो जाय तब तक यह क्रम चालू रहता है और इसके पश्चात गर्भाधान करती है व इसी क्रम से अपनी सारी आयु पुत्र के हित में लगा देती है।

पशु भी अपनी सन्तान होने से पूर्व बच्चे ध्यान का प्र करते हैं और स्तन पायी पशु उनकी रक्षा में भी प्रवृत्त रहते है प्रसव की पीड़ा को गौण मानकर शिशुओं के लिए दूध बन सके निमित्त जंगल में भोजन की तलाश करते हैं। यह आवश्यक न कि शीघ्र ही और भर पेट भोजन मिल जाय खाली पेट भी सोना पड़ जाता है ऐसी दशा में वे अपने अन्दर संचित खून मांस से -कुछ दूध उनको अवश्य पिलाती है।

अनेक पशु बच्चों की भली प्रकार रक्षा करते हैं, कि ही साधारण प्रकार से करते हैं, पर इन सब पशुओं में गा अपने वत्स की सर्वाधिक रक्षा करती है, कुतिया अधिक भूर होने पर अपने बच्चों में से १-२ को खा भी जाती है। भैंस बच्चे को छोड़कर दूर चली जाती है और पुनः उनको दूध पिला का भी उसे ध्यान तक नहीं आता। पर गाय अपने बच्चे की रक्षक है, हिंसक जन्तुओं से भी रक्षा कर लेती है या बच्चे की रक्ष मे प्राण गवा देती है। बच्चा घर पर रहे और स्वयं चरने जाए मे जाय, तो उसका ध्यान बच्चे में लगा ही रहता है।

यदि हम कहें तो अत्युक्ति नहीं कि वह खाना बच्चे को खुरा दूध के लिए ही खाती है। गाय कई दिन बिना कुछ खाए बच्चे को दूध पिलाती रहती है। इससे उसके शरीर का वजन घट जाता है। भैंस की तरह दूध से भरे थनों का भी दूध नहीं देने से इसकी मनोवृत्ति सर्वथा भिन्न है। श्री गोस्वामी जी महाराज ने गाय की महिमा अपने ग्रन्थरत्न रामचरित मानस में कही है जिसमें चक्रवर्ती सम्राट की रानी एवं भगवान राम की माताओं को गाय की उपमा दी है।

कौशल्या दि मातु सब धाई,
निरखि बच्छजनु धेनु लवाई ।।

सभी माताएं कैसे भाग कर आती है मानो थोडे दिन की ब्याई हुई गायें, अपने बच्चों को देखकर भागकर आती हों।

जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह, चरन वन पर बस गई।
दिन अन्त पुर रख श्रवत थन, हुंकार करि धावत भई ।।

उपरोक्त उपमा सत प्रतिशत सत्य है, जो नित्य देखी जा सकती है। ऐसी माता अपने पुत्र की माता है और पुत्रवत सबको दूध पिलाती है, इसलिए जिसने गाय का दूध एक बार भी पिया है वह उसकी माता है।

अब हम मानवी माता पर ध्यान दें जो सब प्राणियों मे उत्तम है। मानवी माता अपने पुत्र के लिए कितना कुछ करती है, वर्णन सारा नहीं किया जा सकता, पर कुछ मुख्य बाते सक्षिप्त मे इस प्रकार हैं।

जब महिला को गर्भाधान होता है, उसका जी मिचलाने लगता है। भोजन अच्छा नहीं लगता, गर्भस्थ शिशु ज्यों ज्यों बड़ा होता है पेट में भार होने से, गृह कार्य करने में अनेक कठिनाईयां होती हैं। उसे अपने शिशु के हित को दृष्टि में रखते हुए, अपनी पसन्द के कई एक खाद्य पदार्थों को त्यागना पड़ता है। नींद भी ठीक से नहीं आती, प्रसव के निकट के दिन अति दुःख दाई होते हैं। प्रसव तो मानो मृत्युतुल्य दुःखदाई होता है। अनेक महिलाएं प्रसव पीड़ा से बेहोश हो जाती हैं, कई प्राण भी त्याग देती हैं। प्रसव की पीड़ा का ध्यान छोड़कर नवजात शिशु को दूध पिलाने व उसका

उपचार, सफाई, ढ़क के रखना, रक्षा करना आदि का
सावधानी से करती है। जन्मते ही या ५-१० दिन के
रक्षा न की जाय तो उसे बिल्ली, कुत्ता उठाकर ले जाय
उसे काट खाता है। माता को गृहकार्य के अतिरिक्त
कार्य करना होता है जो बड़े ही परिश्रम का है, और
रस न केवल अपना शरीर पोषण के लिए बनाती है, अपि
के दूध के लिए भी बनाना पड़ता है अन्य पशुओं के बच्चे
दिन में उठने व चलने लायक हो जाते हैं किन्तु मानव का
तो एक वर्ष तक बैठने लायक बनता है। अन्य प्राणियों की
बच्चों के लिए न वस्त्र की आवश्यकता है न मल-मूत्र साफ
की। पर मानव का बच्चा तो नहीं संभालने पर सारा ही
मूत्र से लिपट जाता है और शरद ऋतु में गिला वस्त्र होने
बीमार हो जाता है। इसलिए अनेक कपड़े रखने होते हैं
गीला होते ही या मल-मूत्र करते ही उस वस्त्र को हटा कर दू
वस्त्र पलट दें। शिशु के मल-मूत्र करने का बड़ी आयु के आद
की तरह कोई निश्चित समय नहीं होता एक बार प्रातः
दो बार प्रातः और सांय। इसको दिन में ७-८ बार या १० बार
दूध पिलाना पड़ता है और प्रायः इतनी ही बार मल-मूत्र त्याग
करता है। ३—४ महीने में शिशु की भूख के लिए पर्याप्त दू
नहीं बन पाता, तब गाय या बकरी का दूध गर्म करके, ठंडा करके
बड़े यत्न से पिलाया जाता है। एक वर्ष तक शिशु बैठने व
घुटनों के बल चलने लगता है। यह और भी संकट कारी हो
जाता है। बच्चा यहाँ वहाँ जाकर किसी चीज को छेड़ता है,
कई वस्तुओं के गिरने से चोट लगने का भय बना रहता है।
घर में १-२ बगर साथ नहीं होता है वे साथ से न बच कर,

पर्स पानी या दूध के बर्तन में हाथ न डाल दे, इसका बहुत ध्यान रखना पड़ता है। यदि माता को कहीं जाना ही तो उसे गोद मे साथ ले जाना पड़ता है। घर में अकेली औरतें तो पानी लाते समय भी शिशु को गोद मे ले जाती हैं। एक बर्तन का भार सर पर और दूसरा गोद में किन्तु उन को अपना शिशु प्राणों से भी प्रिय है। इसलिए वह इस संकट को संकट नहीं मानती और प्रेम सहित उसकी सेवा सुश्रुषा करती ही रहती है। कभी नहलायो, कभी कपड़े पहनाम्रो, बाल संवारो आदि।

मानवी केवल शिशु की माता नहीं, वह धोबन होकर कपड़े धोती है, दासी बनकर नहलाती है। धाय बनकर दूध पिलाती है। भंगिन बनकर मल-मूत्र साफ करती है। शिशु की रखवाली करके अंग रक्षक, शिशु के रुदन करते ही जागकर पहरेदारी व खाना बनाकर खिलाने में रसोइये। बच्चे के साथ खेलने मे मित्र का, लोरी देने गायिका। उसे चलना, खड़ा होना, बैठना सिखाने में शिक्षिका। इसके लिए ऋण लेते समय जामिन व उसे उत्तम शिक्षा देने में सन्त का कार्य करती है। उस पर कृपा रखने व उसकी मंगल कामना करने में तो वह साक्षात भगवान ही है।

शिशु ज्यों बड़ा होता है, माता का उत्तर दायित्व बढ़ता ही चला जाता है। २—३ वर्ष का शिशु घर में नहीं टिकता। अपनी सम आयु के दूसरे शिशुओं के साथ खेलने चला जाता है। सारे अंग मिट्टी में कर लाता है, वस्त्रों को भी खराब कर लाता है। कभी चप्पल गवा देता है, तो कभी रुमाल, कभी किसी से लड़-भिड़ आता है। ५ वर्ष का होते ही उसे पढ़ने भेजना, समय पर उसको तैयार करके शाला भेजना। पट्टी, बरता, बस्ता व पुस्तक ठीक करके देना,

फाड़ देने या गंवा देने पर तत्क्षण दूसरी की व्यवस्था करना आदि
चलता है।

प्रथम शिशु के कष्टों से तो छुटकारा मिला ही नहीं जब तक वह
५ वर्ष का हो कई माताएं दो और शिशुओं को जन्म दे देती हैं जिन्हें
भी सभी सुविधाएं पहुँचानी होती हैं। ज्योंहि बच्चा १८ या बच्ची १'
वर्ष की हुई कि उनकी शादी की चिन्ता लगी। घर वालों से नित्य प्र
शीघ्र शादी का अनुरोध करना। सखी सहेलियों को कहना
अपने पुत्र पुत्री की शादी में अन्य निकट सम्बन्धियों का सहयोग ले
के निमित, दूसरों के लड़के लड़कियों की शादी सम्बन्ध कराने व
चिन्ता में निमग्न रहना। आगन्तुकों की सेवा करना, दहेज
करना। बच्चों की देखभाल करना, किसी के बीमार होने पर
सारी रात उसके पास जागते रहना। प्रायः औरतों के ५ या ७
सन्तान होती है' ऊपर मे सख्या १५ तक भी चली जाती है। इस
बच्चा किस प्रकार निर्वाह किया जा सकता है यह तो वह माता
ही जानती है, लिखने वाले को तो नेति नेति कहना ही ठीक है।

बालक बालिकाओं की शादी कोई गुड्डे-गुड्डी की शादी नहीं
इसमें भारी व्यय करना पड़ता है। अनेक लोगों को इसके लिए
ऋण लेना पड़ता है और ऋण लेने से पूर्व अपने पास जो भी जेवर
उसे गहने देना होता है। जिससे ऋण कम लेना पड़े या लेने में
कठिनाई कम हो। ऋण दाता के उपकार भी माने जाते हैं
और उसे प्रसन्न रखने का भी प्रयास किया जाता है, ब्याज भी देना
पड़ता है व दुख और आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती है। क्योंकि
के बाद दूसरे की शादी भी शीघ्र होनी है। इसलिए देर व दर

या अपौष्टिक भोजन खाकर, मोटे या फटे कपड़े पहनकर, टूटी चारपाई व टूटे घर में रहकर, ऋण चुकाना करने की चिन्ता में डूबे रहता होगा है। कदाचित ऋण समय पर न दिया जा सके तो घर या खेत बेचना पड़ जाता है या ऋण दाता द्वारा नीलाम कर दिया जाता है। यह संकट दूसरे शादी लायक पुत्र पुत्री की शादी के भी रुकावट डालना है और योग्य वर या वधु नहीं मिल पाते।

माता की सेवा का अन्त नहीं आता। अपनी सन्तान के होने वाली सन्तान का भी वह उसी प्रकार पालन पोषण व रक्षा का भार अपने पर समझती ही रहती है, चाहे पुत्रवधु अपने पुत्र की पूरी तरह परिचर्या कर रही हो। पुत्री की शादी के पश्चात् दामाद की वह पुत्र से भी अधिक परवरिश करती है और बाद में पुत्री की सन्तान का पोते-पोतियों से अधिक ध्यान रखती है। यह केवल अपने पुत्र पुत्रियों के प्रेम का ही एक भाग है।

इसलिए यह तथ्य सभी सादर स्वीकार करते हैं कि माता के समान संसार मे कोई हितैषी नहीं। जब कभी कोई विपत्ति मे फस जाता है या बहुत बीमार हो या भारी चोट लग जाती है तो बार-बार वह मां का नाम लेकर पुकारता है। चाहें मां पास में हो या स्वर्ग सिधारी हो। विपत्ति में जो सहायता मां करती है, न पिता करता है न पत्नि-पति, पुत्र, मित्र या अन्य सम्बन्धी। इसलिए माता सर्वोपरि है।

देने का कार्य होता है। तुलसीमाता वनस्पति जगत में सर्वाधिक गुण-कारी औषध है। रोग हटाने या रोग-नाश में उपयोगी है। गीतामाता में हितकारी उपदेश हैं और गौमाता दूध, बैल, गोबर व गोमूत्र देती है। ये सभी माता के समान हितकारी हैं। अतः इन्हें माता कहना सर्वथा उपयुक्त है। हमें जन्मदात्री माता तो बचपन में जब तक साथ रहे लाभ पहुंचाती है, ज्योंही पृथक रहना प्रारम्भ कर देते हैं, लाभ नहीं पहुंचा पाती। यह भी सम्भव है कि हमारी आयु का आधा भाग समाप्त होने से पूर्व माता स्वयं चली जाय। कुछ माताएं तो प्रसव काल में ही मृत्यु का ग्रास हो जाती हैं। वे माता हमारा क्या उपकार कर सकती हैं। जन्मदात्री माता से हित करने वाली माता को गौण नहीं माना जा सकता।

पृथ्वी हमारे जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हित करती है। हम सब पृथ्वी पर रहते हैं, उस पर भवन बनाते हैं, उसी पर खेती करते हैं, पेड़ पौधे लगाते हैं, जलाशय बनाते हैं, कुंआ खोदकर भूगर्भ से पानी लेते हैं, खानों से लोहे से लेकर स्वर्ण तक सभी धातुएं, साधारण पत्थर से हीरे तक सभी जवाहरात, कोयला, तेल, अभ्रक आदि हजारों प्रकार के खनिज पृथ्वी से प्राप्त होते हैं। विश्व भर के सभी प्राणी पृथ्वी से लाभ अवश्य उठाते हैं चाहे वे स्थल चर हों, जलचर हो या नभचर। स्थल बिना जल के नहीं रह सकता। श्री काक भुशुण्डजी ने गरुड़ जी से कहा है :–

जिमिथल बिनु जल रहि न सकाई,
कोटि भांति कोई करै उपाई।

इस प्रकार जलचर का मुख्य आश्रय पृथ्वी है। नभचर चाहे दिन में २—४ घण्टे उड़ते रहें, पृथ्वी से उनका सम्बन्ध विच्छेद हो

जाय किन्तु अन्ततोगत्वा वे विश्राम तो पेड़ पर करते हैं। पेड़ को पृथ्वी का आश्रय है, इसलिए चराचर जीव पृथ्वी पर जन्म से मृत्यु पर्यन्त बसते हैं। ऐसा कहे कि जब तक प्राणी को मोक्ष नहीं हो जाय, बारम्बार जन्म लेता है, तो पृथ्वी माता की गोद मे ही रहता है। इसलिए पृथ्वी हम पर बहुत उपकार करती है। वह मिट्टी की है, पर हमारा कार्य क्या मिट्टी बिना चल सकता है?

गगा माता के लाभ भी बहुत हैं। अधिक लाभ तो निकटवर्ती लोग या गगा के समीप जाने वाले उठाते हैं। गगा का क्षेत्र भारतवासियों तक ही सीमित है। जो गगा से दूर रहते हैं उन्हें लाभ से वंचित रहना पड़ता है। शास्त्रों की मान्यता है कि गगा के "दर्श पर्श अरू मज्जन पान" यानि दर्शन, स्पर्श, स्नान या जल पीने से पाप नाश हो जाते हैं। यह सब पुरुषार्थ करने पर ही सम्भव है। भारतवासी तो मृतक की अस्थियां गगा में प्रवाह करके उनके पापों के नाश का विश्वास रखते हैं।

तुलसी माता का महत्व धर्मशास्त्रों में बहुत बताया गया है। इस पर श्रद्धा रखने या नित्य प्रति तुलसी पत्र का सेवन करने से लाभ प्राप्त होता है। इसे प्रायः लोग अपने घर में लगाते हैं। इसके पत्र में स्वर्ण व पारा भस्म जैसे गुण हैं। रोगों का नाश करने की शक्ति है। कहते हैं तुलसी के निकट बिजली नहीं गिरती। आजकल बड़े बड़े भवनों पर अर्थ (earth) लगाया जाता है ताकि बज्रपात से भवन या उसके निवासियों को हानि न हो, पर तुलसी यह कार्य करती है।

गीता माता में सभी धर्मशास्त्रों का सार भरा हुआ है। जिसे

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने श्रीमुख से, अपने अनन्य भक्त श्री अर्जुन को विषाद के समय सुनाकर, उसका विषाद मिटा दिया। उन्हें चक्रवर्ती राजा बनने का सुअवसर प्रदान किया। विश्व के कल्याणार्थ मानव को कर्म बोध और कर्तव्यों के लिए जागृत किया। विश्व भर में इस ग्रन्थरत्न का अत्यन्त आदर है। सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। सभी राष्ट्रों के सभ्य एवं विद्वान लोग इसके मार्मिक वचनों पर मुग्ध हैं। सारे संसार में इसके समान का कोई ग्रन्थ नहीं, जो केवल आधा घण्टे में उच्चारण किया जा सकता है। इस पर व्याख्या में जितना समय लग जाय, यह तो व्याख्या करने वाले की विद्वता के आधीन है।

गोमाता– यह सभी देशों में विद्यमान है। इसका आदर जितना भारत में है, उससे अधिक सभी राष्ट्रों में है। सब इसका दूध पीकर अपने को धन्य समझते हैं। जिसे दूध प्राप्त नहीं होता, वह अपना भाग्य निर्भाग समझता है। गाय का आदर विद्वान जितना करते हैं, मध्यम श्रेणी के लोग व निरक्षर भी उतना ही या उससे अधिक करते हैं। सारे संसार को लाभ पृथ्वी माता व गोमाता पहुँचाती है, अन्य माताओं के लाभ की जानकारी सबको नहीं। इनमें कौन छोटी, बड़ी या कौन उत्तम व कौन अति उत्तम है, यह जानना है। क्योंकि यह दोनों माताएं मानव मात्र को जन्म लेते ही लाभ पहुँचाना प्रारम्भ कर देती हैं। मृत्यु तक पहुँचाती है। पिछले जन्मों को मानें तो उनसे लाभ लेते रहे हैं। पुनर्जन्म मानें तो भी भविष्य में वे लाभ उठाते रहेंगे। इन्होंने केवल हमारा ही उपकार नहीं किया, हमारे पूर्वजों पर भी उपकार करती रही हैं और वंशजों पर भी करती रहेंगी। दोनों माताओं

रावण कहता है:—

सुनहु सकल रजनीचर जूथा, हमरे बैरी बिबुध बरूथा।

भाव यह है कि सब राक्षस सुन लें कि उनके शत्रु देवता हैं।

तिन कर मरन एक विधि होई, कहउं बुझाई सुनहु सब कोई।
द्विज भोजन मख होम सराधा, सबके जाई करो तुम बाधा॥

क्षुधाहीन बलहीन सुर, सहजहिं मिलटहीं आय।
तब मारिहऊं कि छाडिहऊं, भली भांति अपनाय॥

उनके भूख मरने या निर्बल होने का एक ही उपाय है कि द्विजों को भोजन, यज्ञ, होम या श्राद्ध आदि न हों फिर वे भूख से निर्बल, मेरी शरण में आ जायेंगे। यह सुन कर रावण के सैनिक क्या करते हैं:—

जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं, नगर गाँव पुर आग लगावहिं।

वे उस गांव में आग लगा देते हैं, जहां गाय है या द्विज है।

भूमि को भी रूप में शरण आई देखकर प्रभु ने अवतार लिया। भाव यह है कि जब स्वयं धरती माता गुरु-मुनियों के रूप धारने या प्रभु की स्तुति करने में, गोरूप धारण करती है तो मानना होगा कि इन सबको गो अधिक प्रिय है।

दूसरा उदाहरण यह है कि किसी के पास कितना ही बड़ा अच्छी भूमि का खेत हो, जिसमें सदा ताजा का पानी लगता हो, खेत को जोतने में कितना ही उत्तम बीज या खाद डालकर, सभी व्यवस्था उत्तम की हो, पर १० दिन से पूर्व उससे कुछ भी निकले की आशा नहीं की जा सकती। कितने ही प्रकार के यत्न लो

६० दिनों से अधिक समय लगा देते हैं। आम आदि के फलों के पेड़ तो ४—५ साल फल देने में लगा सकते हैं। भूमि सब जगह की उपजाऊ भी नहीं होती, न ही सब जगह जल ही सुलभ है। भूमि कहीं तो राजस्थान के तरह बालू के टीलों वाली है तो कहीं कठोर पत्थर की है, कहीं पानी निकट होता, कहीं भूगर्भ का पानी अति गहरा होता है और कहीं वह भी खारा निकलता है।

लगे हुए पेड़ या खेती पर अनेक विपत्तियां आ सकती हैं। वे नष्ट भी हो सकते हैं। इस प्रकार भूमि से लाभ लेने वाले धैर्य रखना व प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

गाय को कभी का एकत्रित किया हुआ घास व थोड़ा पानी देकर, दिन में ३—४ बार दूध प्राप्त किया जा सकता है जो क्षुधा व पिपासा को शान्त करने में सक्षम है। यह जीवन रक्षा करता है, आयु, बल व बुद्धि बढ़ाता है। गाय के अनेक गुण पूर्व प्ररकरण में वर्णन किए जा चुके हैं। इस प्रकार गो माता शीघ्र फल दायिनि होने से भी धरणी माता से अग्रणीय है। इस प्रकार वास्तविक माता तो हमारी सर्व प्रथम गाय और इसके पश्चात पृथ्वी है। जन्मदात्री हमारी हित कारिणी है, इसलिए उसे माता मात्र ही कह देते हैं, अन्यथा जन्मदात्री तो जननी ही है। वह माता नहीं जो शिशु को जन्म देते ही या छोटी आयु में बिछु जाय, मर जाय या अपना दूध प्रारम्भ से ही नहीं पिलाती, जो दूध पिलाती है, वे जननी ही है।

जो माताएं अपने पुत्र को स्वयं दूध नहीं पिलाती, उनकी परिचर्या नौकरों से कराती है, पुत्र के हित की बात नहीं सोचती,

ये माता नहीं है। श्री भरत जी के श्रीमुख के वचन माता कैकई के लिए देखिए—

> हंस बसु दशरथ जनक, राम लखन से भाई।
> जननी तूं जननी भई, विधि बस कछु न बसाई॥

यहां वे वंश को सराहते हैं, पिता व भाई की बढाई करते हैं पर जननी तूं जननी भई कहकर बताते है कि तूं तो जननी ही बो और जननी ही रह गई माता नहीं बन पाई। माता होती तो ऐसा न करती। वही भरत जी माता कौशल्या से क्या कहते हैं:—

> मात तात कहं देहि दिखाई- कह सिय राम लखन दोऊ भाई।
> कैकई कत जनमी जग मामां जो जनमी तो भई काहे न बांझा॥

पाठक ध्यान दें कि विमाता कौशल्या को माता कहते हैं और कैकई को जननी भी कहना पसन्द नहीं करते, सीधा नाम लेते हैं। ऐसी जननी का बांझ रहना अच्छा समझते हैं, जो माता नहीं बन सके। कौशल्या माता भरत जी को क्या कहती है:—

> सरल सुभाय माय हिय लाए, अति हित मनहु राम फिरि आए।
> माता भरतु गोद बैठारे, आंसू पोंछ मृदु बचन उचारे॥

भरत जी को कौशल्या जी द्वारा हृदय से लगाना, गोद में बैठाना, आंसू पोंछना और उसके साथ मृदु भाषण, यह है मातापन। जिस भरत के लिए कैकई ने राम को बनवास दिलाया, उसे राम के समान जानना अनेठा मातापन यहां प्रकट है। भगवान राम

इस प्रकरण की खोज यह है कि प्रति हित करने वाले को पिता कहा जाता है, व जन्म देने वाली को जननी कहा जाता है। माता शब्द स्त्रीलिंग या पुल्लिंग के भेद बिना भी उच्चारण किया जाता है। महान लोगों को या राजाओं को उनके अनुयायी या प्रजा द्वारा (आप हमारे माता पिता हो) कहते देखा जाता है. भगवान की स्तुति में भी पुरुष होते हुये भी कहा है—

त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

इसमें सर्व प्रथम भगवान को माता, बीच में पिता व अन्त में द्रव्य को माना है। भगवान पुरुष है, माता और पिता दोनो निर्लिंग शब्द है। मुलतान की तरफ नगर या ग्राम के हितैषी मुखिया को "माता साहब" के नाम से पुकारते थे। सभी जगह के असहाय लोग सहायक को माता पिता कहकर सम्बोधन करता है।

१३

गाय में माता होने योग्य सभी गुणों की प्रचुरता

गाय को मानव कबसे माता मानता आ रहा है। ठी
प्रकार कह सकना सम्भव नहीं, किन्तु शास्त्रों एवं पुराणों के
इतनी साक्षी अवश्य देते हैं कि उस समय भी गाय को मा
माना जाता था। सनातनधर्म के जिन ग्रन्थों के विषय में यह मा
जाता है कि यह ग्रन्थ ब्रह्माजी के बनाए हुए हैं, उन्होंने सृष्टी की
रचना की थी, तो मानना पड़ेगा कि मानव जब से है,
तभी से माता मानी जा रही है। द्वादश प्रकरण में माता का
पर कोष में इस विषय पर जो कुछ लिखा गया है, उससे इतना
विशेष हित करने वाले को माता कहना अनिवार्य है।

गाय ने मानव का कितना हित किया है, कुछ कि
प्रकरणों में आ चुका है। कुछ का वर्णन इसमें किया जा
किन्तु देखना यह है, कि गाय से अधिक हित किसने किया है।

"गाय की पुत्री" पुनः गाय होकर वही सारे लाभ पहुँचाती
है। और पुत्र बैल होकर खेत जोतने, गाड़ा खींचने, जमीन से
पानी निकलने आदि न जाने कितने कामों मे लिया जाता है।
इस गाय का हमारे पर इतना उपकार है, जितना ईश्वर का व
जन्मदात्री उत्तम स्वभावों से युक्त माता का है।

जन्मदात्री माता कि उपस्थिति में व उसके चाहने पर किसी
का संतानहीन रह जाना अति सम्भव है, किन्तु गाय की सेवा
करके राजा दीलीप ने अति प्रतापी सन्तान प्राप्त की थी।

मरने के पश्चात भवसागर या बैतरणी पार करने के
लिए गाय को जहाज रूप माना गया है। पर इस लोक में गाय
से लाभ अनगिनत है। लाभ पहुँचाने वाले को माता मानने पर
गाय का स्थान लाभ करने वालों मे सर्व प्रथम है। दुर्भाग्य है
हमारा देश १०० वर्ष परतन्त्र रहा, और हमारी मनोवृत्ति केवल
गाय को ही सर्वोत्तम पदार्थ स्वीकार करने की बन गई। जैसे
किसी प्रकार के मादक पदार्थ को नित्य प्रति सेवन करने वालों
की उस मादक वस्तु के लिए हो जाती है।

परिणाम यह हुआ है, कि गाय का दूध पवित्र से पवित्र
काम लेना, भोजन कम से कम देना, फल स्वरूप उनकी बछड़े
की पीढ़ी ठीक पोषण की कमी के कारण कम दूध वाली हो
गई। इस प्रकार इसका मुख्य घटना घटता गया। गाय बहुत कम
... में या धार्मिक विचार के लोगों द्वारा बिना कीमत के
... से, वे कसाइयों तक पहुँचने लगी। उन्हें इस प्रकार

२८. जननी के रुग्ण होने पर मंहगी चिकित्सा करानी पड़ती है।

२९. अन्तिम रोग में जननी के मल-मूत्र की सफाई भी करनी होती है।

३०. जननी की मृत्यु पर दाह-संस्कार के लिए भारी व्यय होता है।

३१. जननी की मृत्यु से १२-१३ दिन घर में शोक का वातावरण रहता है और सारे कार्य बन्द करने पड़ जाते हैं।

३२. जननी की मृत्युपरान्त द्वादशा का भोजन, ब्रह्म-भोज जाति के लोगों को भोजन व दानादि के लिए रुपयों के जेवर उतरते हैं, तो सर्राफों के घर बिक जाते हैं, अन्यथा ऋण लेकर भी ऐसा करना पड़ता है।

३३. जननी की मृत्यु के बाद छमाही का भोजन, वर्ष के दिन का भोजन, व श्राद्ध जीवनपर्यन्त किया जाता है।

३४. जननी का किसी से वैमनस्य होता है, वह क्षति सन्तान को उठानी पड़ती है।

३५. जननी की निन्दा सुनने पर क्षोभ होता है।

३६. जननी का लिया हुआ ऋण सन्तान को चुकाना पड़ता है।

३७. जननी संसार में प्रवृतिमार्ग बताती है, परमार्थ निवृति का उपदेश नहीं।

३८. जननी पुत्रवधु से अत्यधिक सेवा चाहती है।

३९. जननी पुत्र के ससुराल वालों से भी आदर व भेंट की इच्छुक रहती है।

४०. जननी भवसागर से पार करने में सक्षम नहीं।

माता की श्रेणी में आती है। किसी का पालन माता जन्मदात्री की उपस्थिति या अनुपस्थिति में दादी, नानी, ताई, चाची, मासी, मामी या भुवा, दादी द्वारा हुवा हो, तो वे माता ही हैं।

इन सभी प्रकार की लौकिक माताओं में नदियों का लाभ तटवर्ती लोगों को अधिक है। सद्ग्रन्थों का पढ़े-लिखों को अधिक है। तुलसी जी का लाभ उनके गुण जानने, श्रद्धा रखने या उपयोग करने से है। मानवी सभी प्रकार की माताओं का लाभ बाल्यकाल में है या रोग आदि से ग्रसित होने पर अथवा आर्थिक संकट के समय।

माता द्वारा गव्य पदार्थों के सेवन से गर्भ में बच्चे को पुष्टि होती है। जननी स्वयं गाय का दूध पीकर अपना ताजा दूध शिशु को देती है। २-३ महिने बाद तो गाय के स्तनों का दूध पिलाना शुरू किया जाता है। बड़ा होते ही दही, मलाई, मक्खन, पेड़े, रसगुल्ले आदि हजारों प्रकार के मिष्टान, गाय की कृपा से मिलती हैं। अन्न की रोटी तो बन जाती है पर घृत बिना उतनी उपयोगी नहीं, शाक भाजी भी घी बिना उत्तम नहीं बनती। गव्य पदार्थ मानव को बल, बुद्धि, आयु का दाता है। पांचों ज्ञान इन्द्रियों को गव्य पदार्थ के सेवन से जो लाभ है, वे अन्य पशु जन्य दूध से नहीं। मानव के मरने के समय शव रखने के स्थान को गोबर से लेपन व चिता के नीचे का स्थान गोबरयुक्त करना व उसके निमित्त गोदान करने आदि से कल्याणकारी है। अतः लौकिक माताओं में गोमाता सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित है।
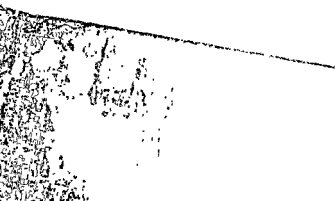
याने चोर, डाकू, हत्यारे, तस्कर एवं राष्ट्र विरोधी लोगों के दमन के लिए, पुलिस विभाग के अनेक लोग शक्ति की पूजा करते हैं। बगाल ने भारत देश को स्वतंत्र कराने मे भी अच्छा योग दिया। उनका सम्प्रदायिक कारणों से देश विभाजन हो गया। पाकिस्तान से मुक्त होने के लिए भारत की शरण लेते ही, यहा व वहा की शक्ति के सामने एक लाख खुखार सैनिकों को निपट कायर की तरह आत्म-समर्पण करना पड़ा। क्षत्रियो मे हार कर आने वाले को अनादर की दृष्टि से देखने की परमपावन प्रथा है। आत्म-समर्पण व बन्धन मे आने का कार्य तो यहां क्षत्रिय ललनाओं ने भी नहीं किया। पति की मृत्यु पर सती होने की प्रथा से भी आगे बढ कर हमारी महान माताओं ने पति के सम्मुख अग्नी प्रवेश स्वीकार कर लिया। क्षत्रियों को रणांगण में शत्रु से जूझ कर मरने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। अतः दुर्गा माता बल, पराक्रम देने में समर्थ हैं। आश्विन व चैत्र में ९ दिन दुर्गा पूजा के मुख्य हैं।

। गायत्री माता तेज पुञ्ज है। इनकी आराधना करने वाले विज्ञानी, प्रतिभाशाली व प्रतापी ऐश्वर्यवान एव यशस्वी होते हैं। प्रायः विद्वान, पण्डित लोग ही गायत्री सेवन करते हैं। ये सामान्य धन, विद्या, बुद्धि भी प्रदान करती हैं,पर इनकी मुख्य दाता नहीं, जो केवल धन, विद्या या बल में से किसी वस्तु का इच्छावान हो, वो प्रायः उन्ही तीनों देवियो से पर्याप्त मात्रा मे पाने का प्रयास करता है।

उपरोक्त प्रकार से चार अलौकिक माताओं के लाभ का वर्णन मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार किया है और इनसे गोमाता की तुलना करना चाहता हूं। मेरा इष्ट गोमाता है। अतः अपने इष्ट ... से क्षमा प्रार्थना है।

हो सभी जानते हैं कि दूध बलवर्धक है। बलिष्ट लोग सभी अधिक
दूध का उपयोग करके बने है। जिसमें जितना बल है, वह दूध या
घी से मिला हुआ है, भगवती दुर्गा गाय के गले में निवास करती
है। गाय की आराधना से उनकी व सभी देवी देवताओं की आरा-
धना हो जाती है एवं बल के अतिरिक्त धन व विद्या, बुद्धि भी प्राप्त
होती है।

हमारी चौथी अलौकिक मा है "गायत्री माता"। ये प्रताप, यश
एवं ऐश्वर्य की मुख्य प्रदाता है। इनकी आराधना विद्वान लोग
अधिक करते हैं। उन्हें न अधिक धन चाहिए, न अधिक बल। हमारे
उच्च श्रेणि के महात्माओं को देखिए, उनके न जेब है न घन। उनकी
श्रेष्ठता और प्रताप के सामने बड़े-बड़े धनी, विद्वान एवं बलवान योधा
झुकते हैं। उनका यश कितना है। उनका प्रताप भी कैसा है, कि
उनके श्री मुख से निकले बचन को लोग युग पुरुष भगवान राम व
कृष्ण, बुद्ध, ईसा, महावीर एवं नानक देव के वचनों के समान
पावन समझते हैं। गायत्री सेवन से, सभी देवियों के सेवन से जो
लाभ प्राप्त होते हैं। वे भी कुछ अंशों मे हो जाते हैं कुछ लाभ उनके
अतिरिक्त भी होते हैं।

गायत्री माता का विग्रह या चित्र मैंने अवश्य देखा है, इन्हें
वेद माता भी कहते हैं। इनकी आराधना श्रेष्ठ कार्य है। किन्तु इस
शुभ एवं पावन नाम का अर्थ या भाव से तो स्पष्ट लगता है, कि गाय
त्रिमाता (गाय ही तीनों माता) तीन माताएं हैं। लक्ष्मी, सरस्वती
व दुर्गा जी, इन तीनों के सेवन से जो लाभ प्राप्त होते हैं वे अकेली

या यज्ञ का सामान नही मिल सकता। प्राथमिकता हमे किसे
ो चाहिए, यह तो प्राथमिक शाला का बच्चा भी बता सकता है।
दि हम चाहते हैं कि यज्ञादि कर्म हों, देव पूजन अर्चना आराधन हो
, हमें अपने बिखरे हुए विचारों को केन्द्रित करना होगा। हमारे
न्दिरो में तो विकास करने के लिए कोई सम्प्रदाय सहायक नही,
ारे सनातनधर्मी भी एक साथ नही। किन्तु अपनी भावी सन्तती
ी सुख सुविधा के लिए गो माता को प्रतिष्ठित करने से प्रायः सभी
म्प्रदाय जाति, वर्ग या दल सहमत होने सभव ही नहीं सरल है।
ाय को अलौकिक माताओ से भी उत्तम मानने के लिए मैंने जो कुछ
लखा है, उसमें उन माताओं के आदर का ध्यान रखते हुए लिखा
। यदि कोई अप्रसगिक बात हो तो पाठक क्षमा करें। क्योंकि
ारा विद्या अध्ययन तो प्राथमिकशाला तक ही है, इसलिए अच्छा
ख सभव नहीं। जय अलौकिक माताओं की एव जय श्री गो
ाता की।

प्रातः उठते ही पालक को गोशाला (गोगृह) मे जाकर गाय
हाथ फेरना चाहिए। इसके पश्चात गाय के पास पड़े मल-मूत्र
इसको टोके नहीं इतनी दूर कर देना चाहिए। गीली मिट्टी
टाकर उसके स्थान पर सूखी मिट्टी डाल दे। गाय की आखो पर
तो लगाकर गीड या आसू को हटा दे, उसके घास को हाथ से
क किनारे कर दें। जो वस्तु खाने के योग्य न हो या कठोर घास
ो व नीचे की रेत हो, को हटाकर कुछ और खाने योग्य पर्याप्त
ास डालकर हाथो से अच्छी प्रकार उसकी परीक्षा कर लें कि
उसमें कोई अखाद्य वस्तु तो नही है।

इसके पश्चात गुवार, अन्न व खली जो चीजें खाने को देनी
हो, उसके आगे रखकर गाय के तन पर बुरो करदें या हाथो से
मिट्टी झाड़ दें। गोबर लगा हो तो हटादें, कोई जानवर चीचड
आदि लगे हो तो उतार कर दूर डाल दें। इसके पश्चात उसे थोडा
गुड़ २-३ बार प्रेम पूर्वक देकर उसके बच्चे को दूध पीने के लिए
छोड़ दें। बच्चे को कम से कम एक स्तन का दूध पूरा पीते रहने
दें। दोहने के साथ बच्चा दूध पीता रहे तो गाय दूध अधिक देती
है। बच्चे को हटाने से कम देती है। कभी कभी दूध बच्चे के लिए
चढ़ा जाती है। पर निर्दई पालक फिर बच्चे को छोड़ कर दूध
निकालते हैं। तीन स्तनों का पूरा दूध निकालने पर बच्चे को २-४
मिनट चारों स्थनों को चूसने दें और बाद में हटा लें।

गाय के पास साफ पानी, साफ बर्तन मे हमेशा रक्खें। बच्चे
को गाय से पृथक बाधे। उसके लिए भी घास, पानी व सफाई का
प्रबन्ध गाय के समान रक्खें। पालक जब भोजन के लिए प्रस्तुत
हो तो गाय को सभाले, जगह साफ करें, घास मे व गाय के शरीर

पर हाथ फेरे। घास पानी कम हो तो पूरा करके भोजन करें। इस के पास गोबर या गोमूत्र से गीली मिट्टी अधिक देर तक न रहने दें।

सायंकाल दूध निकालते समय प्रातः की सभी क्रियाएं करे और रात्रि को, सोने से पूर्व गाय को भली प्रकार संभाल कर चारा पानी, खाने की व्यवस्था करके हटें। यदि मच्छर दिन में, रात में गाय पर बैठते हों तो उन्हें हटाने हेतु ऐसा धुवां करें कि मच्छर भी हट जाय, गाय को कष्ट न हो। पालक अपनी दिनचर्या ऐसी बना ले एवं गृह के दूसरे सदस्य भी गाय से प्रेम करते रहें। बची हुई रोटी फल व शाक के छिलके शीघ्र ही गाय को दे दिए जांय। गाय के सामने उसके बच्चे को गुड़, रोटी, छिलके या सस्ते फल, ककड़ी, ककड़ी, केला आदि खिलावें। इससे वह अति प्रसन्न होकर, अधिक दूध देगी। प्रति वर्ष उसके दूध बढ़ेगा। ब्याने के समय तक दूध दिया करेगी। दुहते समय हिले डुलेगी नहीं। उसकी सन्तान पुष्ट रहेगी और अच्छे सांड से संयोग होता रहे तो यही गायें अधिक दूध देने वाली, बहुत शील स्वभाव की बन सकती हैं।

गाय को देखते ही सहलाना, कुछ न कुछ खाने को देना, उसके खाने वाले घास आदि को ठीक कर देना, यह गाय की उत्तम पूजा है। गर्मियों में गाय को कभी-कभी स्नान कराना व सर्दियों में सप्ताह में एक बार गर्म जल से अच्छी धूप के समय स्नान कराना व उसके शरीर को कपड़े से पूछा कर देना चाहिए। गाय के बैठने की जगह नरम बालू होनी चाहिए, जिसमें मिट्टी न हो, न पत्थर कंकड़

मींट पेशाब, पंख, मच्छे पड़ने की रोकथाम की जाय। जहां तक हो सके नित्य कुछ हरा घास अवश्य देना चाहिए। तूम्बा (खारा फल है) जो जगल मे बहुत सुलभ है, ये पर्याप्त मात्रा में एकसाथ लाकर रखे जा सकते हैं, ये शीघ्र खराब नहीं होते। नित्य दोनों समय ४-५ तूम्बों के छोटे-छोटे टुकड़े करके गाय को देने से गाय प्रसन्न होती है। उतना घास चारा बच जाता है एवं तूम्बों से दूध के गुण बढ़ जाते हैं। जहां जो फल सुलभ व सस्ता हो, गाय जिसे खा कर प्रसन्न हो अवश्य खिलाने चाहिए। यही गाय की आराधना है, यही पूजा, इसका यथेष्ट फल शीघ्र ही मिलता है।

गाय सुखी तो, सभी सुखी।
गाय दुःखी तो, सभी दुःखी ॥

१९

अनेकों धर्मों व सम्प्रदायों में गाय का महान आदर

सनातनधर्म के धर्मशास्त्र वेद, उपनिषद्, पुराण आदि में स्थान-स्थान पर गोमाता के पूजन व उसकी सेवा के आदेश हैं। इसके महान लाभ बताए गए हैं। गाय को थोड़ा सा भी कष्ट देना महा-पातक है। कष्ट पाती गाय को देखकर उसे कष्ट से नहीं निकालना भी पाप है। सनातन धर्म के अनुयायी प्रायः गो सेवा, गो पूजन तो करते हैं। किन्तु अज्ञान या लोभवश ऐसे भी कार्य करने लगे जिससे गाय का अहित है। पर गाय के प्रति भावना आदर की बनी हुई है।

बौद्ध धर्म तो अहिंसा पर टिका हुआ है। भगवान बुद्ध ने तो कहा है कि मैं तपस्वी हुआ तब पानी की बूंद पर भी मुझे बहुत दया आती थी। विषम परिस्थिति में पड़े हुए पानी के जीवों का नाश मेरे द्वारा न हो जाय। उन्होंने कितने ही दिन शुद्धि के लिए बछड़ों का गोबर खाया, इसीसे गाय के प्रति उनके आदर का पता चल

जाता है। बौद्ध काल के सिक्कों पर बैल की व शिवनन्दी की मूर्ती अंकित थी।

जैन धर्म भी पञ्च महाव्रत में अहिंसा को महाव्रत मानते है। प्राणी मात्र को हिंसा से बचाना इनका परम लक्ष्य है। मुसलमान काल में हिंसा का प्रारम्भ हुआ, तो जैन मुनि श्री हीर विजय सूरीजी के प्रयत्न से अकबर ने तीर्थ स्थानों पर पशुवध रोक दिया। एक फरमान निकाल कर जैन आबादी के क्षेत्र में पर्यूषण पर्व पर १२ दिन के लिए पशुवध रोक दिया। जैन अपने धन को गोधन में मानते थे, इनके नाम व्रज या गोकुल होते थे। १० हजार गाय का गोकुल कहलाता है। कई जैन ८ गोकुलधारी भी थे, इससे गोपालन के प्रति श्रद्धा प्रकट है।

मुस्लिम धर्म में गो पालन व उसका दूध घी उत्तम माना एवं गो वध को निकृष्ट लिखा गया है। इनके कुरान शरीफ में सूरेबकर यानि बयान गायों का अध्याय है। कुरान में पहला अध्याय सूरए फातिहा है, ये भी कितने महत्व की बात है, कि गाय का प्रसंग दूसरे ही अध्याय में ले लिया, बाद के लिए नहीं छोड़ा। अरब, टरकी, मिश्र आदि सब पहले मूर्ती पूजक थे एवं सुनहले बछड़े को अधिक पूजते थे। कुरान मे मूर्ती पूजा को हटा दिया है।

सूरए बकर मे गायों की हिफाजत का वर्णन है। कुरान में भी पृथ्वी को बैल के सिर पर माना है। गाय का जूठा पानी पवित्र माना है। आदम और हव्वा जब स्वर्ग से निकाले गए तो, उन्हें एक मुट्ठी गेहूं और एक जोड़ी बैल मिले। कुरान शरीफ में सूर ए हज मे में लिखा है, कि हरगिज नहीं पहुंचते खुदा के पास, पशुओ के खून और मांस, तुम्हारी इससे परहेजगारी पहुंचती है। मोहम्मद साहब

बिल्ली सो गई, जागने पर बिल्ली की नींद हराम न हो, इसलिए उन्होंने अचकन कैंची से काट दी। एक दिन मुहम्मद साहब के पास एक आदमी अपनी दूध देने वाली ऊंटनी की कुर्बानी की इजाजत लेने आया, तो उन्होंने कहा कि ऊंटनी के बदले माथे, दाढ़ी, मूछों को कटाकर चढ़ादो, यह तुम्हारी बड़ी कुर्बानी है। पशु को न मारो, हजरत ने अपनी स्त्री आयसा से कहा कि, गाय का दूध शरीर की शोभा और आरोग्यता बढ़ाने का प्रधान साधन है।

हजरत उस्मान हदीस साइरता में लिखते है कि गोश्त खाने से परहेज रक्खो। इसकी आदत शराब के समान है। इस प्रकार अनेक मौलवी मुल्लाओं ने, गो वध को घृणित माना है।

मुगल बादशाह हुमायूं के खास नौकर जौहर लिखित फारसी की पुस्तक का अनुवाद, मेजर चार्लस स्टूमर्ट ने १६४० में किया, जिसके पेज ११० पर लिखते है।

हुमायूं को ईरान जाते हुए, दिनभर खाना खाने का मौका नहीं मिला, शाम को उनने अपने सौतेले भाई कामरान व उसकी मां के पड़ाव से खाना मंगाया। उन्हें शंका हुई कि उसमें गौ मांस है। पूछने पर यह सत्य पाकर उन्होंने दुःखी होकर कहा, हाय रे कामरान तू स्वयं अपनी पवित्र मां को गौ मांस खिलाता है। क्या बकरी लेने की सामर्थ्य नहीं है। हमारे पिताजी की कब्र को भरने वालों के लिए भी गौ मांस निषेध है। हुमायूं ने भोजन न करके पानी पीकर ही रात काट दी।

सिख सम्प्रदाय गोपालक है। गुरु नानकदेव जी तो भगवान कृष्ण की तरह गायों में ही रहा करते थे। गो रक्षा के लिए सिक्खों का प्रयास जगजाहिर है। कूकों ने तो इसके लिए बलिदान किए हैं। इस प्रकार सिख के सभी धर्म गोपालन को महत्व देते हैं।

१६

मानव वास्तव में शाकाहारी है या मांसाहारी

अखिल विश्व की जनसंख्या ४ अरब से भी अधिक है। इनमें मांसाहार करने वालों की संख्या यदि ६० प्रतिशत या इससे भी अधिक कहें तो जंचती है। देखना यह है कि वास्तव में मानव का आहार निरामिष है, या सामिष। यदि मत जानना चाहें तो निश्चित है, कि सामिष भोजी लोगों के मत ज्यादा हैं। शाकाहारी तो भारत में ही कम हैं। अन्य देशों में तो और भी कम, इसलिए हमें अन्य प्रकार के परीक्षण से ही यह ज्ञात करना होगा, कि शाकाहारी है या मांसाहारी।

शाकाहार करने वाले प्राणियों की बनावट, स्वभाव मालूम करें। मांसाहार वालों की भी, फिर देखें कि मानव किससे मेल खाते स्वभाव का है।

हाथी, ऊंट, घोड़ा, भैंस, गधा, बकरी, भेड़, हरिण, बारह

ल्ली सो गई, जागने पर बिल्ली की नींद हराम न हो, इस
होंने अचकन कैंची से काट दी। एक दिन मुहम्मद साहब के प
क आदमी अपनी दूध देने वाली उटनी की कुर्बानी की इजाजत
या, तो उन्होंने कहा कि ऊंटनी के बदले माथे, दाढ़ी, मूछों
ाकर चढ़ादो, यह तुम्हारी बड़ी कुर्बानी है। पशु को न मार
रत ने अपनी स्त्री आयसा से कहा कि, गाय का दूध शरीर
ना और आरोग्यता बढ़ाने का प्रधान साधन है।

हजरत उस्मान हदीस साहरता में लिखते है कि गोश्त खाने
ज रक्खो। इसकी आदत शराब के समान है। इस प्रकार अने
वी मुल्लाओं ने, गो वध को घृणित माना है।

मुगल बादशाह हुमायूं के खास नौकर जोहर लिखित फारसी
ुस्तक का अनुवाद, मेजर चार्लस स्टूअर्ट ने ६४० मे किया,
के पेज ११० पर लिखते है।

हुमायूं को इरान जाते हुए, दिनभर खाना खाने का मौका
मिला, शाम को उसने अपने सोतेले भाई कामरान व उसकी मां
ाब से खाना मगाया। उन्हें शंका हुई कि उसमे गों मांस है।
पर यह सत्य पाकर उन्होंने दुःखी होकर कहा, हायरे कामरान
यं अपनी पवित्र मां को गो मांस खिलाता है। क्या बकरी
सामर्थ्य नही है। हमारे पिताजी की कब्र को झाड़ने वालों
भी गो मांस निषेध है। हुमायूं ने भोजन न करके शर्बत
ही रात काट दी।

सिक्ख सम्प्रदाय गोपालक है। गुरु नानकदेव जी तो भगवान
ी तरह गायों में ही रहा करते थे। गो रक्षा के लिए सिक्खों
स प्रशंसनीय है। कूकों ने तो इसके लिए बलिदान दिए हैं।
ार विश्व के सभी धर्म गोपालन को महत्व देते हैं।

१६

मानव वास्तव में शाकाहारी है या मांसाहारी

अखिल विश्व की जनसंख्या ४ अरब से भी अधिक है। इनमें मांसाहार करने वालों की संख्या यदि ६० प्रतिशत या इससे भी अधिक कहें तो जचती है। देखना यह है कि वास्तव में मानव का आहार निरामिष है, या आमिष। यदि मत जानना चाहें तो निश्चित है, कि आमिष भोजी लोगों के मत ज्यादा हैं। शाकाहारी तो भारत में ही कम हैं। अन्य देशों में तो और भी कम, इसलिए हमें अन्य प्रकार के परीक्षण से ही यह ज्ञात करना होगा, कि शाकाहारी है या मांसाहारी।'

शाकाहार करने वाले प्राणियों की बनावट, स्वभाव मालूम करें। मांसाहार वालों की भी, फिर देखें कि मानव किससे मेल खाते स्वभाव का है।

हाथी, ऊंट, घोड़ा, भैंस, गधा, बकरी, भेड़, हरिण, बारह

सिगा आदि निरामिष भोजी है।

आमिष भोजी मे सिंह, चीता, रीछ, भेड़िया आदि है—

१. निरामिष भोजी सभी पशुओं के दांत चपटे होते हैं और मा[illegible] के भी चपटे है, किन्तु आमिष भोजी के ये दांत नोकीले होते[illegible] मानव के दांत पीढ़ी दर पीढ़ी मास खाने पर भी चपटे ही पड़े [illegible]

२. निरामिष भोजी सभी प्राणी, पानी को होठों से चूसकर पीते हैं। मानव भी उन्ही की तरह पीता है। किन्तु आमिष भोजी सभी पानी को जीभ को लपलपा कर पीते है।

३. निरामिष भोजी प्राणियों के नवजात शिशु जन्मते ही, या कुछ देर में आंखें खोल देते हैं। यही बात मानव शिशु मे है। किन्तु आमिष आहार करने वालो के बच्चे कई दिन आंखें बन्द रखते है।

४ निरामिष भोजी जीवों के पैर या खुर चौड़े होते हैं। मा[illegible] का पैर भी उनसे मिलता है। आमिष भोजी के पैरों मे [illegible] नाखून होते।

५ निरामिष भोजी की आंते लम्बी व आमिषभोजी की छोटी हो[illegible] है। मानव की आत लम्बी है।

यदि कोई कहे कि कुत्ता बिल्ली दोनों प्रकार का भोजन करते [illegible] इसी प्रकार मानव दोनों आहार लेता है। यह इस कारण ठीक [illegible] कि ये दोनों प्राणी वास्तव में आमिष भोजी है। इनके सभी लक्षण आमिष भोजी से मिलते है। फिर भी [illegible] [illegible] खा लेते हैं। ये दोनों जीव रोटी, मिठाई आदि खाकर [illegible]

करते है कि अन्न मांस से उत्तम है । किन्तु और कोई निरामिष भोजी प्राणी अतिरिक्त मनुष्य के मांसाहार नही करता । इससे यह प्रमाणित है कि मासाहार गौन है ।

उपरोक्त बातों से मनुष्य निरामिष प्रमाणित होता है । फिर भी वह आमिष भोजन पीढ़ियों से करता आ रहा है । क्या उसका कोई लक्षण आमिष भोजी से मेल खाता है ? मेरी समझ मे कोई भी नहीं । मासाहारी सभी प्राणी अपने शिकार को अपने पंजों या मुख से मार देते हैं, और उसी समय ताजा व कच्चा ही खा जाते हैं । पर मानव मांस के लिए, उनकी सी कोई प्रक्रिया काम में नहीं लेता । मारने के लिए शस्त्र का प्रयोग, काटने छोटे टुकडे करने मे चाकू आदि उपकरणो का प्रयोग करता है । इसके पश्चात उसमें घृत, तेल, मसाले आदि डालकर पकाकर ही खा सकता है । यदि मानव आमिष भोजियों की तरह मार कर खाता तो एक बात उनसे मिलती जुलती बन जाती ।

इस प्रकार यह स्पष्ट प्रमाणित है कि, मानव एक शाकाहारी प्राणी है । परिस्थितियों के आधीन वह मांसाहारी बना, उसके अनुसार उसका स्वभाव बना, शान्ति के स्थान पर कलह, दया के स्थान क्रूरता, स्नेह के स्थान पर डाह, दान के स्थान पर लूट, देश भक्ती के स्थान पर राष्ट्र द्रोह आदि दुर्गुण खाद्य पदार्थों का प्रभाव ही तो है ।

अगले प्रकरण मे मानव मासभक्षी क्यों बना अवश्य देखें ।

गाय बचे तो, बचते सब ।
गाय मरे तो, मरते सब ।।

मानव मांस भक्षी क्यों बना औ
गो मांस तक भी पहुँच

प्रत्येक प्राणी को दिन में २-३ या कई बार भोजन की आव
यकता रहती है। प्रत्येक भोजन को सुविधा से प्राप्त करना चाहत
। चाहे वह भोजन कम पौष्टिक या उत्तम गुणों से युक्त न हो।
ख मिटाना अति आवश्यक है। कहावत प्रसिद्ध है, कि नींद न देखे
ी खाट, भूख न देखे जूठे भात। यह बात तो मानव के लिए कही
है, पशु तो इससे भी कम बुद्धि वाले हैं, ऐसा माना जाता है।

प्राय: देखा जाता है कि, शाकाहारी सभी जीव दयालु व परि-
प्रकृति के होते हैं। जैसे बैल, ऊंट, घोड़ा, गधा आदि जो सारे
कठोर परिश्रम करते है। यह नहीं कि किसी विशेष दिन सभी
तना ही परिश्रम करते रहते हैं। मानव भी शाकाहारी प्राणी
लिए दया एवं परिश्रम उसका जन्मजात स्वभाव है। किन्तु
उत्तम फल, मेवे शहद इत्यादि का उपयोग करने से वह

बुद्धिमान भी बना और उसने अपने बुद्धिबल से शाकाहारी पशुओं को अपने कार्यों में सहयोग के लिए प्रयुक्त किया। मानव ने संसार की कैसी रचना बना दी, जितने भवन, खेत, बाग, कुएं, तालाब, नहर, रेल, सड़क, पुल, मन्दिर, फरनीचर, वस्त्र, धातुओं के पात्र एवं अनेक प्रकार की वस्तुएं देखने में आती हैं, सभी मानव निर्मित हैं।

आमिष भोजी पशु क्रूर एवं प्रमादी स्वभाव के प्राणी होते हैं। ये मानव को सहयोग देना तो दूर रहा, खाने को दौड़ते हैं। बचाव न करे या न हो सके तो खा जाते हैं। पेट भर लेने के पश्चात तो ये प्रमाद में पड़े रहते हैं। क्योंकि प्रमाद मांसाहारी का सहज स्वभाव है। जब पुनः गहरी भूख लगती है, तो शिकार खोजते हैं। कुछ दिनों तक केवल मांसाहार करने से जैसे ये जीव प्रमादि होते हैं, मानव भी प्रमादी हो जाता है। क्योंकि मांस का यह स्वभाव है। मानव साथ में दूध, फल या अन्न लेता है। इसलिए न तो वह आमिष भोजी जितना प्रमादि होता है न शाकाहारी जितना दृढ़ परिश्रमी। वह तो दोनों के बीच का बन जाता है।

कृषि कर्म दृढ़ परिश्रमी लोगों के करने का व्यवसाय है। उसे शाकाहारी लोग, शाकाहारी जन्तुओं की सहायता से करते हैं। अनेक व्यवसाय ऐसे है, जिसमें अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं। ऐसा व्यवसाय प्रायः मांसाहारी लोग करते हैं। ये दिन के थोड़े घन्टे काम करते हैं, सप्ताह में १—२ अवकाश कर लेते हैं। काम के समय में पूरा काम निष्ठा से नहीं करते। इस कारण से अन्न की पैदावार भी पर्याप्त नहीं होती।

जैसे सभी आमिष भोजी क्रूर प्रकृति के होते हैं। वैसे ही मानव भी कुछ क्रूर तो अवश्य हो जाता है। मार कर खाने वाले

अधिक क्रूर, क्रय कर खाने वाले उनसे कम क्रूर और
फल आदि खाने वाले उनसे भी कम क्रूर और कम प्र

मांसाहार के प्रचलन का प्रारम्भ होने का निमि
यह रहा होगा, कि पालतू पशुओं की हिंसक पशुओं से
लिए मानव ने अपनी दयालुता का त्याग स्वीकार
औषध की तरह मांस खाना स्वीकार किया होगा। कि
क्रूर स्वभाव का बन कर हिंसक पशुओं को मारने में
अपने पालतू पशु की रक्षा करे। किन्तु कुछ अवधि
करने पर वह प्रमादि हो गया और खेती जैसे कष्ट सा
से अन्न उत्पादन करने से सरल जीवनयापन के लिए म
अपना लिया। कोई विपत्ती न आए तो खेती में अन्न
में प्राप्त होता है। वर्षा की कमी, अति वर्षा, पशुओं
टिड्डी आदि से रक्षा हो जाय तो ठीक है अन्यथा
चोपट हो सकता है। पहले तो जंगली पशु अधिक थे.
भी पेट भर लेते या पालतू पशु भेड़, बकरी, मुर्गी
लेते थे।

इस प्रकार मांस एक सरल व सस्ता भोजन मांसा
प्राप्त हो गया और उन्होंने खेती जैसे कष्टसाध्य व्यवसा
उदासीनता अपना ली। कभी-कभी हिंसक पशु का वध क
से इनकी वाह-वाह होने लगी और इनके बलवान हो
जम गई। ऐसे व्यक्ति ही गांव के विवाद निपटाने में मु
जाने लगे। कितने ही लोग इन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न
कि कभी किसी से विवाद हो जाय तो ये हमारा पक्ष लें
ऐसा ही। जब भी कोई विवाद निपटाने की बात आती

[रक्षा] करने वाले या खुशामद करने वालों का पक्ष लेने लगे। कुछ लोगों के सहयोग से ये बाद के ओगर बन बैठे। पहले की भूमि पर कोई खेती करता तो इनको निश्चित भेंट पूजा या सम्मान देकर ही कर सकता। कोई कहीं पर मोहल्ला बसाता तो इनकी आज्ञा बिना नहीं बसा पाता। ये आज्ञा कुछ न कुछ लेकर ही देते। इसी क्रम से एक-एक मोहल्ला के बीच नई-नई ग्राम हो गए। जो अधिक बलवान थे, उन्होंने मोहल्लों को अपने अधीनस्थ कर लिया स्वयं राजा बन गए। सबसे अधिक बलवान चक्रवर्ती बनता था। इतना होने पर भी वे धर्म कर्म से कुछ अवश्य बंधे हुए थे। इन लाभों को देखकर या जिनके ऐसे राज्य भोग की तृष्णा बढ़ी वे लोग भी मांसाहारी होते चले गए, और मांसाहार उनके लिए कोई उपेक्षित भोजन नहीं रहा।

जिन लोगों को यह आहार प्रिय नहीं लगा वे खेती, व्योपार, दस्तकारी में लगे रहे और शाकाहारी बने रहे। इस प्रकार वे दयालु प्रवृत्ति धारण किए रहे। जब तक मानव के हृदय में पूर्ण दया है, वह मांस भक्षण नहीं कर सकता। क्योंकि मांस किसी केवड़ी में नहीं फलता। यह सब जानते हैं कि जानवरों को मारकर ही मांस प्राप्त किया जा सकता है। जो व्यक्ति अपने तन पर एक चान्टा सहने को भी तत्पर नहीं, वह दूसरे के गले पर छुरी चलने पर भी द्रवित न हो, तो दया रही कहां। जो लोग पशुओं पर इतनी निर्दयता जीभ के स्वाद या बल बढ़ोतरी के लिए करते हैं। यदि इसका प्रयोग वे किसी मानव के साथ उसका धन छीनने, भूमि छीनने का करे तो उसके हृदय में दया नहीं आती। इसी प्रकार से गरीबों का शोषण अपने आपको बलवान कहाने वालों द्वारा किया गया। जिन्हें हम वैश्य कहते हैं, इन्होंने केवल बुद्धी से धन अर्जित किया, पर शाका-

हारी बने रहे, इस कारण दयालु भी। जिसका परिणाम यह हुआ कि इन्होंने प्राणियों, विशेषकर मानव के हितार्थ व अपने यश के लिए कहीं धर्मशाला, कहीं मन्दिर आदि बनाए तो कहीं दवाखाना, अनाथालय, भोजन के क्षेत्र, पानी की प्याऊ, आदि बनाने लगे। शादी, पुत्र जन्म उत्सव पर सभी प्रकार के दस्तकारों को बधाई के के रूप में कुछ देना, अच्छे भोजन आदि कराना, मृत्यु पर भी ब्रह्म भोज या दान देने में लगे रहे। यज्ञ, अनुष्ठान में अपने धन व समय का सदुपयोग करने लगे। ये सभी सद्कार्य शाकाहार या सात्विक आहार की देन है। जिनके पास धन प्रचुर नहीं, वे लोग व्यय साध्य-कार्य नहीं कर पाते। वे जो कार्य करते हैं, उसमें दूसरे का अनिष्ट न हो, इस भावना को बनाए रखते हैं।

जो व्यक्ति कभी से मांसाहार स्वीकार किए हुवे हैं वे भी हमारे मित्र ही हैं। कुछेक मदिरा आदि मादक द्रव्यों का भी सेवन करते हैं। जो वस्तु सात्विक नही है उससे मनोवृत्ति सात्विक नहीं हो सकती। जो लाभ सन्तरा, आम, अंगूर आदि फल या दाल रोटी खाने में है, वह चाट पकोड़े या डबल रोटी आदि में नहीं है। ये दोनों ही शाकाहारी भोजन है। तो मांसाहार व मदिरापान को उत्तम कैसे कहा जा सकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो लोग कभी से या जन्म से ही मांस भोजी है। ऐसे १०० व्यक्तियों को बकरी या मुर्गा मारकर मांस पकाने, खाने का कहें तो आधे से अधिक ऐसा करने को तैयार नहीं होंगे। कई अपने सामने मारते भी न देख सकेंगे, कई उसी दिन मांस खाना छोड़ भी सकते है, यदि उन्हें मांस निकालते दिखाया जाय तो।

इस प्रकरण मे यह प्रमाणित किया जा चुका है कि मानव शाकाहारी है। वह परिस्थितियों या सगत से मांसाहारी बन गया। जिनका जन्म मासाहार करने वालो के घर हुआ. उसे मास के दोष से परिचित कौन करावे। आज से ३०-४० वर्ष पूर्व न नहरें थी, न सारी भूमि जोती जाती थी। बन मे घास की बहुतायत थी। पालतू पशु बन के घास को खाकर वृद्धि को प्राप्त होते थे, बकरी तो पालतू होने से उसकी कुछ कीमत थी, पर हरिण, खरगोश, मुर्गी, बत्तकें आदि तो किसी की सपत्ति न थी। इस प्रकार ये भोजन निशुल्क प्राप्त होता था। लोग मांस व अन्डों को पौष्टिक भोजन मानते रहे, मुफ्त पुष्टिकर भोजन मिले तो कीमत देकर अपुष्टीकर भोजन कौन करे। मास से घृणा भी नहीं रही।

मासाहार करने वालों को ठीक से इसका परिचय दिया जाय कि, जिस मूंग की दाल को वे घास फूस, पेट भरने मात्र समझे बैठे है व अन्डे, मछली या मास को बलदायक भोजन समझे बैठे हैं तो उनकी यह भ्रान्ति टूट सकती है। अब से भी महंगा मास, वह भी हत्या से प्राप्त और दुष्पाच्य को खाने का लाभ क्या है। कभी मास मुफ्त मिल जाता था, चर्म के पैसे दक्षिणा के रूप में मिल जाते थे। अब जगल में हिरण कहां और बकरी भी तो महगी है। मास मछली सब महगे और बासी को सेवन करते जा रहे हैं। जो व्यक्ति मास खाए और यह चाहे, कि अमुक पशु का खाऊंगा व अमुक का नहीं खाऊंगा, यह चल नहीं सकता। चाहे वह कितना ही ध्यान रखले। मांस प्रायः कसाई के घर से आता है। छोटे टुकड़े को कोई ठीक से नहीं पहिचान सकता कि वह किस पशु का है। उसमें गाय, सूअर, गधा, ऊंट, भेड़, किसी का भी आ सकता है। अपितु ऐसा रहना चाहिए कि वही मास अधिक मिलावट में आवेगा जो सस्ता हो।

लोगों के विचारों में परिवर्तन करने हेतु नाव का आलेख
न, मन्डे के पदार्थों की तुलनायें प्रस्तुत है—

	केलोरी	प्रोटीन	चिकनाई
	३३४	२.४	१.२
	३५०	२४	१.४
	३५३	२२.३	१.७
र	३४६	२५.१	०.७
र	३५८	२२.६	१.४
	३७२	२२.५	५.२
भया	३२०	२४.६	०.७
याबीन	४३२	४३.२	१६.५
दाम	६५५	२८.८	५८.६
फू	५६६	२१.२	४६.६
गफली	५४६	३१.५	३६.८
वी बीज	३३३	२६.२	५.८
नीर	३४८	२४.१	२५.१
ी	६००	००.०	६८.१

मांस वर्ग

अन्डा	१७३	१३.१	१३.३
मछली	६१	२२.६	०.६
बकरी मांस	१७४	१८.५	१३.३
सूअर मांस	११४	१८.७	४.४

ज-लवण	कार्बोहाइड्रेट	केलसियम	फासफोरस	लोहा
३.६	५६.६	०.१४	०.२८	८.४
३.४	६०.३	०.२०	०.३७	९.८
३.६	५७.३	०.१४	०.८६	८.८
२.१	५९.७	०.१३	०.२५	२.२
२.३	६३ ५	०.३	०.३६	५.०
२.२	५८.९	०.७	०.३१	८.९
३.२	५५.७	०.७	०.४९	३.८
४.६	२२.९	०.२४	०.६९	११.५
२.९	१०.५	०.२३	०.४९	३.५
२.४	२२.३	०.५	०.४५	५.४
२.३	१९.३	०.५	०.३९	१.६
३.०	४४.१	०.१६	०.३७	१४.१
४.०	६.३	०.७६	०.५२	२.१
०.०	०.०	०.०	०.०	०.०
१.०	०.०	०.६	०.२२	२.१
०.८	०.०	०.२	०.१९	०.९
०.३	०.०	०.१५	०.१५	२.५
१.०	०.०	०.३	०.२	२.३

उपरोक्त तालिका अखण्ड ज्योति जुलाई १६७४ से साभार ली गई है। इस पत्रिका व इसीके साथ आने वाली युग निर्माण योजना के लेख अत्यन्त हृदयग्राही होते हैं।

गो मांस सबसे मन्दा है। क्योंकि गोपालक गायें प्रायः छोड़ देते हैं। कसाई को वेचते कम लोग हैं। बकरी के पैसे, बकरी पालक कसाई से पूरा लेना चाहता है। एक गाय में पांच बकरी या इससे भी अधिक मांस होता है। वह कसाई को सस्ती मिल जाती है, चर्म भी बकरी के चर्म से महंगी बिक जाती है। आंत, खुर, सींग व अस्थियां भी कुछ राशि दे जाती हैं। अतिरिक्त मांस के सभी वस्तुएं कितने ही दिन पड़ी रहें तो कुछ बिगड़ता नहीं, मांस टिकाऊ चीज नहीं है। इसलिए इसे कसाई शीघ्र बेचना चाहता है। इसलिए वह सस्ता भी देता है और मिलावट भी कर देता है। ऐसा भोजन करने वाले प्रायः खानसामा या नौकर रखते हैं, जो दाम तो अधिक प्राप्त करते हैं। भूल से या जानकारी से मांस सस्ते भाव का लाते हैं। इस प्रकार मांसाहारी का यह परहेज नहीं चल सकता व न चाहते हुवे भी गो मांस का सेवन हो जाता है। अब तो अन्न की उपज भी घट गई है, विदेशों से अन्न भी गो गोमांस व गो चर्म देकर प्राप्त किया जा रहा है। यह विनिमय भी घृणित है।

पटियाला महाराज के दाव पर एक हजार दुधारू सन् १६७३ में लोगों ने चढ़ा कर श्रद्धा प्रकट की थी—क्या उन्होंने सर्दी से ठिठुरती गाय पर बोरी भी डाली है, उन्हें व अन्य को जीती गाय पर दया करनी ही चाहिए।

२१

अन्य देशों में गाय के नाम क्या हैं और क्यों हैं ?

भारतवर्ष की आदि भाषा संस्कृत थी। हमारे वेद, शास्त्र, पुराण सभी संस्कृत में रचित हैं। संस्कृत में गोमाता को गो, गां, धी नाम से पुकारा जाता रहा। हिन्दी या नागरी का प्रचार होने पर या भारत के प्रदेशों में इसका नाम गाय, गैया, गो, गऊ, गाव आदि कहा जाने लगा। यदि हमारे ही देश मे गाय को कई नामों से पुकारा जाता हो, तो दूर देश जिनकी लिपी व भाषा हमसे नहीं मिलती। नाम का फरक होना साधारण सी बात है। अनेक देश गाय को किस किस नाम से उच्चारण करते है कल्याण के गो अंक से आभार लिया जाता है—

१	प्राचीन इंगलिश	CU	कू
२	प्राचीन फीजीयन	KU	कू

३	प्राचीन सेक्सन	CO
४	मध्य कालीन डच	KOE
५	डच	KOE
६	निम्न जर्मन	KO
७	प्राचीन उच्च जर्मन	CHUO
८	मध्य कालीन उच्च जर्मन	KUO
९	जर्मन	KUH
१०	आइसलेंडियन	KYR
११	स्वेडिश	KO
१२	डेनिश	KOE
१३	मूलटयूटेनिक	KOWZKOZ
१४	आर्यन	GWOUS
		GWOM
१६	इंगलिश	COW

हमारे देश की नागरी लिपि में सर्वप्रथम अ, आ
अं, अः तक स्वर दिए हैं। इसके पश्चात व्यंजन बनाए,
ग घ ङ का क वर्ग, च छ ज झ ञ का च वर्ग, ट ठ ड
वर्ग, आदि कहलाते हैं। इन प्रत्येक वर्ग का उच्चारण भी
करने में विभिन्न प्रकार से होता है। किसी भी एक व
अक्षरों का उच्चारण एक ही प्रकार से होता है।

'ग' अक्षर क वर्ग का मध्य अक्षर है। क वर्ग
लिया गया है, इसलिए सब वर्गों से श्रेष्ठ है। उगते सूर्य
लोग नमस्कार करते हैं, जल पुष्प चढ़ाते हैं, छिपते को

गो— पृथ्वी, इन्द्रिय, किरण, प्रकाश, बिजली, वज्र, हीरा स्वर्ग, चन्द्र, सूर्य, दिशा, वाणी, जल, माता, गया, गायत्री, नदी, स्वर्ण, वस्त्र, नौका, पंक, रोम।

अकेले गो शब्द के इतने अर्थ है जो अन्य वस्तुए के लिए
कही उपयोग होते है, पर गो माता के लिए तो बारम्बार विल

अब हमें यह देखना है कि अन्य देशों में कहीं गो क
नही कहते। कू, को, कोए, कुओ, गोज, गोम व काऊ आदि
से पुकारते हैं। जैसा की पहले लिखा जा चुका है 'क' वर्ग के
अक्षरों का उच्चारण एक विशेष प्रकार से होता है तो क ग
म विशेष भेद नहीं है। अनेक स्थानो पर क की जगह ग का
की जगह क का उच्चारण किया जाता है।

ऐसा शब्दों के मध्य व अन्त दोनो ओर पाया जाता है।

काक	काग	कौवा
शाक	साग	तरकारी
शोक	सोग	दुःख
श्रक	श्रग	सुगन्धित लेप:
बक	बग	बगुला
नरक	नरग	नर्कलोक
धिक	धिग	धिकारना
लोक	लोग	जनता
प्रकट	प्रगट	प्रत्यक्ष
भकत	भगत	सेवक
शकुन	शगुन	शुभ चिन्ह
वकत	वगत	समय

ऐसे अनेक शब्द हैं। 'को' भी पृथ्वी को कहते हैं और 'गो' भी पृथ्वी को। इस पर वहां के नाम ग के स्थान पर क होना ग सदृष्य ही समझना चाहिए और ग के साथ कोई भी मात्रा लगी हो तो उसका गाय में उपयोग होना भी यथार्थ समझना चाहिये। गऊ कहने में प्रथम अक्षर ग आवेगा पर गाय कहने से गा आवेगा। गैया कहने से गै व गो या गौ भी कहा जाता है। गो अक्षर को प्रथम उच्चारण करने से कौन कौन शब्द बनते हैं और वे कितने उत्तम है. इस पर ध्यान दीजिये।

ऋषियों के नाम : गौतम, गोमल, भक्त गोरख नाथ, गोकरण।

भगवान के नाम : गोविन्द, गोपाल, गौरीशंकर, गोपित, गोकर्णेश्वर, गोपी नाथ।

नदियां : गोमती, गोदावरी, गोमुखी पहाड़, गौरीशंकर, गोवर्धन।

जातियां : गोत्र, गोस्वामि, गोखले, गोत्रिया, गोदारा, गोयनका, गोड, गोयल, गोलछा, गोडसे, गोप, गोधी।

औषध : गोखरू, गोदन्ती, गोरोचन, गौरखमन्डी, गोजिव्हका, गोस्तनो गो कृष्णा।

अन्न : गोधूम (गेहूं), गोचनी, गोंजा।

गोत्रभिद (इन्द्र), गोत्रसुता (पार्वती) गोहित (बेलका पेड़) गोष्ठ (गायों का निवास) गोलोक (कृष्णधाम) गोप्रकान्ड (गोधा) गोचरी (उत्तम भिक्षा) गोकर (सूर्य) गो कन्या (कामधेनु) देश या नगरो के नाम : गोवा, गोरखपुर, गोलकुन्डा, (जहां हीरे की खान है) गोहाटी गोकुल, गोला गोकर्णनाथ, गोरी बाजार, गोरीपुर, गोरी नाथधाम,

गोशाला, गोतम धारा, गोतमपुरा रोड, गोविन्द गढ़, गोपाल
गोपीनाथपुर, गोपनाथ रोड़, गोसाइ गज, गोकलगंज, गोपा
आदि अनेक नगर हैं।

सबसे पूर्व गो आने वाले महत्वपूर्ण नाम वर्तमान काल
भी देखें, गोविन्द रानाडे, गोखले, गोलवालकर, गोपाल स्वरूप पाठ
सेठ गोविन्द दास जी।

अब हम अंग्रेजी में गो शब्द का कितना आदर है इस
ध्यान दें। मैं तो हिन्दी भी पूरी नहीं जानता तो अंग्रेजी के
अधिक कैसे लिख पाऊंगा। फिर भी प्रयत्न तो अवश्य कर र
हूं। गोल्ड (सोना), गोडाउन (गोदाम वस्तुसुरक्षा), गोगल
(चश्मा, आंख रक्षा), गोसपेल (क्राइस्ट के उपदेश), गोरिल
(तरुनिवासी फोज), गोवर्न (हकुमत करना), गोवर्नमेन्ट (सरकार
गोवरनर (राष्ट्राध्यक्ष), गोड (भगवान), गोडेस (देवी), गोल्डनचान
(सुनहरा अवसर), गो (जाना) गोलमेज कान्फ्रेंस।

गोडरेज की लोहे की अलमारी, फरनीचर व साबुन विख्या
है गोयटस की पिस्टनरिंग।

एक अंग्रेज वायसराय लार्ड लिनलिथगो कई वर्ष भारत मे
रहे, जो अनेक बार गोशालाओं में गए और अच्छी गाय सांड को
देखकर पुरस्कार व दान भी देते थे। इनके नाम के अन्त में गो
शब्द लगा है।

सोवियत रूस के गागारीन पर्वतारोही बुलगानीन राष्ट्रपति
हुए Moscow राजधानी है 'मो स' शब्द अधिकता का सूचक है

ेर को (काउ) गायो का ऊपर उन शब्दों का थोड़ा सा वर्णन किया
मा है. जिनके प्रथम गो आता है, बीच मे गो आने वाले या अन्त मे
ं या प्रथम, बीच व अन्त में गा आने वाले भी अनेक उत्ताम शब्द
इनमें से नाम कुछ ऐसे हैं जिनमें ग का उच्चारण एक शब्द में बार
र हो जैसे गगा, गंगोत्री, बाण गंगा, गगन, गिरग्राम, गांधीग्राम
डगाव, गांधीनगर, गनेश गज, गगाधरपुर, गंगा गज, गगाघाट,
ालहरी, गिलगित, गगाखेर, गगानी, गगापुर सिटी, गगानगर,
ारामपुर, गगटोक नेपाल की राजधानी, गोगियापाशा मशहूर जादू-
र. गागारीन रशिया का पर्वतारोही, बीकानेर के प्रतापी नरेश
ासिह, महात्मा गगाभारती, बालगंगाधर तिलक, गार्गी, गर्गाचार्य
र गद, गहगहे । अकेला गा आने वाले मुख्य नाम गाधी (विश्वामित्र
के पिता) गालब ऋषि, भारत की स्वतंत्रता के अगुआ महात्मा
धी, वर्तमान शासन की सर्वे सर्वा इन्दिरा गाधी ।

उपरोक्त प्रकार से गो गा आदि नाम में पूर्व मध्य या अन्त में
ाना अपनी विशेषता रखता है जैसे बंगाल पूर्तगाल के मध्य गा
ाता है। नागोर, टैगोर के मध्य गो आता है। दरभंगा पीली
गा, के अन्त में गा आता है। अगले प्रकरण में नामोचार का
र्थ व प्रभाव पढ़िए ।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी, अपने परिवार जनों की तुलना
गाय से करे तो प्रसन्न व कुत्ते से करने पर अति अप्रसन्न
होते हैं ।

पूर्व प्रकरण में गो के अनेक अर्थ होते बताये गए हैं। व्योम से पृथ्वी तक, किरण से चन्द्र-सूर्य तक, जल से नदी व गंगा तक, तारने में नौका रहने से स्वर्ग, ज्ञान कर्म इन्द्रिया सब आ चुके हैं। इन नामों में से यदि एक वस्तु का लोप हो जाय तो कार्य नहीं चल सकता। किसी एक अंश की कमी होने पर भी बहुत दुखदायी जीवन हो जाता है। जैसे ५ ज्ञान इन्द्रिया है जिन्हें "गो" कहा जाता है. केवल चक्षु इन्द्रिय के न होने से सूर्य जैसी तेज पुञ्ज वस्तु नहीं दिखाई देती। गढ्ढा या दीवार क्या दिखाई दे, एक गज दूर भोजन या जल बिना परिचय के पड़ा रहने पर भूख प्यास नहीं मिटाई जा सकती। उसके लिए ससार की वस्तुएं कितनी ही सुन्दर क्यों न हों, दिखाई नही देती, तो न होने के बराबर है। अन्य इन्द्रियों का भी ठीक होना आवश्यक है।

गाय के पुत्र को खेती आदि मे कार्य लेते हैं। उसे बहल या बलद कहते हैं। बहल का अर्थ है हल सहित जैसे ब मुताबिक, ब मुजिब, ब दस्तूर, ब कदर। क्योकि केवल हल तो काठ का एक यंत्र है। वह उपयोगी है तो बहल से है, इसलिए बहल है तो खेती है, खेती है तो अन्न है। अन्न है तो जीवन है, अन्यथा अन्न के लिए त्राहि त्राहि हो रही है। दूसरे ट्रैक्टर के हल हमारे लिए अनुपयोगी न भी कहे तो बैल के सदृश नही। बैल अन्न देकर फूस पर जीता व हल चलाता है। ट्रैक्टर के लिए फूस का उपयोग नही तेल की आवश्यकता है। इसका अभाव है। बहल ऐसा उत्तम नाम है कि इस नाम से पंजाब में मानव जाति प्रचलित है। भगवान भूत भगवान शकर का वाहन है, जिसे नन्दी भी कहते हैं। बहल की जोड़ी कांग्रेस का चुनाव चिन्ह भी रहा था।

बहल के निमित बलद उपयोग किया जाता है जिसका अर्थ है

बल देने वाला। बल के पश्चात द का उच्चारण करने से, द का अर्थ देने वाला होता है यथा जलद बादल को कहते हैं जो जल का देने वाला है। धनद कुबेर को कहते हैं यह धन देने वाला है। पयद स्तन को कहते है जो पय (दूध) का देने वाला है। वरद वर देने वाले को कहते हैं। इस प्रकार बलद शब्द बल का देने वाला हुआ। यूरोप के लोग बल को घोड़े का नाप करते हैं। विद्युत मोटर या डीजल इञ्जिन मे कितनी ताकत है यह Horse Power या अश्व शक्ति के नाम से पुकारते हैं। बल से होने वाले कार्यों में हमे बलद का सहयोग कितना है। हम ४० किलो वजन को सर पर १-२ फलांग नहीं ले जा पाते, जबकि बलद गाडे पर रख कर १० क्विन्टल वस्तु को २०-३० किलो मीटर पहुँचा देते हैं। इसलिए बल साभिप्राय है और उपयोगी है।

अब जरा भैंस के व उसके नर पशु के नाम पर भी ध्यान भैंस को प्राय. तीन नामों से पुकारा जाता है भैंस, झोटी व ... और इसी प्रकार नर पशु को भैंसा, झोटा, खोला नाम से। भैंस ... का ऐ कार को मात्रा यदि य मे परिणित कर दें तो शब्द बने भयस जैसे रैन का रयन, बैन को बयन, सैन को सयन, नैन ... नयन एव बैध को बयध आदि नामों से ऐ कार के स्थान पर य का उपयोग होता है। भयस शब्द का अन्वय करे तो शब्द बनता है भय—स अब "स" का उपयोग है। किस जगह लिया जाता है, इस पर विचार करते है। पूरे हरियाना प्रान्त में "स" को है की जगह काम लेते है। कौन है को वे कहते हैं कुण स। कहां है को कहते हैं कठे स और राम है को कहते है राम स, बलद है को कहते है बलद स। इस प्रकार है शब्द वहां स कहते हो, सो बात नहीं। स कुब माने कुल सहित सदोष दोष सहित स परिवार माने परिवार सहित।

न कुछ काम कर लेता है पर गला कटने पर तो जो
किन्तु गला कटने की क्षति को भी मैं तो गौण ही समझ
शायद चौंक जावे कि क्या गला कट जाना भी गौण है

मानव तन का मूल्य कभी एक लाख माना जाता
के अनुसार भले ही एक करोड़ भी मान लें उस समय के
यों ने नाक का मूल्य नब्बे हजार, दोनों आँखों का नौ
बाकी शरीर का एक हजार माना था। यदि नाक है
तो उसका समाज में अनादर नहीं, प्रत्येक उसकी
चाहता है, क्योंकि मूल्य इक्यानवें हजार है और नौ हजार
है। इसलिए उसकी पूर्ति नहीं तो कुछ न कुछ सहाय
पर नाक न होने वाले व्यक्ति के लिए तो, आदर ना
संसार में मानो है ही नहीं। पर भयस तो नाक भी कटा
गला कटने से भी ज्यादा भयकर है नाक कटना चर्म की
से पृथक भी है। जिसे यश रूपी नाक कहा जाता है
उत्तमोत्तम कार्य करते हैं, उनका यश होता है। धार्मिक
हित में, समाज हित में, असहायों की सेवा में, कार्य
रूपी नाक है और मिलावट कम नाप-तोल, तस्करी, रा
ठगी, बेईमानी से दूसरों का, आश्रितों का, संस्थाओं का
श्रेष्ठ कहलाने से यह नाक कटती है। जो गुण भैंस
पाये जाते हैं, इसका दूध पीने वाले या पालने व दिन
इसका सग करने से, वे सब गुण उसमें अवश्य आवेंगे औ
कार्य करेगा जिससे नाक को बचाना कठिन हो जाता है

अब हम गो माता की देन पर भी विचार करें
देती है। कहा जा चुका है कि गाय बच्चा देती है जसे बच्

हैं पर डेढ़ चान कहकर बचा रह सकते हैं गो बचा देती है, क्या देती है ? जो भयस कटा देतीं है, उन सबको गाय बचा देती है क्योंकि ये माता है इनका स्वभाव हित करने यानि बचाने का है। ये हमारा सब कुछ बचाता है और नाक भी बचा देता है। इनका दूध सात्विक हैं। इसके पीने वाला बुरे कार्यों से डरेगा। जो इसे माता मानेगा वो आस्तिक होगा। जो न मानेगा नास्तिक न शास्त्रों को मानते हैं न भगवान को/आस्तिक भगवान व शास्त्रों को मानेगा तो गाय को माता मानेगा। गो भक्त होगा, गो दुग्ध का पान करेगा, उसे पाप कर्म करने में भगवान का डर होगा और ईश्वर से डरने वाला, न तो कायर कहलाता है, न खोटे कार्य करता है। केवल ईश्वर का डर रखने वाला राज्य भय से मुक्त हो जाता है। राज्य का भय तो अनाचार करने वाले को है, सदाचारी को नहीं।

हमें यह दृढ़ निश्चय करना है कि भैंस कटाती है और गाय बचाती है। भैंस ने अब बहुरूपिया की तरह दूध देने वाली बनकर, गाय का निरादर कराया है और करा रही है। अन्य कटा देने की आदतों से इसने कई राज्य कटा दिए, जागीरें कटा दी, ओहदे आदि न जाने क्या-२ कटा दिये और नाक भी कटा दी। उससे होने वाले परहेज व घृणा को भी कटा दिया। ये धोखा देकर गायों को भी कटाती है। जब तक किसी की मां जीती रहे मासी या फूफी बच्चे पर बड़ा स्नेह दिखाते हैं। कहावत प्रसिद्ध है कि माता मरने पर मासी मरे, नहीं तो रूठ अवश्य जाती है। जब गाय और कम होकर इसका स्वराज होगा, तब यह न जाने क्या करेगी। अब भी एक टाइम की प्रति भोजन लेकर दूध देती है।

कुछ पाठक इस लेख को, वाक विलास भी समझ सकते हैं फिर भी विलास तो होता ही होगा, पर नाम का प्रभाव न हो ऐसी बात

दुर्योधन की नाक ठीक हुई न रावण की। कारण उनका आहार ही खराब था।

कुंभकरण महात्मा प्रकृति का था। जगाने पर उसने अच्छी बात कही तो उसे मदिरा पिला व भोटा यानि भैंसा खिला दिए, जो बुद्धि बिगड़ने में सहायक हुआ। किसी व्यक्ति को उसकी दादी, नानी, माँ, मामी, बूआ, पत्नि के लिए अच्छा बताने के लिए कहा जाता है कि अमुक तो गाय के समान है। वह यह सुन कर प्रसन्न होता है पर भैंस के समान कोई उपमा नहीं दे सकता न कोई सहन ही करेगा। गाय सदा से ही सत्ता कांग्रेस ने अपना चुनाव चिन्ह मान रखा है इससे भी उपयोगिता सिद्ध है।

बलिष्ट व निडर मानव के लिए भी सांड की उपमा दी जाती है, कि अमुक बड़ा सांड है, पर भोटे भैंसे की नहीं। इस प्रकार से गो वंश के सभी नाम उत्तमोत्तम व भैंस वंश के सभी अधमोधम हैं।

मातृ पिता भ्राता हितकारी,
मित प्रद सब सुनलो नरनारी।
अमित दानि गोमाता जानो,
बहु उपकार मानोव बखानो॥

२३

क्या गो माता के दर्शन से लाभ संभावित है

भौतिकवाद में न किसी वस्तु या प्राणी का दर्शन लाभदायक है न क्षतिपूर्ण। यह मान्यता प्राथमिक शिक्षा तक ही सीमित है। भारत की प्राचीन मान्यता इससे मेल नहीं खाती। अतीत में तो निद्रा से उठते ही, घर से बाहर जाते, यात्रा करते समय, किसके दर्शन हुवे, इस बात का बहुत ध्यान रखा जाता था। मनुष्यादि खुले शिर, ब्राह्मण बिना तिलक, खाली घड़ा, बिड़ाल का आगे से निकल जाना या गधा दृष्टिगोचर होना भी प्रतिकूल माने जाते थे।

पश्चिमी सभ्यता मे इन बातों को साधारण अवस्था मे तो कोई नहीं मानता और नास्तिकों जैसा आचरण करते है। पर सन् १९३९ में जब मित्र देशों को जर्मन ने झझोड़ा तो इन्हे गिरजा में प्रार्थना करना भी जचा व भारतीय मान्यताएं ठीक लगने लगी।

उस समय भारत के सभी सरकारी भवनों पर V (विक्ट्री)

की आकृति अंकित की गई। सभी रेल्वे स्टेशन, पोस्ट ओफिस, तह-सील, थाने आदि पर V लगाकर आशा की गई कि इससे हमारी युद्ध में विजय होगी।

काला बिल्ला लगाना या काले झन्डे दिखाना विरोध प्रकट करने का दृश्य ही तो है। इसी प्रकार द्वार बनाना या झन्डों से स्वागत करना सम्मान सूचक दृष्य है।

श्री गोमाता भगवान कृष्ण के साथ चित्रों में दिखाई जाती है। इससे गाय की ही नहीं, भगवान की शोभा बढ़ती है। शिवजी के मन्दिर में शिवजी के सन्मुख नन्दीश्वर से भी उनकी शोभा है। आदम और हौवा के साथ बैल की जोड़ी या श्री नानकदेव जी के चित्र में चारों ओर बैठी गौएं भी इसी का प्रतीक हैं। बैल के सिर पर पृथ्वी को स्थापित मानना या धर्म के चारों प्रकार को बैल के चार चरण मानना आदि भी गो वंश की उत्तमता के प्रमाण हैं। प्रायः सभी देशों में सिक्कों पर बैल का आकार अंकित किए जाते रहे हैं।

जो लोग पुरानी मान्यताओं का आदर नहीं करते, उन्हें ये प्रमाण सन्तोष कराने योग्य न भी हो तो बैल की जोड़ी का चुनाव चिह्न धर्म निरपेक्ष राज्य कांग्रेस ने उपयोग किया और इससे उन्हें लाभ पहुँचा।

कांग्रेस के विघटन होने पर पुनः सत्ता कांग्रेस ने गाय सवत्सा का चुनाव चिह्न ही क्यों अपनाया? जब कि दूसरे दल द्वारा यह चिह्न मांगने पर आपत्ति की गई थी। इस गाय के चिह्न से एक तिहाई से कम मत पाने वालो ने भारी बहुमत जैसी सरकार बनाई है। ये सब गाय के दृश्य का प्रकट फल है।

यात्रा करते समय गो दर्शन अत्यन्त शुभ माना जाता है। भगवान राम की बारात के जाते समय दूध पिलाती गो का शकुन हुआ था, जिसे गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज ने वर्णन किया है कि-

(चौ०)—लोवा फिरि दरश दिखावा।
सुरभी सन्मुख शिशुहि पियावा॥

जिन भाग्यशालियों के घर गाय व बैल है, वे प्रातः उठते ही उनके दर्शन श्रद्धा पूर्वक करते हैं। बदले में नित्य अमृत सदृश ताजा दूध, दही, मक्खन अपने परिवार सहित खाते हैं व अतिथियों को खिलाते हैं।

देव दर्शन के महत्व से गो दर्शन न्यून नहीं, क्योंकि सभी देवता गो के अंग प्रत्यंगों में निवास करते हैं। अनेक लोग सूर्य के दर्शन करके ही भोजन करते हैं। व्रत के पश्चात का भोजन चन्द्र दर्शन पर करते हैं। गाय की आंखें सूर्य चन्द्र हैं। लहलहाते खेतों व बागों की हरियाली गाय के गोबर व गो मूत्र पर आधारित है। मानव शरीर का रूप, कान्ती या बुद्धी सभी दूध पर आधारित हैं। मानव निर्मित भवन, सड़क, रेल, तार, टेलिफोन, दूरदर्शन, वाहन आदि सभी सामग्री बनाने का श्रेय गो दुग्ध द्वारा विकसित बुद्धि को ही देना है। संसार की सुन्दरता का स्तम्भ गाय, बैल है। विपरीत तथ्यों यथा रोग, दुःख, भय, कष्ट व उत्तेजना गोवंश की उपेक्षा का फल है।

इसलिए सुख समृद्धि की चाह वाले मानव को अपना प्रथम इष्ट गाय को मानना चाहिए। इनका आशुतोषपन व शीघ्र वर दान तो विख्यात है। पश्चिम देशों में गोपालक की गिनती महान लोगों में होती है। कभी भारत में नन्द और उपनन्द थे, लोग उनका आदर करते थे। स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने नंद जी को पिता माना, उनके घर नौ लाख गायें थीं।

२४

खानों व खनिज से गो रूपी खान व उत्पादन की तुलना

जितने भी राष्ट्र संसार में है उनमें वही राष्ट्र उन्नत है जहां अनेक प्रकार की वस्तुओं की खाने है और उनका उत्पादन ठीक है। भारत में खानें अन्य राष्ट्रों से अधिक है। यहां साधारण पत्थर, उत्तम पत्थर व हीरे की, लोहेतर धातुओं में सोने तक, कोयला तेल, अभ्रक, जिप्सम आदि अनेक पदार्थों की खानें हैं।

१०० वर्ष की दासता से विचलित हुई मनोवृति से इसका पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता। कही उत्पादन की व्यवस्था ठीक नहीं, तो कहीं सग्रह करने व कहीं उसकी दशा सुधारने के पर्याप्त प्रयत्न न होने के दोष है।

अन्य देशों में भारत जितनी खाने नहीं हैं। जितनी भी है, उन्हे ठीक प्रकार से चलाने वाले अधिक लाभ उठाते है। अरब देशों मे तेल की खानें अधिक हैं जिन्हे वे दूसरे

देशों को देकर अपनी आवश्यकता की वस्तुएं विनिमय मे
लेते है । वे लोग धनी बने हुए है । वे तेल बेचने क
नहीं रखते । कसाईखानों को तेल देते हैं । इस प्र
देश तो हमारे लिए ऐसे आरे है, जो आते जाते दोनों ओ
वाले कहे जाते है । अन्यथा लकड़ी काटने का आरा एक ओ
है, दूसरी ओर बिना काटे जाता है ।

हीरे पन्ने आदि जवाहरात या सोने चांदी आदि
वस्तुओं के अभाव से देश के करोड़ों लोगों को विशेष प्रयोज
इन खानों व इनके उत्पादन को अत्यन्त आदर की दृष्टि
माना है । हमारा प्रयोजन इन खानों व इनकी उपज
रूपी खान व उससे होने वाली उपज की तुलना है ।

गाय एक ऐसी खान है, जिससे पहले तो पौष्टिक भो
दूध प्राप्त होता है और इसके पुत्र बैल से खेती करके प
मे देकर अन्न उपजाया व मण्डियों में भेजा व पीसा जा
सोने की खान केवल सोना ही देती है । खान से खान को जन
मिलता । गाय तो गाय को जन्म देती है । बैल को जन
है । दूध, दही, गोबर, चर्म न जाने क्या-क्या चीज देती है
के लिए घास ही अरब देशों से आने वाले तेल व अमेरि
आने वाले ट्रेक्टर पार्टों का काम करता है । ट्रेक्टर स्व
महंगा उपकरण है फिर इसके साथ लिए जाने वाले उ
महंगे । इनकी टूट फूट को ठीक कराना मंहगा । इसक
रखाव की जानकारी कठिन, इसके तेल के लिए मुद्रा कितनी
है । तेल के लिए अरब व अन्य देशों को गाय व बैलों की
निर्यात की जाती है । जितनी खालें अधिक जायगी
ट्रेक्टर व अधिक तेल आ सकेगा ।

इस खाद रूपी खान की विशेषता कहाँ तक वर्णन की जाय। वैज्ञानिकों की मान्यता है कि तेल व कोयला, आदि की खानों में इस दृष्टि से निकालने पर शीघ्र ही रिक्त जायगा। मगर और खाद निकालें तो फिर उसका अन्त भी न आ सकेगा। क्या कोई वैज्ञानिक यह कह सकता है कि गो वध का वध बन्द करके उसको सहारा देने से इसका कभी ह्रास हो जायेगा।

जिस तेजी से गोवध हो रहा है, होता रहा एवं यदि बढ़ाई गई तो अवश्य ऐसा हो जायेगा। गोबर गोमूत्र की खाद भी बाद में न मिल सकेगी। रासायनिक खाद भी तभी तक ठीक काम करती है, जब तक गोबर, गोमूत्र की खाद कुछ भूमि में हो। अन्यथा केवल रासायनिक खाद से न तो पूरा उपज होगी न ही अन्न पौष्टिक होगा। दूध के तो दवा की तरह एम्पुल ही मिल सकेंगे।

ऐसी परिस्थिति में भावी सन्तति बलवान बुद्धिमान कैसे बनेगी और किन प्रकार के शत्रुओं से देश की रक्षा कर सकेंगे।

जिस खान से हमें दूध, अन्न, वाहन, खाद, पानी, ट्रैक्टर, तेल घूँ व चर्म आदि प्राप्त होते हैं, उस खान का आदर न करके तेल के लिए खाद के लिए किसी को किसी प्रकार से खुश करें और अपना माल उनके मनमाने सस्ते भाव पर उन्हें दें और उनका माल उनके कहे अनुसार महंगे भाव पर उनसे लें, ऐसे कितने दिन चल सकेगा। दूध व अन्न शोषण होने से और कम होगा। हमें बिना गोमाता के दूध की कमी दूसरा देश पूरी करदे, यह दुराशा मात्र है। ये खान पूरे देश में सभी स्थानों पर व्याप्त है। गरीब अमीर सभी इस खान से लाभ उठा सकते हैं, जैसा कि अन्य खानों से नहीं।

२५

गृह उद्योगों में गोपालन ही सर्वोत्तम

कोई भी देश उन्नत है तो उसमें उद्योग का प्रमुख स्थान है। जिस देश में उद्योग न हो या कम हो वह उन्नत नहीं हो सकता। उद्योग को हम कई श्रेणियों में बांट सकते है। प्रथम भारी उद्योग, जिसमें विद्युत, वाष्प या तेल से मशीनें चलती हों व हजारों कर्मचारी काम करते हों।

दूसरा मध्यम उद्योग जिसमें मशीनें तो विद्युत वाष्प या तेल से चलती हों, पर कर्मचारी १००–२०० तक हों।

तीसरा लघु उद्योग जिसमें विद्युत या डीजल इञ्जिन हों और कर्मचारियों की संख्या १०-२० हों।

चौथा गृह उद्योग जो विद्युत पर चलते हों या पशु बल से चलते हों, या तो सभी घर के लोग काम करते हो या १-२ ... जारी रखते हों।

पांचवा ग्रामीण गृह उद्योग जो केवल मानव या पशु की शक्ति से चलते हों, कर्मचारी कोई न हों और साथ में खेती आदि अन्य धन्धा भी हो।

उपरोक्त पांचों प्रकार में अधिक लाभ किससे है व क्षति किससे है, विचारणीय है। प्रथम प्रकार का भारी उद्योग बहुत बड़े नगरों में स्थापित हो सकता है। इस में से तेल कोयला का धुंवा या गैस से वायुमण्डल दूषित होता है। कर्मचारियों के निवास की सुविधा नहीं होती, दूरस्थ कर्मचारी अपने बाल-बच्चों से बिछुड़ जाते हैं। उन्हें अच्छा भोजन नहीं मिल पाता। कुछ कारखानों का गन्दा पानी कुआ पड़ा रहकर व कुछ का नदी के बहाव में डाल दिया जाता है। जिससे नदी का पानी भी दूषित हो जाता है। ऐसे उद्योग या तो सरकारी होते हैं या बहुत लोगों के हिस्से के, जिनकी व्यवस्था उत्तम नहीं कही जा सकती। आए दिन हड़ताल, घेराव, तोडफोड़ की घटनाएं होती हैं। उत्पादन क्षमता के अनुरूप न होकर कम होता है। प्रत्येक प्रकार के व्यवधानों की क्षति उपभोक्ताओं पर पड़ती है। कच्चा माल दूर से आता है जिसमें बहुत व्यय लग जाते हैं।

तैयार माल पुनः वहीं जाता है, जिसके अनेक खर्च व कई स्थानों के नाम लग जाने से वह उपभोक्ताओं को बहुत महगा मिलता है। ऐसे भारी उद्योग अन्य चारों प्रकार के उद्योगों को क्षति पहुँचाते हैं। जिसमे वस्त्र उद्योग पर ध्यान दें। भारत के उत्तर भाग में पंजाब, राजस्थान में जो रूई होती है उसे दक्षिण भाग में बम्बई, अहमदाबाद लेजाकर वस्त्र बनता है। पुना वहां से देहली व देहली से राजस्थान पंजाब में जाता है। बम्बई, अहमदाबाद में ऐसी वस्तुएं मिलें हैं। कपड़ा पंजाब या राजस्थान में न बनता हो ऐसी

बात भी नहीं, पर इधर जितनी रुई होती है उसके हिसाब से नि
कम है।

मध्यम उद्योग प्रायः शहर में होते हैं। इनसे लघु उद्योग
लघु उद्योगों को तो हानि है ही पर भारी उद्योगों से अधिक इनसे कु
कम है। इनमें रहने वाले काम करने वालों की निकटता ही होती है। अ
व कम होने से व्यवस्था भारी उद्योगों से कुछ ठीक रहती है। इ
भी हड़ताल घेराव का रोग कुछ तो रहता ही है।

लघु उद्योग प्रायः छोटे-छोटे नगरों में होते हैं। जहां
करनेवाले उसी नगर के होते हैं। उन्हें रहने, खाने-पीने की सुवि
ठीक रहती है। ये नगर की जरूरतों को पूरा करने के लिए
होती है। वहीं से कच्चा माल प्राप्त करके वहां के व पास की दे
के उपभोक्ताओं को वस्तुएं सस्ती प्रदान कर पाते हैं। इनकी व्य
व उत्पादन अच्छा रहता है।

ग्रामोद्योग में, उपरोक्त तीनों प्रकार के उद्योग से जो
होती है इससे किसी प्रकार की नहीं होती व इससे ग्राम वासि
भारी लाभ है। उनकी उपज अच्छे दाम पर बिक जाती है।
श्यक वस्तु सस्ती व शुद्ध मिल जाती है।

ग्रामोद्योग में तो लाभ ही लाभ है, जिस ग्राम में कपा
वही बनोले, रुई पृथक हुई, वहीं बनोले का तेल निकाला
आवश्यकता की रख कर बाकी बेच दिया। रुई पीज कर मो
बुनकर काम में ले लिए। अतिरिक्त को बेच दी। इ
यथा बैलों का उपयोग बहुत है। कोल्हू या पैंजा बैल स
जा सकता है माल ढोया जा सकता है। जितने प्रकार के

गाए गए हैं, सबसे उत्तम उद्योग तो इससे पृथक है। वह है गोपालन उसके लाभ पढ़िये।

गाय प्रत्येक देश में चाहे ठन्डा हो या गर्म, पहाडी हो या रेतीला, कम वर्षा वाला हो या अधिक वर्षा वाला, बडा शहर हो, या नगर, ग्राम या ढाणी, प्रत्येक जगह रक्खी जा सकती है। इस प्रकार २-४ गाय रखने वाला यदि अपने खेत, जिसके भूगर्भ में जल है, नहर या कूवे या नदी के जल से खेती करें तो अकेला परिवार खाने को दूध दही अन्न पर्याप्त प्राप्त कर सकता है। अतिरिक्त अन्न तिलहन, दलहन, रूई बेचकर आत्म निर्भर ही नहीं माला-माल हो सकता है। गोवन की वृद्धि उसकी ठीक से सेवा करने पर तो अवर्णीय है। प्रति वर्ष एक गाय या बैल दे दे, दूध घी देती रहे। खाने को खेत की उपज या जंगल का घास ही पर्याप्त है। गुवार यानि गो आहार जो कि मानव के काम का अन्न नहीं, उसकी सर्वोतम खुराक है।

न उस कृषक को ट्रैक्टर चाहिए, न उसके टायर व अन्य पुर्जे ही डीजल मोबिल आयल, न मिस्त्री न ड्राईवर। ट्रैक्टर खानो खुराक का गन्दा धूवा फेंकता है। खाद रसायनिक लानो पड़ती है, जो अब तो मंहगी भी सुलभ नहीं। गाय बैल रहने पर खाद भी खेत के लिए हो जाय और घर के लिए ईंधन भी मिल जाय।

अतः गोपालन एक अति उत्तम उद्योग है। सभी प्रकार के उद्योगों से सरल सस्ता, लाभदायक व आत्म निर्भर है। जो इस

२६

क्या गोवध बन्द कराना संभव व सरल नहीं

गाय की उपयोगिता तो जितनी लिखी गई है, उससे कई गुनी और लिखी जा सकती है। पर केवल लिखने वाला लिखदे और पढ़ने वाला पढ़ मात्र ले, तो थोड़ा लिखना भी उतना ही उपयोगी हुवा जितना अधिक लिखना। ऐसी दशा में मंहगे भाव के कागजों को काला करके किसी प्रकार से पुस्तक बेचने से किसी को कोई लाभ नहीं। पूरा लाभ तो गोपालन से ही है कि या गोवध रुकने से भी पर्याप्त लाभ है। गोवध बन्द होने व गो पालन होने से पालक का राष्ट्र का अति हित है।

गोवध बन्द कराने के लिए अब से पूर्व जितने प्रयास किए गए, जिन द्वारा किए गए, प्रशंसनीय है, पर गोवध बन्द न हुवा, इससे उनकी आत्मा पर जो ठेस लगी है, वही जानते हैं। इसमें भी सदेह नहीं कि सभी संप्रदाय के लोगों ने गोवध बन्द कराने में भाग लिया

गत मान्दोलन में बहुत लोगो ने भाग लिया। यह तो हम कहते ही हैं यदि एक दफा यह भी मानलें कि अनेक लोगों ने भाग नहीं लिया तो कोई अत्युक्ति नहीं। माना कि सभी प्रान्तों के लोग आये थे पर क्या देहली के सभी लोग उस समय जलूस मे थे कहना होगा कि बीसवां भाग भी न था दूर से आने वालों को अनेक असुविधा होती है, पर वहां के रहने वालो को नही। इसे और व्यापक बनाया जाना चाहिए।

एक बात जो विशेष रूप से कहने योग्य है। शायद सबका ध्यान इस ओर गया होगा, कि क्या हमें गोवध बन्द करने के लिए केवल सरकार के भरोसे पर ही रहना चाहिए। सरकार मान जाय तो अच्छी बात है। सरकार न माने तो हम गोपालन पर जोर देकर बूचड़ खाने बन्द करा सकते हैं। पर यह कैसे संभव है। कुछेक सुझाव लिखे जाते हैं।

१ हमारे पूज्य सभी धर्माचार्य यह प्रतिज्ञा करलें कि हमने एक वर्ष से पूर्व गोवध बन्द करा देना है। तो—

(क) वे अपनी सारी शक्ति पंचायत स्तर पर गोशालाएं खोलने में लगादें। प्रत्येक गोशाला पर न हो सके तो ५-४ गोशाला पर एक अच्छे सन्त को निरीक्षण सौंप दें।

(ख) एक वर्ष की अवधि में यज्ञ अनुष्ठान, बड़े बड़े न हों छोटे हों, और वहां हों जहां गोशाला खुली है या खुलवानी हो।

(ग) नए मन्दिरों का निर्माण, गोवध बन्द होने तक रोक दें और उस धन में से कुछ धन या सारा धन गोशाला भवन बनवाने में लगवा दें।

(ग) ग्रामों में गोशाला कायम करें गोगों से गोशाला के लिए कृषि योग्य भूमि दान में प्राप्त का यत्न करें।

(ड) कृषकों को अपने गाय बैल किसी कितने पर न बेचने या मुफ्त छोड़ने का आग्रह करें जो न संभाल सकें हो वे गोशाला में दें।

(च) जो कृषक या अन्य गृहस्थ भैंस छोटा रखते है। गाय बैल रखने पर जोर दें।

(छ) जो लोग दुधारू पशु नहीं रखते या बकरी रखते है, व भी गाय रखने पर जोर दें।

(ज) जिन लोगों के पास सिचाई की भूमि नगर के निकट हो, उन्हें १०-२० या कम ज्यादा गाय की डेयरी लगाने को प्रोत्साहित करें।

(झ) जिन धनवानों के बड़ी बड़ी मिलें है उनसे डेयरी अवश्य लगवाई जाय।

(ञ) प्रत्येक पचायत क्षेत्र में गोशाला होतो उतने क्षेत्र में बछ कसाई या कसाई को बेचने वाले हाथ न बिक सके इसका प्रबन्ध करावे।

(ट) गो चर्म का सेवन रोके व टेलो से बनी साबुन का।

सन्तो से यह करबद्ध निवेदन है उनके वचनों को अधिक लोग मानते है, उनकी आज्ञा पर लाखों रुपये यज्ञ मन्दिर निर्माण धर्मशाला आदि पर व्यय करते है। इसलिए उनके भी मुख से आदेश उपदेश हो तो सफलता निश्चय है।

पण्डित वर्ग उपरोक्त व्यवस्था करें करावें अपने प्रभा

से जितना भी हो गौ का कल्याण करावें व बालक उत्पन्न होने शादी या दादश पर गायों के हित का अधिक से अधिक ध्यान रखावें। अनुष्ठानादि के पश्चात गौओं को भोजन देने की प्रथा चलावें, अन्यथा घी व खीर का भोजन मिलना संभव नहीं।

३ राजा लोगो के उत्तराधिकारी, सदद सदस्य वा विधान सभा के सदस्य पंचायत प्रधान अपने प्रभाव से अपने क्षेत्र मे गोशालाओं का निर्माण व उनके लिए भूमि सरकार से अपने पास से या लोगो से दान दिलावे एवं स्वयं गो चर्म की वस्तु का उपयोग व भैंस के दूध, दही, घी का प्रयोग त्याग दे। अन्य लोगों को भी ऐसा करने का कहें। जो समर्थ हैं वे गायों का डेयरी फार्म लगावे। या अच्छे सांड अपने पाल कर गो शालाओं को दें।

४ व्यापारी वर्ग लक्ष्मी के स्थान पर १ वर्ष तो पूरे जोर शोर मे गोवध बन्द कराने के लिए शास्त्रानुसार अपने गोपालन कर्तव्य का पालन करें।

(क) नगर में फिरने वाली अनाथ गायों को या तो गोशाला मे प्रवेश दिलावें या उन्हे चराने के लिए शिविर स्थापित करें जिससे कसाइयो के हाथ न लग सके।

(ख) जिस गाय का स्वामी हो, पर गाय छोड़ रखी हो व गाय को रखना चाहे तो सभी प्रकार के व धारवालो से रखे अन्यथा वो स्वेच्छा से गोशाला में देना चाहे तो गाय को प्रवेश दिलावें।

(घ) गो चर्म का सामान न बेचे न क्रय करें, औरों को भी यही प्रेरणा दें । न मानने पर गो चर्म के सामान रखने वाले से अन्य सामान भी न लेकर, उससे लें जिसने गो चर्म बेचने का त्याग किया हो ।

(ङ) अनुष्ठान आदि मे लगने वाला धन अपने हाथों, गोशाला के आश्रमो सांड पालने आदि कार्यों में व गायों को तूड़ी नीरा देन मे व्यय करे।

(च) देहातों में गोशाला कम खर्च पर चलती है, इसलिए जिनका जिस पंचायत में प्रभाव पड़े गोशाला स्थापित करावे । अन्यथा देहात की गाय कसाई खाने जाती है।

(छ) मृतक भोज व शादी पर अन्न की कमी से सरकार का प्रति बन्ध है । अतः गायों के निमित दान देवे या गो भोज करें ।

(ज) यथा सभव एक या दो गाय रक्खें और भैंस को बिलकुल न रक्खें । अन्य लोगों से भी ऐसा ही करावें ।

५ खेतीहर या कृषक वर्ग के लिए गाय बैल का उपयोग सबसे अधिक है । कठोर परिश्रम करने वाले को पोष्टिक पदार्थों की आवश्यकता है, जो गाय से प्राप्त है । बैल भी कृषक को चाहिए खाद की भी उन्हीं को आवश्यकता होती है।

(क) भैंस भैंसा का मोह छोड़ कर गाय बैल रक्खें ।

(ख) अपने गांव या पञ्चायत स्तर पर अपनी गोशाला कायम करें और समर्थ लोगों से खेती योग्य भूमि दान में लें।

(ग) (कुमं) जो गाय को बेदर्दी से मार कर उतारे हुवे चमड़े की एटेची, जूता कोई चीज न लें।

(घ) अपने पंचायत क्षेत्र के गोधन का ध्यान रखें कि कोई रूलति या भूखी न फिरे और कसाई तक न पहुँच जाय।

६ वकील डाक्टर या अधिकारीगण, गो दूध घृत का प्रयोग करे. गो चर्म का प्रयोग न करें। व अन्य लोगो पर भी अपना प्रभाव डालकर आने वाली संतती की बल बुद्धि की वृद्धि व देश कल्याण के लिए जितना भी अधिक से अधिक बन सके प्रयत्न करें। जिससे गोवध रूक सके व गाय प्रतिष्ठत हो।

७ दस्तकारो को भी हत्या द्वारा प्राप्त किए हुवे गो चर्म का उपयोग न करके गाय अपने अपने घरों मे रखकर खूब गो दूध का उपयोग करना चाहिए। गोपालन व गोवध रोकने में अपना पूरा सहयोग देना चाहिए।

८ ट्रकादि वाहन धारियों को अन्य सेवा तो सभी प्रकार करनी ही चाहिए। पर जहां ट्रक द्वारा गायों को ढोने या गायों के लिए चारा ले जाने का प्रश्न हो भाड़ा रियायत से लेना चाहिए व कार्य शीघ्र व अच्छा करना चाहिए।

चारा विक्रेता गायों को दान के रूप मे चारा डालने वालों के लिए बिना लाभांश या थोड़े लाभ पर चारा देना चाहिये।

शिक्षक वर्ग को अपने पास पढने वाले बालकों को गाय के व गोवंश महत्व से अधिकाधिक परिचित करना चाहिए। स्वयं हत्या युक्त चर्म का प्रयोग बन्द करके, बालकों को भी यही उपदेश देना व गो दूध के सेवन का लाभ बताना चाहिए। उन्हें अपने घर गो रखने का भी कहें।

11 किशोरावस्था के बालकों को अपने माता, पिता, गुरु, विद्वान महात्माओं से या साहित्य से गाय के गुण जानकर उसके दूध दही का सेवन करना चाहिए। चर्म (कुर्म) से परहेज करना चाहिए जिन्होंने आयु थोड़ी प्राप्त की है, तो वह उन्नत होने का लाभ वे ज्यादा समय उठायेंगे। जिन्होंने आयु ज्यादा ली है उन्हें अब थोड़े दिन लाभ उठाना शेष है। दूध पीना हो तो इनका वध रोकना चाहिए। चर्म की चाह करने पर भविष्य में दूध ग्लास में डालकर पीने को मिलना सम्भव नहीं है। धन जो योग्य है व घर में गाय रक्खें, सेवा मे हाथ बटावें, व दूध पान करें दूसरे मित्रो से भी ऐसा करने का कहें।

जिन जिन वर्ग के लोगो का जिक नही आया, वे भी अपना कर्तव्य यही समझे कि हमें गाय का वध बन्द कराना है। गाय पालनी है गाय का आदर करना है।

यदि हम गायों को कसाई या कसाई तक लेजाने वाले का दें ही नहीं, न कीमतन दें, न मुफ्त ले जाने दें, तो कसाई खाने किस पर चलेंगे। जब उनको गाय नहीं मिलेगी तो अवश्य ही हें बन्द करने पड़ेगें। हम गाय उन्हे मुफ्त ले जाने देते है। कीमत नही लेते या थोड़ी लेते है चमड़े की चीजें म हंगी खरीदते है, उन्हें अधिक लाभ होता है। लोभ पाप का बाप है। लोभ के व वो ऐसा करते हैं। यदि चमड़े की बिक्री न हो। गाय मुफ्त या दाम में नहीं मिलेगी तो वे २००-३०० रुपये की गाय लेकर धन्धा नहीं कर सकेंगे। ये सब कार्य सभी मिल के करें व रुपये तो गोवध बन्द होना बहुत सम्भव है। सबके चाहने पर अगर

प्रहार, जिसके समस्त प्रहार जो हमारे भाई बन्धु हैं, उन पर [illegible]
[illegible] का तुच्छ स्वार्थ जानकर, परोपकार में भी जीवन पर रोक लग[illegible]
जाई जा सकती है। हम पालन भी न करें, इसके लिए [illegible]
[illegible] शोषण करें, तो हमारी मनमानी करने, वाले लोगों को [illegible]
पाती नहीं जाती। जिससे उन्हें तो दुःख होता है अति हमा[illegible]
या हमारी अज्ञान ही है।

प्राचीन व नवीन माताएं

गंगा मा— पर स्नानार्थी एकत्रित होते हैं।

हंगामा— एकत्रित समुदाय में कलह का कारण है।

धेनुमा— कटोरे, ग्लास भर-भरकर दूध पिलाती है।

धनामा— धुंवे के घूंट पिलाती है, स्वास्थ्य चौपट करती है।

सीतेमा— जासु अंश उपजई गुनखानि,
अगणित लक्ष्मी उमा ब्रह्मानी।
दर्शनों से कृतकृत्य होते हैं।

सीनेमा— धन, समय और सद्विचारों का नाश करता है।

२७

सांड व बैल से भैंसा की तुलना

प्रायः सभी प्रकरणों में गाय की उत्तमता प्रमाणित की गई है। गाय की प्रतिद्वन्दी भैंस है, जो गाय के समान सारी वस्तुएं देती है पर उपयोगी नहीं देती।

सांड व बैल गाय की देन है, झोटा भैंस की देन है। दोनों ही कृषि व हल गाड़ी चलाने के कार्य में प्रयुक्त होते हैं। जिसकी सन्तान अधिक लाभ पहुंचाती हो उसे उत्तम, कम लाभ पहुंचाने वाली को गौण मानना पड़ेगा।

पेड़ जो छाया व इंधन देते हैं, वे उपयोगी हैं, जो उत्तम फल दें वे महान उपयोगी हैं। इन्हें हम कीकर, बेरी, व आम की तुलना करते हैं। जो एक फल छाया, और इंधन भी न दें वो इनसे नष्ट है।

गाय की देन को देखते हुये मैं उसे आम के पेड़ का दर्जा व भैंस को कीकर के पेड़ का दर्जा देना चाहूंगा। सांड व बैल की देन है, सांड

जिनको परिचर्या करनेमें बैल से झोटे को अधिक करनी पड़ती है भोजन भी अधिक चाहिए। कार्य करने में बैल का पालक तो लाभ में व झोटा का पालक हानि मे रहता है। इसलिए बैल की जोड़ी का मुल्य अभी नागौर व हरियाणा में ८-१० हजार तक है। झोटों की बनने का तो प्रश्न ही नही उठता, अकेला झोटा पाचसो रुपया से अधिक मुल्य का नहीं।

इसलिए गाय को आम के पेड़ की संज्ञा दी है कि उससे प्राप्त फल सभी पशु जगत मे उत्तम है। भैंस को आक की इसलिए कि उसका फल सब से निकृष्ट है। आक में दूध है पर अनुपयोगी फल आम के सदृश्य लगते है, किन्तु न रस है न मिठास न खाने योग्य ही है। अतः यह निर्विवाद है कि बैल की तुलना में झोटा नगण्य है। इसलिए कृषक बैल ही रखते है।

गौ या बैल के पालक भैंस या भैसा न रखें, जैसे चतुरमाली अपने आम नारंगी के बाग में कीकर या आक को नहीं रखता। दुसंग से उत्तम प्राणी बिगड़ जाते है श्री गोस्वामी जी फरमाते है।

सुनहु असन्तन केर सुभाऊ।
भूलेहू संगत करिय न काऊ॥
तिन कर संग सदा दुखदाई।
जिमि कपिल ही घाल ही हर हाई॥

गाय भैंस का संग ही बुरा है एक घर में रहने से गो मस की जूठन भी खाई जा सकती है। जो अनिष्ट कर है।

गोवध प्रत्यक्ष व परो

सभी प्रकरणों में गोमाता को वास्तविक माता होना प्रतिपादि
बुद्धि अनुसार किया गया है। अन्यथा इसके सारे गुण क्या कहे ज
सकते हैं। पुस्तक बड़ी न हो जाय पाठकगण पढ़ने में उकता न
जायें, आधी पढ़कर न छोड़ दें, इसलिए संक्षेप में ही वर्णन किय
हो और अनेकों प्रमाण मन के मन में ही रख लिए हैं।

जब किसी का दुर्भाग्य आता है तो उसकी सम्पत्ति नष्ट होती
है। प्रायः तुच्छ से तुच्छ सम्पत्ति को भी नष्ट होते देखकर दुःख
होता है और उसे बचाने का प्रयत्न किया जाता है। अब तो हमारा
दुर्भाग्य ही नहीं, महान दुर्भाग्य प्रतीत हो रहा है, हमारी सम्पत्ति
का बहुत तेजी से नाश होता जा रहा है। हम देख रहे हैं पर रोक
नहीं रहे, अपितु सहयोग कर रहे हैं। कोई पूछे क्या हम गोवध में
सहयोग करते हैं। मैं तो यही कहूँगा कि हां हम सहयोग करते हैं।
यदि मैं दुःखी होकर यह भी कहदूं कि हम सहयोग ही नहीं कर
रहे हैं, गोवध हमारे लिए किया जा रहा है, बधिक हमारा
सहयोग कर रहे हैं तो अनुचित नहीं।

प्रायः सभी लोग चमड़े के जूते पहिनते हैं, पर्स व अटेची चमड़े की रखते हैं, घड़ी का फीता ट्रांजिस्टर का खोल, केमरा का खोल, आदि सभी चर्म के हैं। माताएं एक तरफ गाय का पूजन बड़ा पूर्वक कर रही हैं, पर कलाई में घड़ी का फीता हाथ में पर्स, पैरों में चप्पल. ये वस्तुएं उसी गोमाता की हत्या के चर्म से बनती हैं। स्वयं मर जाने पर नहीं बनतीं। उन्हें अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है. जिससे चर्म का आकार बड़ा हो सके, उसका भार अधिक हो सके, और वह मुलायम अधिक हो सके। कई तो गाय के ऐसे चर्म से भी सन्तुष्ट नहीं होते। वे ऐसे काफ लेदर की वस्तुएं प्राप्त करना चाहते हैं, जो गाय के गर्भ का शिशु हो। गाय को काटने के पश्चात उसके पेट के शिशु का चर्म तो गाय से मुलायम होगा ही। हमारे से भी हमारे शिशु का चर्म मुलायम है। गर्भस्थ का तो अधिक मुलायम होगा ही। क्या हम इन मुलायम चर्म की वस्तुओं के उपयोग की इच्छाओं का दमन नहीं कर सकते! इस इच्छा को सर्व प्रथम तो गो माता कि हत्या जैसे क्रूर कर्म के लिए ही त्यागना चाहिए। यदि हम गाय के सभी अन्य उपकारों से सन्तुष्ट न होकर ऐसे जघन्य कृत द्वारा उसका चर्म प्राप्त करें। उसके कष्ट की चिन्ता न की जाय तो यह कृतघ्नता है।

क्या हमें नहीं दीखता कि हमारे भोजन में दूध की मात्रा उत्तरोत्तर घटती जा रही है। जब हम अंग्रेजों से स्वतंत्र हुवे थे शुद्ध दूध २५ पैसा किलो प्राप्त था। अब दो रुपया पचास पैसे मिल रहा है। ज्यों ज्यों कमी होगी दूध मिलावट का महगा होता चला जायगा। हमारी सन्तान की क्या दशा होगी। कई

मजिले चिप्स व चित्रकारी युक्त भवन, अति मूल्यवान फरनीचर, अनेक प्रकार के मूल्यवान वस्त्र-आभूषण, अनेकानेक अन्य साजो-समान होने पर क्या बिना दूध के बल स्वास्थ्य या बुद्धि प्रदान करने के लिए पर्याप्त हो सकेंगे ? कदापि नहीं। हमें उनका हित तो बहुत प्रिय है। अपने बालकों के लाभ हेतु हम अपने घनिष्ट से घनिष्ट मित्रों व हितैषियों से मुख मोड़ लेते है।

सभी भली प्रकार यह जानते हैं कि भारत में सर्वाधिक गोवध होता है। खाल, मास आदि विदेशों में जाते हैं। विदेशी मुद्रा प्राप्त की जाती है। इस कार्य के लिए अनेक नगरों मे यांत्रिक वधशालाएं बनी हुई है, वधिक सरकारी सरक्षण मे ऐसा करते हैं। जनता गोवध नही चाहती, फल स्वरूप ३००० गोशालाएं बना रक्खी है गोशाला के बाहर की गायों सान्डो को भी खाना दिया जाता है।

सभी सम्प्रदायों के करोड़ों लोग गोवध से खिन्न हैं, अनेक बार प्रदर्शन हुवे, अनशन हुवे, आयोग बने गोलियों से बलिदान हुवे, अब भी होने को तैयार हैं पर गोवध बन्द होने की आशा क्षीण होने लगी है। क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति केपश्चात भी में गोवध बढता जा रहा है, जबकि गोवध बन्द कराने के लिए संघर्ष रत्त जनता को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में लगाया गया था और कहा गया था कि स्वतंत्रता प्राप्त होते ही, गोवध बन्द कर दिया जावेगा।

प्रत्यक्ष में तो गोबध वधिक करते हैं, पर क्या इसमें साधारण लोगों या गोवध बन्द कराने के लिए प्राण पण से जुटने वालों का भी सहयोग है ? अन जाने या न चाहने पर भी अवश्य ही ऐसे अनेक लोगों का गोवध में सहयोग है यह स्वीकार करना होगा।

१ वध केवल शस्त्र से ही नहीं होता अपमानित करने या घर से निकाल देना एक प्रकार वध है अर्जुन की प्रतिज्ञा थी कि गांडिव के अपमान कर्ता को वध कर दूंगा, युधिष्ठिर द्वारा भूल से अपमान होने पर, अर्जुन प्रतिज्ञा पूरी करने पर उतारू था जिसे अपमान युक्त शब्द से पूर्ति की गई।

२ अश्वत्थामा द्वारा द्रौपदी के पांच पुत्रों को सोते हुवों की हत्या करने पर उसके वध की शपथ ली गई पर द्रौपदी को अपने पुत्रों की हत्या के दुःख का अनुभव था, वह नहीं चाहती थी, कि अश्वत्थामा की माता कृपि भी उसकी तरह पुत्र शोक से दुःखी हो अतः उसने क्षमा करना चाहा। फल स्वरूप उसे मुन्डकर अपमानित किया गया, इस को वध माना गया।

३ जो लोग अपने गोधन को वृद्धा वस्था में कार्य मे असमर्थ होने पर त्याग देते हैं वे एक प्रकार का वध अनजाने से कर देते हैं। जिसने उससे दूध पिया श्रम लिया वह त्याग दे तो उसका पालन कौन करेगा। निश्चय ही वह वधशाला में पहुँचेगा।

४ वे गोशाला के अधिकारी, सदस्य भी निर्दोष नहीं जो असहाय गोधन की उपेक्षा करते हों व अपने क्षेत्र के गोधन को कसाई तक पहुँचने को न रोक सकते हों। उन्हें अपने क्षेत्र मे अनाथ गो वंश की रोकथाम करनी चाहिए।

५ जो लोग हत्या से प्राप्त चर्म का सामान विक्रय करते हैं और उसको अति उत्तम बताकर ग्राहकों को प्रोत्साहन देते हैं वे भी सहायक ही हैं।

६ हत्या से प्राप्त गो चर्म के उपयोग करने वाले भी गो माता की

जय, गो वध बन्द चाहते हैं, दान देते हैं गाय की पूजा सत्कार करते हैं। आन्दोलन में सच्चे हृदय से भाग लेते हैं। किन्तु ऐसे चर्म का त्याग न करने से वे भी परोक्ष में सहायक हो गए।

७ वे माता, पिता, गुरु जिनके पुत्र या शिष्य गो चर्म बेचते या उपयोग करते हैं। को इससे नहीं हटाते या रोकते वे कुछ अंशों में सहायक हैं।

८ वे गो भक्त जो अपने परिजनों, सम्बन्धियों, मित्रों को गाय को निराश्रित छोड़ने या गो चर्म की वस्तुओं को क्रय करने से नहीं रोकते हैं, वे भी कुछ अंशो में सहयोगी हैं।

९ वे महा पुरुष जिनकी आज्ञा व सुझाव से लोग गो पालन में प्रयुक्त हो सकते हैं, गाय को निराश्रित न छोड़ने या गो चर्म का उपयोग छोड़ सकते हों, अपना प्रभाव डालकर ऐसा नहीं करते, भी अपने कर्तव्य को भूले बैठे हैं।

१० गो वध बन्दी के आन्दोलन में प्रत्येक गो भक्त या बन्द कराने वाले घर का एक व्यक्ति सम्मिलित न हो या अपने ग्राम से २-४ प्रतिनिधि भी न भेज सकते हों, उनकी मूक सदभावना भी निरर्थक है।

हमें स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कितने बलिदान देने पड़े, कितनी जेल यातनाएं सहनी पड़ी, कितने विदेशी वस्त्रों को जला कर होली की गई, यह सब हमने गो रक्षा के निमित्त किया था। हमारी स्वतंत्रता का लाभ केवल गो वध बन्द होने से लाभदायक नहीं हो सका। जो दुःख परतंत्रता में थे उससे कई गुणा बढ़ गए, जिन सुखों की आशा के लिए बलिदान दिये गये थे, उनमें से

अतिरिक्त इसके कि हम पर विदेशी शासन नहीं, कोई भी प्राप्त नहीं हुआ।

यदि हम अपनी सन्तान का वास्तविक हित चाहते हैं तो, हमें गोवध बन्द कराना होगा। गाय की प्रतिष्ठा बढ़ानी होगी, उसकी ऐसी सेवा करनी होगी कि वह ज्यादा दूध ब्याने के निकट के दिनो तक सहर्ष दे। सोवियत रूस में ७७ लीटर नित्य दूध देने वाली गाय है वहां कोई गाय २१ लीटर से कम दूध नहीं देती। गाय को उन्नत ४–५ पीढ़ी यानि १५ वर्ष में की जा सकती है। दूध दही घी प्रचुर मात्रा में प्राप्त करके हम अपने राष्ट्र का कल्याण करें।

देशवासी किसी वर्ग, जाति, दल, सम्प्रदाय के हों गाय उन सब में समता रखती है। सबकी सन्तान दूध पर पलती हैं, सन्तान की खुराक, बल, बुद्धि विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। दूध और अन्न परस्पर विरोधि विचार के लोगों दलों या सम्प्रदायों को चाहिए तो इनकी प्राप्ति का मार्ग गो बैल व गो वंश ही है अतः सभी अपना परम कर्तव्य समझ कर इसे प्राथमिकता दें।

यदि हम गो वंश की हानि सहते रहे तो, परिस्थिति इतनी और हो जावेगी, जिसे हम न संभाल सकेंगे। अनेक व्यक्ति अभी से विद्यमान है, जिन्होने दो पैसा सेर दूध ग्यारह आने सेर घी १ रुपया मन गेहूं दो रुपया मन गुड़ खरीद लिया था। आज तीन रुपये लीटर दूध ३० रुपया किलो घी एकसो रुपया मन गेहूं व गुड़ मिलता है और दूध घी विशुद्ध ही है यह निश्चित नहीं।

ऐसे दूध घी को खाकर हमारे ...

न बनेंगे और किस प्रकार के विकसित देशों के समक्ष माने का रहेंगे, कैसे स्वाभिमानी व स्वतंत्र रह सकेंगे। हमारे न की भलाई हमारे आधीन है हमें अपने कर्तव्यों के प्रति रूक रहने व पूरी शक्ति लगानी ही चाहिए।

गोवंश रक्षा व बचाने के लिए सच्ची प्रार्थना—

गाय है तो संसार है।
गाय संसार का सार है॥

२९

हमारा विदेशों से आयात-निर्यात व्यवसाय

किसी भी व्यक्ति या देश की वास्तविक स्थिति उसके वसाय से आंकी जा सकी है। वह तभी आंकनी पड़ती है, जब रस्थिति उपस्थित हो।

एक पिता अपनी पुत्री के लिए वर की खोज करे, तो उसे वर व्यवसाय आचरण की पूरी जानकारी की आवश्यकता रहती है। : के पास कितनी सम्पत्ति, धन, विद्या है, उसका आचरण, समाज सम्मान, व व्यवसाय कैसा है।

यदि पता चले कि वह कर्जदार या मूर्ख है, उसका समाज में दर नहीं, आचरण, व्यवसाय, अच्छा नहीं, तो उसे पसन्द न किया वेगा। व्यवसाय जहां कपड़ा, अन्न, मनिहारी, लोहेतर धातुओं, , बनरल मरचेन्ट का उत्तम माना जाता है। धाय, सब्जी फल, ।, चप्पल, मदिरा, मांस अण्डे का घटिया माना जाता है। छोटी

रचून या बजाजी की दुकान ...
या हड्डी के बहुत बड़े दुकानदार को नहीं देता।

वर का सम्मान समाज में नहीं होने मे उसके या उसके पूर्वजों
आचरणो पर निर्भर करता है। यदि वर के पिता, दादा ने, मरती
का धन लिया हो तो उसे कलकित माना जाता है। मिथ्या
त, दिवाला निकाल देना, बर्तन माजने, बूट पालिश करने, और
ने का व्यवसाय भी निम्न कोटि के माने जाते हैं। अतः प्रत्येक
क्ति व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व भली प्रकार सोचता है कि मैं
सा व्यवसाय करूं।

हमारे देश के व्यवसाय की उत्तमता का ध्यान देशवासियों या
रकार को रखना है, कि कहीं हम व्यवसाय ऐसा तो नहीं कर रहे
जससे विश्व मे हमारा सम्मान घट जाय। हमारा परम कर्तव्य है
कि हम अपने देश का भाल ऊंचा रक्खें।

हमारे देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अन्न की अति कमी
प्रतीत हुई। कितनी ही नहरें निकालीं, टयूब वैल लगे, ट्रैक्टर
उत्तम बीज, रासायनिक खाद, खेती में पशु कीटों से बचाने हेतु दवा
छिड़कना, भन्डार के अन्न को सुरक्षित रखने हेतु उपाय किए गए।

अन्न विक्रय पर एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में भेजने पर नि
यण, राशन व्यवस्था का गई, किन्तु अन्ना भाव बना रहा। अ
विदेशों से अन्न आयात किया गया, तेल, घी, दूध की कमी में अ
का तेल, घी व सूखा दूध भी आयात किया गया। कुछ अन्न आ
क्रय किए गए तो कुछ सूखा दूध, घी संभवत दान में भी संस्थाओं
दिया पर अब स्थिति ऐसी है, कि अन्न केवल मूल्य चुकाने पर ...

मिलता। निहोरे निकालने होते हैं, अपनी गरीबी गाई जाती है, विक्रेता को प्रसन्न किया जाता है, जैसे भी वो हो।

उपरोक्त प्रकार से मिड मिड हट द्वारा प्राप्त अन्न भी दूर मंहगा पड़ता है। इसे प्राप्त करने के लिए राशन कार्ड पैसे व बर्तन लेकर लम्बी लाइन मे सम्मान को ताक मे रखकर खडा होना पड़ता है, यह आवश्यक नहीं कि पहले ही दिन राशन मिलने मे सफलता मिल जाय। इस प्रकार का अन्न प्राप्त करने व खाने वाले उच्च विचारों के कैसे बन सकेंगे।

वस्त्र की देश में वास्तव मे कमी नहीं, मिलें बहुत है, कच्चा माल पर्याप्त है, कार्यकर्ता कारीगरों की बहुतायत होते हुए भी, प्राये दिन हड़ताल, तोड फोड़, घेराव व बिना लग्न के कार्य करने से उत्पादन कम होता है। सरकारी टेक्स नियत्रण उचित प्रकार का न होने से, या परचून विक्रय की दूकान तक के व्ययों लाभों को जोड ने पर उपभोक्ता को बहुत मंहगा मिलता है।

विदेशों से आने वाले पुराने कोट पेन्ट बहुत बडी मात्रा में आयात होते हैं। सुनने में आया है कि अमेरिका मे पुराने वस्त्र फेंक दिये जाते हैं। नगर के कचरे मे से छटे हुवे कोट पेन्ट ड्राइक्लीन होकर भारत में आते हैं। पुराने वस्त्र क्रय करके पहनना भी अच्छी बात नहीं, कचरे से उठाकर पहने वाला देश का नागरिक इसे क्या समझता है।

देहली में जामा मस्जिद के पास रविवार को हाट लगती है वहां एक दिन में एक लाख पेन्ट कोट बिक जाते हैं। क्रय कर्ता भीख मगे या गरीब ही नहीं, हजारो रुपये प्रति मास कमाने वाले या

रकारी पदों पर लगे हुवे लोग भी होते हैं। वे क्या कर रहे
त्र किसके पहने हुवे हैं, कैसे उठा कर लाए गए हैं, इन्हें
उचित भी है या नहीं। दृष्टि कपड़े व रंग पर टिकी है,
रज के कपड़ों से खादी के वस्त्र सर्वोत्तम हैं।

भारत के विदेशी निर्यात में सर्वाधिक गो चर्म, गो मास,
या या अन्य अवयव है। इन वस्तुओं का निर्यात कर्ता भारत
मकक्ष देश कोई नहीं। जिन देशों को गो चर्म की आवश्यकता
उसे अवश्य ही भारत से बात करनी होगी। हमें चमड़ा खरीद
हो तो चमार के पास, मास खरीदना हो तो कसाई के पास
ना पड़ता है, न चमड़ा वस्त्र विक्रेता से मिलेगा ना ही सराके
दुकान पर। इसी प्रकार मास भी अन्न या फल विक्रेता से नहीं
लता, हमारे हृदय में चर्म मास के विक्रेता के प्रति सम्मान
तना है, यह हम भली प्रकार जानते हैं। उनके हाथ के फल,
ष्ठान, खाना या दूध तक हम स्वीकार नहीं करते, उन्हें चमार व
साई ही मानेंगे। यदि दूसरे राष्ट्र हमें इन्हीं प्रकार से देखते हों,
ो क्या आश्चर्य है।

हमारे लिए अमेरिका एक धनाढ्य देश है, वह हमें कर्ज देता
है, वहां के कचरे से हमें वस्त्र प्राप्त होते हैं, अन्न, दुग्ध चूर्ण,
घी व शस्त्रादि देता है। हमारे गो वध के व्यवसाय के विकास के
लिए मशीने देता है, हमारा सारा उत्पादन का क्रेता है। प्रत्येक
दुकानदार अपने बड़े व पुराने ग्राहक का अधिक सम्मान करता है।
इसी प्रकार हमारे देश में उसका सम्मान है।

हमें यह भी देखना है कि वह इतना उपकार क्यों कर रहा है।
निश्चय ही वह अपने देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति जागरूक है,

हैं धन, वैभव निद्रा या प्रमाद से प्राप्त नहीं हुआ, यह उनकी सूझ-
का परिणाम है। उसे अपने देश का लाभ अभिप्रेत है, चोथी
द्धि की इच्छा नहीं, निन्दा की चिन्ता भी नहीं। उनका लक्ष्य
रत के पशु-धन को समाप्त करके अन्न, दूध, घी, रासायनिक खाद
क्टर व उसके भाग का स्थाई क्रेता बनाने का है। अरब देश भी
रत के बैलो को समाप्त करने के पक्ष मे हैं वे धर्म व मास के बड़े
हक है। यो धन समाप्त होने से ट्रैक्टर से खेती होगी, जिसके लिए
निज तेल वे भारत को अधिक बेच सकेंगे।

हम ससार में चमार, कसाई, अन्न के भिखारी कर्जदार, अमे-
रिका के वस्त्रों से अपनी रक्षा व पुराने वस्त्रों से अपने शरीर को
ढकने वाले मात्र रह गए हैं। गो वध का पालन नहीं करने व गो
वध को न रोकने से हमारा भविष्य कैसा होगा, और बुद्धि जीवियो
को देखना है, और इससे सबको परिचित कराना है।

अगले प्रकरण में "गोवध प्रत्यक्ष व परोक्ष" को ध्यान पूर्वक पढ़ें।

हम सबका परम कर्तव्य

गोवध रोकना हमारा लक्ष्य है, जिसकी पूर्ति तो हमारी चुनी हुई सरकार पर आधारित है। हमारे वश का कार्य तो करना ही चाहिए, वह है गो वंश को उन्नत बनाना, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाना, मूल्यवान गोधन बधशाला में नहीं जा सकता, बूढ़े गोशालाओं में देवें। गोशालाएं प्रत्येक पंचायत क्षेत्र में स्थापित करें, और उन्हें धार्मिक वृत्ति के लोग चलावें।

हम सब लोगों को अपने महापुरुषों या धर्माचार्यों की सम्बन्धी आज्ञाओं और उपदेशों को पालन करना चाहिए एवं उन सहयोग हमें मिल रहा है, इसके लिए उनका आभार मानना चाहिए समाज के सभी प्रकार के लोगों से सादर प्रार्थना करके, गाय को प्रतिष्ठित करने हेतु व्यवस्थित व संगठित कार्य-क्रम की योजना एक साथ सभी वर्ग अपना अपना कर्तव्य पूरा करें तो सफलता निश्चित

सभी सम्प्रदायों, वर्गों व मतों के लोग गो करके, गाय को असहाय न छोड़ने, हत्या के वर्ग को बाहुर

खरीदने उपयोग का त्याग, व गोवध बन्द कराने हेतु अपने प्रभाव व प्रचार पर जोर देवें, स्थान स्थान पर गौशालाएं स्थापित कराने में अपनी बुद्धि व श्रम लगावें। मन्दिर धर्मशाला, स्कूल दवाखाना व बड़े भण्डारे, यज्ञादि में कम व्यय करावें।

अनेक प्रकार की संस्थाओं, गौशालाओं, पालिकाओं व पंचायतों के सदस्य गण भी नगर व ग्राम के मुख्य लोगों के सहयोग से गौशालाएं खोलें गो वंश को निराश्रित न छोड़ने दें एवं गायों की डेयरी स्थापित करावें। उत्तम गाय बैल को पुरस्कृत करावें।

क्षत्रिय वर्ग तो अन्याय मिटाने हेतु प्राण तक देते रहे हैं। उन्हे गो रक्षा के लिए प्राणपण से अपना सामर्थ्य लगाना चाहिए, जिनके पास किंचित कृषि भूमि हो उन्हें, डेयरी लगाकर उन्नत गायें बनाने व स्वयं बलवान बनने के लिए पर्याप्त गो दूध घी का सेवन करना चाहिए।

वैश्य का तो मुख्य धर्म गो पालन व कृषि है, अतः वैश्यो को तो डेयरी अवश्य ही लगानी चाहिए। डेयरी कई लोगों की भागीदारी या सहयोग से ही लगाई जा सकती है, यह पुण्य का कार्य भी है और व्यवसाय भी है।

कृषक वर्ग के लिए तो गो पालन अति ही आवश्यक है कठोर कार्य उत्तम भोजन के बिना संभव नहीं। उत्तम भोजन गो दुग्ध ही है बैलों की किसान को आवश्यकता है भैंस रखने वाले को बैल खरीदने पड़ते हैं, गाय रखने वाले अपनी आवश्यकता के रख कर, अतिरिक्त बैल बेच कर धन प्राप्त कर सकते है। गाय का गोबर गोमूत्र उत्तम खाद है, जिसकी किसान को अति आवश्यकता है, घर में खाद की कमी होने से, रासायनिक खाद मंहगे भाव की लानी पड़ती है।

ड खाद गोबर की खाद न होने से ठीक काम नहीं करती,
ी उर्वरा शक्ति ही नष्ट हो जाती है। अतः किसान के लिए
मन अति आवश्यक है, उन्हें बैल नहीं रखनी चाहिए जब
बैल के स्थान पर काम नहीं कर सकता, तो बैल के दूध को
ाला किसान गाय के दूध पीने वाले किसान जैसा कार्य क्यों-
सकेगा।

बुद्धि जीवी वर्ग जैसे वकील, डाक्टर, इन्जीनीयर, शिक्षक
शक, न्यायाधीश, अनेकानेक विभागों के अधिकारीगणों, को
न गाय का उत्तम ताजा दूध उपयोग करना चाहिए, अवश्य ही
रखनी चाहिए या कुछ लोग मिलकर हिस्से की डेयरी स्थापित
लें निश्चय ही यह लाभ दायक व मंगलकारी व्यवसाय है।
नी डयरी का दूध पीकर वे अधिक बुद्धिमान बन कर अपना
कास कर सकेंगे। लोग भी उनका अनुकरण करेंगे।

उद्योग पतियों को डेयरी उद्योग अवश्य लगाना चाहिए उनका
ग बढ़ेगा, कई लोगों को रोजगार मिलेगा तो कितनों ही को उत्तम
ो दुग्ध प्राप्त होगा। जो उद्योगों को सम्भाल रहे हैं, वे विलक्षण
ुद्धि के लोग हैं, उनके लिए डेयरी चलाना साधारण बात है। गायो
ी नस्ल सुधारना उन्हीं के बलबूते की चीज है वे चाहे तो निकट
भविष्य में ही १० लीटर दूध देने वाली गाय की, तीसरी चौथी पीढ़ी
तक ५०-६० लीटर दूध देने वाली बना सकते हैं। और इस प्रकार
हमारे देश में भी सोवियत रूस, अमेरिका या डेनमार्क जैसी उत्तम
गाय बन सकती है। जिनकी कीमत १-२ हजार से ३-४ लाख तक
पहुंचनी सम्भव है।

कठोर परिश्रम करने वाले श्रमिक के लिए गोपालन

महत्व और भी अधिक है। श्रम जितना करे उसके अनुसार पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है। थोड़ी आय वाला व्यक्ति दूध पर अधिक खर्चा नहीं कर पाता— वस्त्रों, घड़ी, ट्रान्जिस्टर, सिनेमा में अधिक व्यय करता है। घर पर खाया क्या है किसी ने नहीं देखना, वस्त्र कैसा है, घड़ी है कि नहीं, ट्रान्जिस्टर है कि नहीं सब देखते हैं, अतः देखने वाली बात पर व्यय अधिक करता है। ठीक खुराक न मिलने व परिश्रम करने से शक्ति घट जाती है, बीमार हो जाता है, इलाज मे खर्च भी लगता है, कमाई भी रुक जाती है। घर में गाय होने से उसके दूध दही को खाकर बलवान बना रहता है, अधिक परिश्रम करके अधिक कमा पाता है. वह अन्य व्यसनों से भी बच जाता है। अपनी सारी गृहस्थी को सुखी बना सकता है।

विद्यार्थियों के लिए तो गो दूध मानो अमृत ही है। नेत्रों की ज्योति, कानों की श्रवण शक्ति, और स्मरण शक्ति, बढ़ाने मे गाय के दूध से अधिक सामर्थ्य किसी में नहीं। उन्हें चाहिए कि वे अपने अभिभावकों से गाय पालने का आग्रह करें, गाय की सेवा करने के लिए भी आश्वासन दें, व इसकी पूर्ती करें। विद्या की अधिष्ठात्रि देवि सरस्वति गाय की जीव्हा मे निवास करती है, गाय को दिन में ३-४ बार थोड़ा थोड़ा गुड़, रोटी, या फल खिला कर प्रसन्न की जा सकती है। गाय को प्रसन्न करने से वह स्नेहवश जो अमृत तुल्य दूध देती है, उसके सेवन करने वाला प्रतिभाशाली व भाग्यशाली बनता है। भगवान कृष्ण का गोपालन दूध, दही, व मक्खन खाना सर्व विदित है।

गोद के बालकों को गाय का ही दूध पिलाना चाहिए। किसी भी इमारत की नींव मजबूत हो तो वह सुरक्षित रहेगा, बचपन

३१

गौ का भाग उपयोग से संकट (लघुकथा)

एक लखपति सेठ का कलकत्ता में व्यापार था। मुनीम ही वहां के कार्य को देखते थे। सेठ की पुत्र वधु ने अपनी सास को कहा कि हमारे बुरे दिन अति निकट हैं, अतः कोई शुभ कार्य अनुष्ठान आदि कराना चाहिए। सेठ व उनके पुत्र को भी सुचित किया गया, उन्होंने जानना चाहा कि तुम्हें यह कैसे पता लगा। पुत्र वधु ने कुछ न बताया, उसके पिता महान् धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे, अतः उसके कथन को, सबने यह मान कर उपेक्षा कर दी कि इसके धार्मिक संस्कार है, इसलिए कहती है।

कुछ अवधि पश्चात सेठ के मुनीम ने कलकत्ता का सब धन हड़प लिया एवं फर्म पर दो लाख का ऋण भी हो गया। मुनीम सेठ से अलग हो गया। अधीनस्थ छोटे मुनीम ने सेठ को सूचना दी। सेठ व उसके पुत्र ने जाकर सारी स्थिति देखी। जैसे तैसे अपनी

इज्जत बचाने हेतु ऋण चुकाने लगे। उन्होंने अपने जेवर, अतिरिक्त मकान, दुकान भी बेच डाले पर ऋण मुक्त न हो सके। अन्त में रहने का घर भी बेच दिया।

अब सेठ जी के पास न कोई स्थाई सम्पत्ति थी न जेवर या सामान ही था। ऐसी विकट परिस्थिति मे एक महाजन ने पाच हजार की नालिश कर दी। जिसका आधा भुगतान तो सेठ ने ५-१० रिश्तेदारो से उधार लेकर कर दिया किन्तु महाजन पूरा भुगतान लेने पर उतारू था, गिरफ्तार कराने की धमकी भी देने लगा।

सेठ ने नगर छोड़ देने मे ही भलाई मानकर प्रस्थान कर दिया। चारों प्राणी कठिन परिश्रम करके पेट पालने लगे। अब तो उन्हें पुत्र वधू के कथन की सच्चाई पर भरोसा हो गया। वे जानना चाहते थे कि क्या अब अच्छा समय भी आवेगा। पुत्र वधु ने कहा कि मुझे इसका कोई पता नहीं। तब उन्होंने पूछा कि खराब दिन आने का पता कैसे लगा? घर के सबके आग्रह पर उसने बताना स्वीकार किया।

पुत्र वधु ने कहा कि मैं एक दिन छत पर थी। मैंने श्वसुर जी को ब्याई हुई गाय की लापसी को ठन्डा करते हुवे देखा। उगली से लापसी की गर्मी को जांच करके सेठ जी ने थोड़ी लापसी उठाकर चखली, उन्होंने मेरे देखते देखते तीन बार उगली से लापसी उठाकर खाई थी। हमारे पिता जी ने गाय के निमित किए हुवे सामान को खाने पीने की इच्छा होने मात्र को भी सर्वनाश कारण मान रक्खा है। अतः मैंने अनुमान लगा कर कह दिया कि लाड की लापसी व घृत से युक्त खाने वाले गाय की लापसी खा रहे है, तो सर्वनाश होकर रहेगा।

रुपए लेने की कोई जल्दी नहीं। सेठ जी न कहीं
हते हो तो मैं ब्याज तो बिल्कुल न लूंगा। सेठ जी ने कहा मैं रकम दूंगा
प्रण किया है कि मैं सबको ब्याज सहित ही रकम दूंगा। महाजन ने भी सेठ जी से ब्याज न लेने का विचार प्रकट किया
महाजन ने भी सेठ जी से ब्याज न लेने का विचार प्रकट किय
सेठ इसे न मानता था। उसने अपने द्वारा अन्य ४ व्यक्ति
कर्ज देना है वहां पर बताया। सेठ के आने की सूचना
महाजनों को पहुँची और सभी सेठ से मिलने को उत्सुक हो
गए।

सेठ सबको सहित ब्याज रुपया देना चाहता था। सबने
र में बिना ब्याज रुपया लेने की अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा प्रकट
र्णय यह हुवा कि सबने सेठ को विवश करके बिना ब्याज
था, पर सेठ ने जितने रुपए ब्याज के बनते थे, सब वहीं
ला को दे दिया। नगर के अनेक लोगों ने सेठ को नगर में
आग्रह किया, महाजन के छोटे भाई ने सेठ को हवेली
कराया आजीवन देने का कहा, पर सेठ ने यह स्वीकार नहीं
कहा कि मेरे पास तीन हजार रुपया और हैं, जिससे
महा रह रहा हूँ वह घर मुझे मिल रहा है। मैंने प्रण किया
कि जब तक कर्ज न चुका दूंगा घर न खरीद करूंगा,
ऋण मुक्त हूँ अब वह घर खरीद लूंगा। वहां के लोगों ने
एक सप्ताह तक रक्खा, बहुत आदर सत्कार किया। उन
बार आने का आग्रह करते रहे। उन्होंने अपने पुत्र के पराम
कुछ भी निर्णय न करने का कह कर विदा ली।

मुनीम जी ने सेठ का तीन लाख रुपया तो दबा
पर लोग यह जान न जावें, इसलिए दो तीन हजार

ी का वर्ताव लोगों से बहुत अच्छा था। सेठ जी की गो भक्ति का
ता चलते ही लोगों ने उन्हें गो शाला का अध्यक्ष बना दिया था,
उसमें ये निष्ठा पूर्वक कार्य करते थे। इस तरह ये नगर के सर्वो-
त्तम व्यक्ति माने जाते थे।

मुनीम जी को विश्वास था कि मैं सेठ को लेकर आऊंगा,
पर उन्हें विवश होकर बिना सेठ जी के आना पड़ा, मुनीम जी ने
नगर के लोगों को एकत्रित करके सारी घटना सुना दी, कि मैंने
सारा धन सेठ जी को लौटा दिया है। मकान दुकान की रजिस्ट्री
उन्हें दे दी है। उन्हें वहां के लोग प्रेम पूर्वक आग्रह करके यहां नहीं
आने देते। जब से वे उस नगर में गए नगर के सभी लोग, धन
धन से भर पूर व सुखी हैं, इसलिए वे सेठ को वहीं रखना चाहते हैं

नगर के लोगों में से कइयों ने कहा कि, जब से सेठ जी ग
है, हमारे नगर में व्यापार या खेती से सब को क्षति हुई है। कल
दूध बद गया है। हमारी गोशाला की दशा बहुत खराब है। हो
हो जहां कि गायें दुःखी हों वहां के लोग सुखी नहीं हो सकते। अ
हमें सेठ जी को लाना ही चाहिए।

सबने यही निश्चय किया और पचास व्यक्ति सेठजी को ल
कृत संकल्प होकर रवाना हो गए। घर वालों से कह गए हम आने
की जल्दी न करेंगे, लेकर ही आवेंगे। नगर के लोगों ने उनको
बधाई व विदा दी एवं उनकी कामना पूर्ण होने की मंगल कामना
करते हुवे कहा कि ये पूरे नगर की कामना है। ईश्वर अवश्य सफल
करेगा।

सभी लोग सेठ जी के घर पहुंचे, सेठ जी ने उनका अत्यन्त

सत्कार किए। भोजन जल पान का आग्रह किया। उन्होंने नगर में चलने के लिए आग्रह किया तो सेठ जी कहने लगे, मुझे या मेरे परिवार को आपकी आज्ञा मानने में कोई आपत्ति नहीं, पर यहां के निवासियों ने मुझे सौगन्ध दिलाई है कि मैं वहां जाने की हां न करूं।

नगर के लोग भी एकत्रित हुवे। उन्होंने आगन्तुकों को जल-पान का आग्रह किया, पर वे कहने लगे जब तक सेठ जी जाने की सिकृती न देंगे, हम खाना तो दूर रहा जल भी स्वीकार न करेंगे। हम अपने नगर में बिना सेठजी के जाकर मुंह नहीं दिखाना चाहते। मुनीम जी व महाजन ने अपनी पगडी उतार कर सेठ जी के पैरों में रखी, जिसे सेठजी उनके सिर पर रखने का असफल प्रयास करते रहे, पर उन्होंने क्षमा दान के पश्चात ही पगडी रखने का विचार प्रकट किया।

उपस्थित जन समुदाय में से एक व्यक्ति ने कहाकि मुनीम जी या महाजन की बात छोडें। क्या नगर के किसी व्यक्ति ने महाजन को सेठ जी के साथ दुर्व्यवहार करने से रोकना अपना कर्तव्य न समझा। सेठ जी के पास धन सम्पति न थी। एक का कर्ज चुकाने हेतु ५-७ का कर्ज भी किया, पर कर्ज चुकता न हुवा, उन्हे न किसी ने ढाढस दिया न महाजन को धमकी देने से रोका क्या आपके नगर के अच्छे व्यक्तियों को भी इस बात की चिन्ता न थी।

उसका कहना ही था की सभी आगन्तुकों ने अपनी पगडी, टोपी नगर के लोगों के पैरों में रख कर क्षमा मांगनी प्रारम्भ करदी। सेठ जी ने कहा कि न मुनीम का दोष है; न महाजन का और ना ही नगर वासियों का। मेरी पुत्र वधू ने इस होनहार की सूचना मुझे

३२

बेकारी एक समस्या उसका समाधान

बेकारी अत्यन्त दुःखदाई समस्या है, कहा जाता है, कि बेकार दिमाग शैतान का घर होता है। हमारे देश मे बेकारी चर्म सीमा पर है, अनेकानेक उपाय करने पर भी न इसे मिटाया जा सका है, न मिट जाने की आशा ही की जा रही है। बेकार तो अज्ञान श्रमिक रहे यह भी भयावह है, जिनके अभिभावको ने अपना सर्वस्व व्यय करके, कर्ज लेकर अपनी अचल सम्पति को अडाणे रख कर या बेच कर अपने पुत्रों को पढ़ाया, उच्च शिक्षाएं यथा इन्जिनीयर, डाक्टर, बनाने योग्य बना दिया ऐसे अनेक बेरोजगार रहें तो अभिभावकों को दारुण दुःख दायक है।

उच्च शिक्षा प्राप्त लोग सरकारी सेवाए प्राप्त करना चाहते हैं, सरकार भी उन्हे काम देने का भरसक प्रयत्न करती है। कुछ विभाग तो केवल बेकारों को काम लगाने के लिए बने हुवे भी है, अनेक विभागों में आवश्यकता से अधिक कर्मचारी रक्खे जाते है, जहां उन्हें कोई कार्य नहीं करना पड़ता। उनकी बेकारी दूर नहीं हुई, भरण

इस समय गाय को पशु मान कर निरादर किया जा रहा है, किसी व्यक्ति का निरादर करके हम उससे लाभ की आशा करें तो इसे स्वप्न लोक में विचरना ही कहा जावेगा। गाय जिनके पास है, वे बहु सख्या में अभाव ग्रस्त है, उनके पास सिंचित भूमि नहीं, गोचर भूमि भी नहीं भयानक मंहगाई से परिवार का पालन पोषण भी दूभर हो रहा है ऐसे व्यक्ति गायों को उन्नत नहीं बना पाते, अतः भूख प्यास से पिड़ित गाय लगातार निम्न श्रेणी की बनती जा रही है।

बेकारी दूर करने व गो पालन किस प्रकार किया जाय यह विस्तार पूर्वक लिखने पर तो एक पुस्तक भी पर्याप्त नहीं। संक्षिप्त जानकारी अपनी बुद्धि की पहुँच तक वर्णन करूंगा, कार्य को किस ढग से किया जाय, कौन करे, किसके सहयोग से, व कहां करे निम्नांकित है—

१ नगरों के बाहरी क्षेत्र में या १–२ किलो मीटर दूर के ग्राम में उत्तम १०-१५ गायों की डेयरी स्थापित की जाय। स्थान के अन्दर टहलने को पर्याप्त स्थान हो, निकट ही चरागाह या मैदान हो। पानी, बिजली, व नगर तक जाने की सड़क ठीक हो नगर तक दूध पहुचाने में सुविधा हो।

२ ऐसे स्थानों पर गो वत्सालय स्थापित किए जांय जहा सिंचित भूमि हो, हरा सूखा चारा सस्ता व सुलभ हो स्थान बड़ा हो, ५० से १०० तक छोटे बड़े बच्छे बच्छी का पालन किया जावे उपयुक्त बैल होते ही व गाय ब्याते ही बेच दी जावे, अच्छे साड उसमें से रखते जाएं।

३ डेयरी या गोवत्सालय पढे लिखे व महनती युवक १-२

उपरोक्त प्रकार से अनेक लोग काम लग सकते हैं, जिन्हें भी आर्थिक लाभ होगा, गोवंश की उन्नति व वृद्धि होगी। बैल पर्याप्त होने से सघन खेती हो सकेगी, खाद सुलभ होने से अन्न की पैदावार बढ़ेगी, दूध, दही, छाछ होने से अन्न कम व्यय होगा, परिणाम स्वरूप अन्न की कमी दूर होगी, देशवासियों का स्वास्थ्य सुधरेगा।

गाय को जब तक माता नहीं मान लें, उसकी सेवा नहीं हो सकती, पढ़ा लिखा व्यक्ति भला पशु की सेवा का कार्य कैसे कर सकता है। माता मानने पर सब कुछ सुलभ है, रघुवंशी दीलीप ने स्वयं जंगल में गाय चराई थी, भगवान श्रीकृष्ण तो गाय बछड़ों के ही पालक थे, जिन्हे हम गोपाल मानते हैं। उनके उपदेशामृत गीता का कितना आदर है, स्वयं श्री कृष्ण के लाखो मन्दिर हैं करोड़ों लोग उनकी उपासना करते हैं।

जब तक किसी की आत्मा गाय को माता स्वीकार न करे, उसे ऐसा *व्यवसाय नहीं करना चाहिए, फल श्रद्धा से ही मिलता है।* माता पिता कहने वाला बालक अपने माता पिता की सम्पति का स्वामी बनता आया है, उसे न अपने माता पिता को खाने का बिल चुकाना पड़ता है न मकान का किराया न वस्त्रों की कीमत केवल माताजी पिताजी मानने व कहने का ही परिणाम है।

गो पालन अनेक कुरोगों की एक अनुपम औषध है। इसका अनुपान गाय को माता मानना है अनुपान ठीक न होने से औषध से पूरा लाभ नहीं पहुँच पाता। माता और वह भी वास्तविक माता मानने में हमें कितनी हानि है, इस पर ठन्डे दिमाग से विचार इढ़ कर लिया जाय जिसे भविष्य में परिवर्तन ना करना पड़े।

३३

माननीय सांसदों व विधायकों से नम्र निवेदन

आप महानुभावों के हाथों शासन सत्ता है, राष्ट्र के कल्याण एवं चहुँमुखि प्रगति के लिए ही आपकी नियुक्ति हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात निश्चय ही देश में भौतिक प्रगति पर्याप्त हुई है, यह आपके परिश्रम की ही देन है। आपने स्वयं जा-जाकर इन विशाल उद्योगों यथा हवाई जहाज, हेलीकोप्टर, टैंक, रेल इन्जिन, ट्रक, कार, अनेक वस्तुएं बनाने के देश के कोने-कोने में लगे कारखानों का निरिक्षण किया ही है। भाखड़ा, नागल, राजस्थान कैनाल चम्बल आदि अनेक परियोजनाओं को भी देख चुके हैं।

आपमें से अनेक निश्चय ही यह अनुभव करते होंगे कि अभाव की पूर्ती ये उद्योग या परियोजनाएं नहीं कर रही। देश में कभी वस्तुओं का नितान्त अभाव है। उपज पर्याप्त होते हुए भी व्यवस्था-पकों या श्रमिकों का अन्तर द्वन्द भी इसका एक मुख्य कारण है।

नुशासन व सदाचरण का नितान्त अभाव है। राष्ट्रीय लाभ, सादगी एवं त्यागमय जीवन की ओर ध्यान नहीं दिया जाता, श्रम का स्थान विलासिता ले चुकी है।

हमारे देश का एक उद्योग अवश्य ही विकासमय है, जो प्रति वर्ष प्रगति करता है. ऐसा उत्पादन सर्वाधिक हमारा ही पवित्र देश करने की स्थिति में है। हमारे उत्पादन की विदेशों में अत्यधिक मांग है, वे उत्पादन बढवाने में प्रयत्नशील है। हमें अपने उत्पादन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, इसलिए हमारे सामने जब भी आंकड़े रक्खे जाते हैं कि अमुक निर्यात से हमें इतनी विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई, गत वर्ष से इस वर्ष इतना प्रतिशत अधिक हुआ तो हम फूले नहीं समाते।

मैं सादर आप लोगों से प्रार्थना करता हूं, कि केवल कागजी के आकड़े देख कर ही प्रसन्न नहीं होना चाहिए ऐसे उद्योगो का भली प्रकार निरीक्षण करना चाहिए। इतने उपयोगी उद्योग को तो परिजनों व मित्रों सहित देखते रहना चाहिए जिससे विदेशी मुद्रा प्राप्त हो। वह उद्योग है, यांत्रिक वधशालाए, जहां नित्य प्रति हजारों गायों को अनेक प्रकार से प्रताड़ित करके उनका चर्म, मांस, अस्थियां, खून, सींग, खुर, पृथक-पृथक करके उनमें से अनेक वस्तुओं का निर्यात किया जाता है। कानो से इस जघन्य कृत्य को लगातार सुनते रहने से इनका कुप्रभाव प्रायः समाप्त हो चुका है। इसलिए यदि आंखों से इस दृश्य को देखा जाय और वह भी सपरिवार व इष्टमित्रों सहित तो पता चले कि विदेशी मुद्रा के लिए हम क्या कर रहे हैं।

अन्य सभी प्रकार के उद्योगों को देखने वालों ने इसे नहीं देखा-

परिजनों को क्या दिखाते। अन्य उद्योगों में जब महान लोग पधारते हैं तो, नाश्ता चाय का आयोजन होता है और सभी प्रेम पूर्वक ग्रहण भी करते हैं। काजू, बादाम तो चलते फिरते उद्योग की जानकारी प्राप्त करते भी खाते रहते हैं। इस उद्योग में भी क्या इसी प्रकार से चाय नाश्ता लिया जा सकता है। कदापि नहीं सब की आत्मा इस कृत्य को अमानुषिक ही मानेगी।

हमने थोड़े ही वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध का पच्चीस सौवां दिवस मनाया, इस वर्ष भगवान महावीर का पच्चीस सौवां वर्ष बहुत धूम धाम से मनाया जो अहिंसा का महान उपदेश दे गए थे, इस निमित्त हो मना रहे हैं महात्मा गांधी अहिंसा के पुजारी थे, उनकी बनाई हुई कांग्रेस उन्हीं के हम अनुयायी, उनके गुनगान करते नहीं थकते, परन्तु क्या इन महा पुरुषों की अहिंसा का पालन हम कर रहे हैं। जो प्राणी मानव का सबसे अधिक हितैषी हो, उसकी निर्दयता हत्या की जाय, यह भी उसके चर्म को उत्तम बनाने के लिए आवश्यक प्रताड़ित करके, कहां तक उचित है।

गोधन की समस्या स्वतंत्रता के पश्चात जितनी घटी और [illegible] वध कितना बढ़ा आंकड़े आपको सुलभ हैं। यदि यह क्रम चलता रहा तो, अन्न, दूध, घी, तेल के क्या भाव हो सकते हैं। [illegible] वस्तुओं के पीछे अन्य चीजों के भाव बढ़ते हैं। बैल की कमी से [illegible] उत्पादन में होने वाली कमी ट्रेक्टर से नहीं की जा सकती। [illegible] कुछ छोटे भूभाग पर ट्रेक्टर भार स्वरूप है, इसके लिए तेल [illegible] करना पड़ता है व खाद की समस्या भी बनी रहती है।

हमारा राज्य धर्म निरपेक्ष है, भले ही हो बाद का [illegible] धार्मिक दृष्टि से जितना है आर्थिक दृष्टि से उससे भी अधिक [illegible]

स्वतन्त्रता दिलाने में गो हिंसा मिटाना मुख्य लक्ष्य रहा है, बैल की जोड़ी व सवत्सा गौ की कृपा से आप शासन कर रहे हैं।

प्रत्येक संसद सदस्य ८-१० लाख व्यक्तियों का नुमाइन्दा है। बधिकालय से सम्बन्धित लोगों के अतिरिक्त सभी लोग गोवध नहीं चाहते, कहा जा सकता है कि ९९ प्रतिशत लोग इसके विपरीत हैं। यदि गोधन के प्रति जनता जागरूक न होती तो, अंग्रेजी शासक में गोधन समाप्त हो जाता। आज भी ३००० गोशालाओं में लाखों व्यक्ति गो सेवा में लगे हैं, करोड़ों रुपया इस कार्य में श्रद्धा पूर्वक लगा रहे हैं।

आप बड़े लोग हैं अपने आप इस ओर ध्यान नहीं जाता, फिर भी कभी तो यह सोचना चाहिए कि, क्या गोवध रोकने की बात करने वाले नासमझ ही है। सत्ता के नशे में चाहे कोई आचरण कैसा ही करे, उनका सोचा हुआ या किया हुआ सर्वथा निरापद नहीं कहा जा सकता।

आप चाहे तो गोवध को उचित ठहराने के लिए कितने ही कारण बता कर टाल भी सकते हैं। यदि अपनी बुद्धि का उपयोग गोवध बन्द कराने में लगावें तो आपका यह कृत्य भारत के करोड़ों लोगों के दय में आदर का संचार करेगा।

मन्त्रियों के लिए तो किसी दूसरे विभाग के बारे में कह देना सम्भवत निरापद नहीं कहा जा सकता। इसलिए वे इस सम्बन्ध में कुछ कहने से हिचकिचाहट करते हो। संसद सदस्य भी जन कल्याण की बात सरकार से न कहें, यह विचित्र बात है।

स्वतन्त्रता प्राप्ती के २७ वर्ष बाद भी करोड़ों लोगों के बार

बार आवाहन पर ध्यान तक न देने वाली सरकार कितनी जन-
वान्वित है, यह देखना आप जन प्रतिनिधियों का परम कर्तव्य है।
जनता को जनतन्त्र में अपनी उचित मांग मनवाने का कुछ अधिकार
है भी कि नहीं, यह जनता के देखने की बात है।

राष्ट्रीय हितार्थ सरकार को निजी डेयरी उद्योग को सर्वाधिक
प्राथमिकता देने का सकल्प सघन क्रियान्वित करना चाहिए और
गोवध को रोक कर करोड़ों लोगों को प्रसन्न कर दिया जाना चाहिए
और उनकी जनतन्त्र में क्षीण हुई आस्था को पुष्ट कर देनी
चाहिए।

उपसंहार

पहले भाग के पठन की समाप्ती के लिए मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूँ। प्रचार व प्रसार करने वाले का आभारी हूँ, जो सद्भाव दूसरे संस्करण को अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुझाव भेजेंगे उनका तो मुझ पर बहुत उपकार होगा।

कृपा करके प्रश्नों के उत्तर के प्रपत्र को पुरित करके अवश्य भेजें, अपने श्रम या डाक व्यय को गो हित मे लगा मानें। पुस्तक का मूल्य परचून में ३-०० रक्खा गया है, उपहार देने के लिए १० या अधिक पुस्तक रु० २-२५ पर दी जावेगी। २५० पुस्तको को उपहार में देने वाले को पूरे व १२५ वाले का आधे पेज में विज्ञापन निशुल्क छापा जावेगा। ५०० या इससे अधिक पुस्तकें उपहार में देने वाले की सक्षिप्त जीवनी व प्रशंसा छोटा ब्लाक भी छपेगा।

अनेक लोग गोदान करते हैं व कुछेक १०-२०-५० रुपया दान करते हैं। गाय के हितार्थ पुस्तकों का उपहार भेजना उत्तम दान है. और अपने परिजनों, मित्रों, ग्राहकों मे सम्मान भी है। केवल सवा दो रुपये का उपहार भेज कर हम किसी को प्रसन्न कर सकते है या उसकी सहानुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

गौ माता के आशीर्वाद से पुन्य कार्य में सामर्थ्य के अनुसार सहयोग देने वाले का परम हित होगा। स्वयं उपहार दें, व बन्धु मित्रों से दिलावें, पुस्तक देश के प्रत्येक भाग में पहुँचावें क्योंकि गो वंश सभी जगह पर है।

—गौरीशंकर कोठारी

गौ की करुण पुकार

दांतो तले तृण दाबकर हैं, दीन गायें कह रही,
हम पशु तुम हो मनुज पर, योग्य क्या तुमको यही ?
हमने तुम्हें मां की तरह है, दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया ॥
क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं बलहीन है,
मारो कि पालो कुछ करो तुम, हम सदैव अधीन है,
प्रभु के यहां से भी कदाचित, आज हम असहाय हैं
इससे अधिक अब क्या कहें-हां हम तुम्हारी गाय हैं !
जारी रहा यदि क्रम यहां, यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत, भाग्य के आकाश का
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रह पायगी।
यह स्वर्ण भूमि बस कभी, मरघट ही बन जायगी ॥

—कविवर मैथिलीशरण गुप्त

अहिंसा परम धर्म है और हिंसा महापाप है। —भगवान महावीर

जो गौ मांस खाते हैं वे अपनी माता का मांस खाते हैं। —भगवान बु[illegible]

[illegible] गाय की हत्या और मनुष्य की हत्या में कोई फर्क नहीं [illegible] —महात्मा [illegible]

प्रपत्र पूरित करके भेजने निमित्त

(काट कर भेजें)

गो महिमा भली प्रकार पठन करने के पश्चात निम्नांकित प्रश्ना का उत्तर "हां" या "ना" में भरें। जिनमें "ना" लिखें उसका स्पष्टिकरण इसके पृष्ठ पर या सलग्न पत्र में विस्तार से लिख कर प्रतिष्ठा प्रकाशन सूरतगढ़ को भेजने की कृपा करें। पुस्तक की त्रुटियां बताने या उपयोगी सामग्री भेजने के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

क्या आप गाय को वास्तविक माता मानते हैं ?
क्या गाय के दूध को सर्वोतम मानते हैं ?
" बैल को खेती व भार ढोने में उपयोगी मानते हैं ?
" गाय बैल के गोबर, गोमूत्र को उत्तम खाद मानते हैं ?
" गो वंश को उन्नत करना लाभदायक है ?
" गो वध से राष्ट्र की महान हानि हैं ?
" इस पुस्तक से गो विषयक जानकारी बढ़ी है ?
" इस पुस्तक को अधिक लोगों तक पहुंचाना ठीक है ?
" पुस्तक को उपहार में दिए जाने की योजना ठीक है ?
" गो वध से प्राप्त चर्म की वस्तुएं त्यागनी चाहिए ?
" गोवध रोकने में आप पूर्ण सहयोग देंगे ?
" पुस्तक के दूसरे भाग की प्रतिक्षा में हैं ?

शुभ नाम आत्मज

जाति निवासी जिला दिनांक

पूरा पता

अपने मौलिक सुझाव अंकित करके अवश्य भेजें एवं सत्य व चमत्कारी घटना गाय से सम्बंधित विस्तार से नाम स्थान समय आदि सहित लिखें।